शिव विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
मूल्य-१५/-
फरवरी ९४
होली पर तंत्र के १०८
गोपनीय प्रयोग

हीरक जयन्ती
21 अप्रैल
गुरुदेव जन्मोत्सव
(अमृत महोत्सव)

गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी का

जहां कभी अमृत की बूंदें छलकी थीं, उसी तीर्थ राज

प्रयागराज – इलाहाबाद

में

पुनः अमृत रस की वर्षा, आनन्द और दिव्यता के कणों की रिमझिम फुहार

पूज्यपाद गुरुदेव जन्म महोत्सव

(१८ से २१ अप्रैल १९९४)

जो इस वर्ष विशेष ही होगा क्योंकि यह पूज्यपाद गुरुदेव का, इस भौतिक स्वरूप में साठवां वर्ष जो प्रारम्भ हो रहा है अर्थात् भारतीय परम्परा के अनुसार हीरक जयन्ती का वर्ष . . .

और यह तो फिर शिष्यों के प्राण स्वरूप पूज्यपाद गुरुदेव के वर्षगांठ का पर्व है। घर, परिवार और समाज के सभी बन्धनों से ऊपर उठते हुए, सीमाओं को तोड़ते हुए और उत्साह में भरकर आते हुए साधकों का पर्व, जिसके लिए भारत के ही नहीं विदेशों के शिष्य भी आतुर हो चुके हैं . . .

यह तो पूरे वर्ष के समारोह का प्रारम्भ होगा क्योंकि यह वर्ष **उत्सव वर्ष** है, जीवन के विषाद, तनावों और घुटन से ऊपर उठकर मुक्त आकाश में विचरण करने का प्रारम्भ है, इसके लिए एक अलग प्रकोष्ठ की ही स्थापना की जा चुकी है जो राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न स्वागत समारोह, पूज्य गुरुदेव की सम्पूर्ण जीवन की फिल्म का टी. वी. से प्रसारण, सेमीनार** इत्यादि आयोजित करने जा रहा है. . .

जिसका प्रारम्भ होगा २१ अप्रैल को इलाहाबाद में आयोजित होने वाले इसी शिविर के द्वारा. . .

\अजय कुमार \उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

करोमि त्वत्पूजां सपदि सुखदो मे भवविभो!

(शिवानंद लहरी)

''हे प्रभु! मैं अपनी पूजा का फल मात्र इतना ही चाहता हूं कि आप के चरणों से कभी विलग न होऊं।''

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र -तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्य किसी भी रूप में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी । गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

साधना

विशेष

योग

सद्गुरुदेव

स्तोत्र

दीक्षा

स्तम्भ

वर्ष १४ अंक २ फरवरी ९४

प्रधान सम्पादक

नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल : डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वट्टाणी, नागजी भाई

संयोजक : कैलाश चन्द्र श्रीमाली

वित्तीय सलाहकार : अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.), फोनः०२९१—३२२०९

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्स-०११-७१८६७००

पाठकों के पत्र

⊙ जनवरी का **परालौकिक विशेषांक** देखने के बाद मेरी पत्र लिखने की इच्छा बलवती हुई। मेरा विचार है कि पत्रिका का "वार्षिक अंक" के रूप में एक विशेषांक भी प्रकाशित करना चाहिए, जिससे रोचक साहित्य मिल सके।

ऋचा चौहान,
झांसी

⊙ क्या यह सत्य है कि पृथ्वी ग्रह की सभ्यता व किसी अन्य के प्रभाव के फलस्वरूप ही विकसित और सभ्य हो सकी? मेरा सुझाव है कि पत्रिका के माध्यम से आप इस प्रकार की रोचक जानकारी से भरे लेख भी प्रकाशित करें।

सत्यप्रकाश,
लखनऊ

⊙ मैं **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** का नियमित पाठक हूं। यह पत्रिका अपने - आप में अनूठी है, और इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। यदि स्थायी स्तम्भों के अन्तर्गत इस्लामी तंत्रों, टोटकों एवं साबर मंत्रों के प्रतिमाह प्रकाशन हेतु कुछ पृष्ठ निर्धारित कर दिए जाएं तो इस पत्रिका में चार चांद लग जाते और इसकी लोकप्रियता में मजीद इजाफा होता। पत्रिका की उन्नति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

एम० एम० खां,
गोरखपुर

⊙ गुरुदेव मैं आपका ऋणी हूं। **अगस्त १९९३** के अंक में प्रकाशित **अनंग-रति नमस्कार** अंक से मेरी कमर में पिछले पांच-छः वर्षों से निरंतर बने रहने वाले दर्द व झुकाव में स्थायी लाभ मिल गया और अब मैं कई वर्षों बाद पुनः सीधे तन कर चलने में सफल हुआ हूं। मैंने मन ही मन आप को अपना गुरु मान लिया है, और जब भी मैं किसी विपत्ति में होता हूं तो आपका मानसिक जप करने से मुझको समाधान भी मिल जाता है।

शिवशंकर वर्मा, सरायकरोरा,
लखनऊ

⊙ **परालौकिक विशेषांक** के अन्तर्गत् **"तंत्र द्वारा मूठ . . ."** पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। जब पत्रिका में ऐसा लेख प्रकाशित हुआ है तो इसका अर्थ है कि यह विद्या अभी तक प्रचलन में है नहीं तो मैं इसे महज टोने-टोटके की बात मानता था।

जनार्दन सिंह पंवार,
फरीदाबाद

⊙ **श्मशान का वीर वेताल** अत्यन्त रोमांचक लेख है। साक्षात् ऐसा ही लगता है कि बस अगले ही पल कुछ घटित हो रहा है। चलचित्र की भांति घटनाएं आंखों के सामने चलती रहीं जैसे लेख न पढ़कर पर्दे पर फिल्म ही देख रहे हों। मेरी ऐसे अनुभव पूर्ण लेख पढ़ते रहने की इच्छा है।

कपिल कुमार नंदानी,
बम्बई

⊙ **तांत्रोक्त गुरु साधना** के प्रकाशन से मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ क्योंकि इसी प्रकार की श्रेष्ठ और दुर्लभ साधना की प्रतीक्षा मैं ही नहीं, मेरे साथ अन्य गुरुभाई भी कर रहे थे। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद मेरी पत्नी का स्वास्थ्य आश्चर्यजनक रूप से, सुधार की ओर अग्रसर हो चुका है। मैं पूज्य गुरुदेव के चरणों में कोटिशः प्रणाम ज्ञापित करने का इच्छुक हूं।

सेलर ग्रीन नम्बरदार,
अम्बाला

⊙ तांत्रोक्त गुरु साधना के बाद से मुझे अप्रत्याशित ढंग से पैतृक धन की प्राप्ति हुई है, और इसका श्रेय मैं केवल इसी साधना तथा पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद को ही देता हूं।

के० बी० द्विवेदी, थाना प्रभारी,
विलासपुर

⊙ **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल"** की स्थापना हम सभी के लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है। अब निश्चय ही संस्था का उस रूप में विस्तार हो सकेगा जिसकी हमें अपेक्षा थी, और जो पूज्यपाद गुरुदेव के सदृश्य व्यक्तित्व के कार्यों को पूर्णता देने के लिए आवश्यक भी था।

डॉ० पी० सी० अग्रवाल,
मुजफ्फरनगर

⊙ मैंने **ज्योतिष प्रश्नोत्तर** के अन्तर्गत अपना प्रश्न भेजा था लेकिन मुझे उत्तर नहीं मिला मेरा सुझाव है कि इस स्तम्भ के पृष्ठों की संख्या में वृद्धि की जाए।

कौशल पी. जोशी
अहमदाबाद

-- पाठकों के निरन्तर आग्रह के कारण जन्मांकों के अनुसार भविष्य वाणियां स्तम्भ के स्थान पर ज्योतिष प्रश्नोत्तर ही प्रारम्भ किया जा रहा है।

सहा० सम्पादक

सम्पादकीय
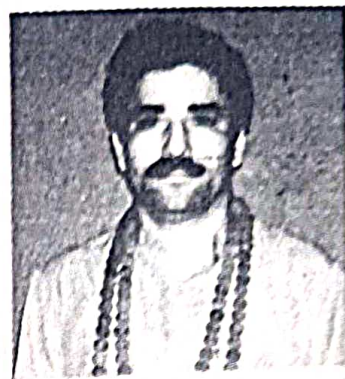
अग्नौ विष्टति विप्राणां हृदिदेवो मनीषिणाम्।
प्रतिमास्वल्पबुद्धिनां सर्वत्र विदितात्मनाम्।।

''विप्र के देवता का निवास अग्नि में, मनीषियों के हृदय में, अल्प बुद्धि के व्यक्तियों का आभास प्रतिमा में और आत्मज्ञानी सर्वत्र उसी निखिल सत्य का दर्शन करते हैं।''

भगवान शिव के ही मूर्तिमंत् स्वरूप कहे जाने वाले भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य समस्त दिग्दिगान्तरों में भ्रमण करने के पश्चात्, समस्त भारत में कुरीतियों को समाप्त कर, सनातन धर्म की प्रतिष्ठा करने के उपरान्त, मठ स्थापित कर, आने वाली पीढ़ियों के लिए आश्रय स्थल का निर्माण कर कुछ भी अशेष न रह जाने पर मन में एक सहज जिज्ञासा और उत्कंठा के भाव में आप्लावित हो गए कि जिस शिवत्व का उन्होंने केवल आभास किया है, मात्र वर्णन किया है उसका साक्षात् दर्शन कैसे प्राप्त किया जाए, और प्राणों की यही उथल-पुथल उन्हें केदारनाथ के उस दुर्गम और प्रायः जनशून्य क्षेत्र में खींच कर ले गई। शुभ्र स्निग्ध उदात्त हिममंडित शिखरों के मध्य उन्हें अचानक बोध हुआ-**''शिवोऽहम् शंकरोऽहम्'' अर्थात्— मैं जो शंकराचार्य हूं वही तो शिव हूं, मैं व्यर्थ ही जीवन भर एक अव्यक्त सी लालसा लेकर भटकता रहा।''** जीवन की यह तृप्ति उन्हें आनंद में, निर्विकल्प समाधि में तत्क्षण ही लीन कर गई, जिसके प्रमाण स्वरूप केदारनाथ के ठीक बगल में ही उनका समाधि-स्थल साक्षीभूत बनकर विद्यमान है।

इस जड़ जीवन का बोध **''शिवोऽहम्''** तक होना ही जीवन की पूर्णता और यथार्थ में इस मानव - योनि की उपलब्धता है, जो न तो साधना से, न ज्ञान से न, भक्ति से और न किसी भी जप या तप से इस जीवन में संभव है और फिर उन्हीं शंकराचार्य का पुण्य वाक्य स्मरण कराते हैं कि जिन्होंने समस्त ब्रह्म ज्ञान की श्रेष्ठता और पूर्णता के उपरांत मात्र-इतना ही कहा-**''केवल सद्गुरु का एक अनुग्रह पूर्ण वाक्य कि तू मुक्त है- 'अहं ब्रह्मस्मि' का यथार्थ बोध है।''**

यही सद्गुरुदेव के जीवन की भी तृप्ति और आह्लाद होता है। अपने शिष्य को सम्पूर्ण जीवन यात्रा निष्कंटक रूप से सम्पन्न कराना और मोक्षकामी व्यक्ति को जीवन-मुक्ति का रसास्वादन करा देना ही उनकी तृप्ति होती है। इसमें उनका कोई हेतु नहीं होता, अहैतुकी कृपा होने के कारण ही सद्गुरु सर्वोच्च हैं।

भगवान शिव के ही मूर्तिमंत स्वरूप में गुरु गोरखनाथ भी विख्यात हैं, जिन्होंने जन-सामान्य की भाषा में साबर मंत्रों की रचना की। ऐसें समस्त युग पुरुषों को, भगवान शिव के अंश से अवतरित दिव्य आत्माओं को वंदन करते हुए इस महत्वपूर्ण **शिव विशेषांक** की प्रस्तुति के अवसर पर जीवन के सभी पक्षों को समेटते हुए, विविध प्रकार की साधनाएं, ज्ञानात्मक और योगात्मक लेखों को इस अंक में समाहित करते हुए, **साक्षात् शिव स्वरूप पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को प्रणाम अर्पित करते हुए यह अंक प्रस्तुत कर रहा हूं।

क्योंकि भगवान शिव ने अपने जीवन में प्रत्येक अंश से जीवन की प्रत्येक कला धारण कर रखी है, यही जीवन का यथार्थ शिवत्व है और पूज्य गुरुदेव की अपने पाठकों, शिष्यों के जीवन के प्रति आकांक्षा व आशीर्वाद भी।

आपका

नंदकिशोर श्रीमाली

कल्पवृक्ष

तले

कल्पवृक्ष की धारणा जनमानस में एक पौराणिक मिथक के रूप में है, जिसकी छांव-तले खड़े होकर मन में कामना करने से कोई भी कामना तत्क्षण पूर्ण हो ही जाती है। जीवन में जो भी इस प्रकार की स्थिति देने में समर्थ हो, फिर हमारे लिए वही तो कल्पवृक्ष है। और इस धरा का, इस पीढ़ी का सौभाग्य है कि उसके मध्य वृक्ष की ही दृढ़ता और वैसी ही सघनता लेकर पूज्यपाद गुरुदेव **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** उपस्थित हैं, जिनकी घनी छांव में सैकड़ों-हजारों ही नहीं लाखों - लाख शिष्य विश्राम कर सके हैं, अपना जीवन संवार सके हैं और ज्यों एक वृक्ष निरंतर अपने नीचे सैकड़ों-हजारों पथिकों को छांव देता है और वह पथिक आगे बढ़ जाता है, उसी प्रकार वे भी शिष्यों के जीवन में छांव संभव कर सके हैं। जिनके प्रफुल्लित स्पर्श से सैकड़ों-हजारों पथिक रूपी शिष्य विश्राम कर, अपने-अपने गन्तव्यों की ओर सुगन्धित और पुष्पित होकर बढ़े हैं।

ज्यों विशाल वटवृक्ष अपनी मूल काया से सैकड़ों जड़ें उत्पन्न कर इस धरा पर दृढ़ता से स्थापित होता है, उसी प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव भी अपने व्यक्तित्व से, अपने ही काया के अंग के रूप में अनेक योग्य शिष्य उत्पन्न कर एक दृढ़ता और अतिरिक्त सघनता हमें प्रदान कर रहे हैं। कल्पवृक्ष के समक्ष खड़े होकर तो हम केवल अपना अभीप्सित ही पूर्ण कर सकते हैं, जबकि पूज्यपाद गुरुदेव के रूप में जो कल्पवृक्ष, हमारे और आपके बीच में उपस्थित है, उसका स्पर्श कर सकते हैं, उससे सुगंधित व स्पन्दित हो सकते हैं, तब जीवन की कामनाएं व इच्छाएं अत्यन्त गौण हो जाती हैं, उनकी पावन देह से आती हुई दिव्यता और तप की संगीत-लहरियों के सामने, वे मौन लहरियां, उनका एक-एक स्मित सहज ही मन में अंकुरित कर देता है प्रेम व अध्यात्म के वे अंकुर जिनके अभाव में फिर यह जीवन व्यर्थ और नीरस सा ही है, यह क्रिया तो मूल कल्पवृक्ष भी सम्पन्न नहीं कर सकता। मूल कल्पवृक्ष के नीचे खड़े होकर तो जो कुछ भी हम सोचेंगे, चाहेंगे वह हमारी तृष्णाओं की पूर्ति की बात ही होगी, जबकि गुरुदेव के साहचर्य से तो भौतिक के साथ-साथ हम अपना आध्यात्मिक जीवन भी संवार

प्रकृति से मानव का संस्पर्श होता है तो केवल एक अव्यक्त मौन से और गुरु से भी संबंध मौन होते हुए भी सर्वथा मुखर व जीवन्त होता है . . . जीवन की कामनाओं व अभिलाषाओं को पूर्ण करने में समर्थ।

ऐसे ही पूज्य गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी का एक-एक स्पर्श सघन वृक्ष की सुखद छांव जैसा शीतलतादायक तो है ही साथ ही उनके रोम-रोम से प्रतिक्षण गुंजरित होती आशीर्वाद की ध्वनि, वृक्ष से छन कर आती शरद की सुखद ऊष्मा युक्त सूर्य के समान ही शिष्य के जीवन को चैतन्य व पुलकित करने वाली है।

और वृक्ष भी कैसा . . . ज्यों साक्षात् कल्पवृक्ष! जैसे कल्पवृक्ष देवलोक से मानवाकृति में उतर आया हो इस धरा पर!

जहां जीवन की सभी स्थितियां निर्मित होती हैं . . .

सकते हैं, बिना कोई अन्य अतिरिक्त प्रयास किए, बिना शरीर सुखाये या योग की कठोरता को धारण करे, और यह नितान्त सत्य है कि बिना आध्यात्मिक जीवन के भौतिक समृद्धता का भी कोई विशेष अर्थ नहीं रह जाता, जीवन की धड़कन नहीं रह जाती और न ऐसी अनोखी सरसता रह जाती है, जिसकी तलाश में व्यक्ति पूरे-पूरे जीवन भर भागता रहता है और थककर चूर हो जाता है। देह की थकन को विश्राम कर मिटाई जा सकती है, लेकिन जब मन थककर चूर हो जाता है तब मन की थकन को विश्राम देने के लिए कोई उपचार-पद्धति नहीं है।

यह सारी भागदौड़, यह सारी थकान- यह सब मन से ही तो है, कभी किसी क्लब की ओर, कभी किसी होटल की ओर, कभी किसी पहाड़ी स्थान की ओर और कभी तीर्थ स्थान या आश्रम की ओर . . . लेकिन कोई समझ नहीं पाता कि वह क्यों भाग रहा है, क्यों वह किसी एक बिंदु पर एक क्षण भी विश्राम नहीं कर पा रहा है, क्यों उसे सभी कुछ होते हुए भी तृप्ति नहीं मिल पा रही है, क्यों भरापूरा परिवार होते हुए भी जीवन में खालीपन सा है, ऐसे समस्त प्रश्नों का एक मात्र उत्तर है, एक मात्र हल है - **सदगुरु! जो अपने स्वरूप में ईश्वर के प्रत्येक रूप को समाहित किए हुए हों, जो वरदायक हों, जो प्रत्येक ढंग से कल्याणकारी ही हों, जो प्रत्येक स्थिति में करुणामय हों, जो प्रत्येक दशा में क्षमा कर देने की उदात्तता अपने में समेटे हों, जो वास्तव में शिव स्वरूप हों और ऐसे ही व्यक्तित्व के, ऐसी ही सम्पूर्णता के दर्शन होते हैं, पूज्य गुरुदेव डा० नारायणदत्त श्रीमाली जी में।**

बाईबिल में ईसा मसीह का एक वचन है कि "जहां जो भी है वह मेरे पास आए और अपना दुख मुझे दे दे।" इस पर कभी स्वामी विवेकानंद ने अपनी पश्चिम यात्रा में टिप्पणी की थी कि "हम ऐसे व्यक्तित्व की अपार करुणा समझ ही नहीं सकते, क्योंकि उसको समझने के लिए पहले हमें खुद उस, अनुरूप बनना पड़ेगा" और आज यही कथन पूज्य गुरुदेव के लिए उद्धृत करने में मुझे संकोच नहीं, क्योंकि उन्होंने इस जीवन में, अपने इस भौतिक स्वरूप से भी जितना अधिक बांटा है, जितना अधिक प्रेम, करुणा, दया, ममता और स्नेह का विस्तार किया है, उसकी तुलना या कोई उपमा संभव ही नहीं। दूसरी ओर उनके सन्यस्त स्वरूप **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** का जो अद्भुत व्यक्तित्व है उसकी तो सामान्य जन कल्पना भी नहीं कर सकते। जिस प्रकार कोई वृक्ष अपने पास कोई लेखा-जोखा नहीं रखता कि कितने पथिकों ने उसके नीचे विश्राम किया, उसके फल खाये, उसी प्रकार पूज्यगुरुदेव के साथ भी कोई विवरण नहीं, कोई अनुमान ही नहीं कि कितने-कितने याचक उनके जीवन में आए, लाभान्वित हुए और स्वयं भी एक वृक्ष ही बन गए।

जब किसी पौधे पर कोई पुष्प खिलता है तो उसका कोई चिंतन नहीं होता, वह कोई उद्देश्य लेकर नहीं खिलता, वह तो एक धर्म होता है, जीवन का एक संगीत होता है, प्रकृति की एक लय होती है, जो किसी भी डाली पर किसी भी रंग में किसी भी सुगंध से व्यक्त हो जाती है। कोई भी उसका दृष्टा बनकर उसके आनंद का सहभागी बन सकता है क्योंकि पुष्प का आनंद तो बस खिलने में है। ठीक यही स्थिति है पूज्यपाद गुरुदेव की भी **उन्होंने जीवन में कोई मत या पंथ नहीं दिया, किसी बात पर आग्रह नहीं दिया, उन्होंने बल दिया तो वह भी एक मात्र सुगंध के साक्षीभूत हो जाने के लिए, एक आनंद के रस में अपने आप को निमग्न कर देने के लिए, एक अहोभाव के मात्र साक्षी ही नहीं, उसमें भागीदार हो जाने के लिए और सच कहूं तो यही अध्यात्म का मूल अर्थ है।** आनंद मग्न हो जाना, लय युक्त हो जाना, रसप्लावित हो जाना, यही भारतीय मनीषियों की भी कल्पना रही है। केवल एक वृक्ष बनने तक ही नहीं वरन फूलों से भरकर और रस-प्रौढ़ होकर, बीजों के रूप में बदलते हुए बिखरकर, संपूर्ण पृथ्वी पर छा जाने की कल्पना उनके मानस में रही और तभी वे कह सके - **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** जो विजेता के उन्माद का स्वर नहीं था वरन् एक कुटुम्ब के विस्तार का प्रयोजन था। आज ऋषियों की यह वाणी साकार रूप ले रही है **"सिद्धाश्रम साधक परिवार"** के विस्तार द्वारा। एक "परिवार", एक संस्था मात्र नहीं, और इसके पीछे जिनका प्रवाह है, जिनका आशीर्वाद और जिनका मौन परिश्रम है, वे हैं **पूज्य गुरुदेव डॉ नारायणदत्त श्रीमाली जी।**

गुरुजी आब करु जनु देरी,
अपने सन बापक रहितो हम,
पड़लो बड़ - बड़ फेरी, गुरुजी आब. . .
पाबि संगत जीव घात करी,
पाप बटोरत ढेरी,
होएव सनाथ जो कानियो अपने,
हमरा दिश जॅ हेरी, गुरुजी आब. . .
डाली भरी मुक्तमणि देतु
सव के सेर पसेरी,
हमही एक अभागत वंचित,
खाली हाथ चंगेरी, गुरुजी आब. . .
पारसमणि करुणावरनालय
आव अधिक नहीं देरी
अहाँक द्वार तदापि न छोड़व,
अजीत मस्त भंगेरी
गुरुजी आब करु नहीं देरी।

राजस्थान के एक अत्यन्त साधारण से ग्राम में साधारण परिवार में जन्म लेकर, अध्यापक के गौरवशाली पद पर कार्यरत रहते हुए भी उन्होंने अपनी चैतन्यता और समाज के प्रति आग्रह से यह स्पष्ट कर दिखाया कि यदि व्यक्ति में

किन्तु जैसा कि नीति का एक श्लोक है कि फलदार वृक्ष तो झुक ही जाता है, पत्थर फेंकने वाले को भी फल प्रदान करता है. . . यही कल्प वृक्ष की भी धारणा है, यही गुरुत्व है और यही श्रीमाली जी का व्यक्तित्व भी!

संकल्प हो, वास्तव में समाज के प्रति कोई दर्द हो, तो वह क्या कुछ नहीं कर सकता। पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने जीवन के प्रारम्भ में ही निश्चय कर लिया था कि मुझे इसी जीवन में ही हजार जीवन जी लेने हैं और यह संभव हो सका उनके द्वारा प्राचीन भारतीय विद्याओं के प्रति चिंतन और उनको अर्जित कर पुनः समाज को प्रदान करने से।

बहुत पहले ही पूज्य गुरुदेव ने इस बात को स्पष्ट रूप से कहा था कि **राजनीति और क्रांति के माध्यम से जो कुछ भी घटित होता है वह स्थायी नहीं होता, उससे तो केवल एक काया का निर्माण होता है जिसमें आत्मा नहीं होती। वर्षों पूर्व उनकी इस बात का प्रमाण आज हम विश्व के सबसे बड़े समाजवादी राज्य रूस के विघटन के साथ सत्य होता देख रहे हैं जबकि भारत जैसा एक विशाल देश यदि आज अपने समस्त विरोधाभासों के बाद भी बंधा है तो केवल धर्म की आत्मा के कारण और इसका पुनर्जागरण संभव है साधनाओं व आध्यात्मिकता के प्रसार-प्रचार द्वारा।** अनेक विद्याओं और गोपनीय सिद्धियों को अपने में समाकर भी वे जिस प्रकार से सहज और एक प्रकार से अबोध हैं, वह वास्तव में किसी देव तुल्य व्यक्तित्व का ही अंग हो सकता है, क्योंकि जहां जीवन की स्थितियां महत्वपूर्ण हो जाती हैं जहां उदात्त लक्ष्य आंखों के सामने स्पष्ट रहते हैं, फिर वहां महत्व यह नहीं रहता कि वस्त्र सफेद हैं या गेरुए, उपाधि विभूषित हैं या उपाधि से रहित, आश्रम लम्बा-चौड़ा है या छोटा अथवा कितने राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व शिष्य हैं।

पुनः वही बात दोहराना चाहूंगा कि किसी उच्चता को समझने के लिए स्वयं भी उतना ही उच्च बनना ही पड़ता है। **धरती पर रेंगता कीड़ा हिमालय के सौन्दर्य को न तो निहार सकता है, न उससे अभिभूत हो सकता है।**

वास्तव में कल्पवृक्ष की उपमा तो एक प्रयास है जिसके माध्यम से हम ऐसे विराट व्यक्तित्व का वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं।

कल्पवृक्ष के नीचे खड़े होने पर तो व्यक्ति को अपनी प्रार्थना, अपनी कामना उच्चरित करनी पड़ती होगी, याचक और आग्रही बनना पड़ता होगा जबकि पूज्य गुरुदेव के समक्ष तो ऐसी भी स्थिति नहीं।

मैं जब उनकी आलोचना होते और उन्हें इस समाज के कुचक्रों से जूझते हुए देखता हूं तो मन में एक अजीब सा खालीपन आ जाता है। यह नितान्त उदर और यौन क्षुधा तक दृष्टि सीमित रखने वाले किस प्रकार दुस्साहस करते हैं, कैसे पूज्य गुरुदेव के विषय में अपना मत प्रगट करते हैं, ये तो सामान्य सी टिप्पणी करने के भी अधिकारी नहीं है, जबकि इनकी धृष्टता तो इन सीमाओं को लांघ कर अहंमन्यता की सीमा को भी पार करने लगी है।

किंतु जैसा नीति का एक श्लोक है जिसका तात्पर्य है कि फलदार वृक्ष तो झुक ही जाता है और जो उसके ऊपर पत्थर भी फेंकता है उसको भी अमृत फल प्रदान करता है।

यही कल्पवृक्ष की धारणा है, यही शिवत्व है, यही गुरुत्व है और यही **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी** का व्यक्तित्व है।

मैंने तो इस सामान्य गृहस्थ जीवन में ही उनकी जितनी कृपाओं को प्राप्त किया है, एक सामान्य सी स्थिति से उठकर भौतिक व आध्यात्मिक दोनों रूपों में श्रेष्ठता प्राप्त की है, उसके पश्चात् मुझे अन्य किसी कल्पवृक्ष की कोई आवश्यकता ही नहीं रही।

आखिर कब तक...??? अविश्वास के अंधेरे में जीएंगे

समाज का यह घिनौना वातावरण और इसमें रहता एक बेबस निरीह प्राणी जिस ओर भी नजरें उठाता है उसे वहां अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता है। एक अंधकार-युग की ओर बढ़ता हमारा देश। क्या होगा इसका? क्या सब यूं ही समाप्त हो जाएगा? हम सब क्यों रेगिस्तान के आदी हो गए हैं? क्यों हम परमाणु बमों जैसी खतरनाक प्राण घातक सामग्री की ओर आकर्षित हो रहे हैं? क्यों हम एक दूसरे के शत्रु बन गए हैं? क्या यही हमारे जीवन का लक्ष्य है? नहीं, कभी नहीं! यह हमारा लक्ष्य हो ही नहीं सकता।

इस घने अंधकार में हमें अपनी खुली और बंद आंखों का अहसास ही नहीं होता। आंखे खुली हों तब भी अंधेरा और बंद हो तब भी अंधेरा! आंखे बंद करने से हमें कुछ शारीरिक राहत तो मिल जाती है, लेकिन क्या मानसिक राहत भी मिल पाती है? नहीं! हम शारीरिक सुख के पीछे दीवाने हो रहे हैं। ऐसा नहीं कि समाज में रोशनी का अस्तित्व ही नहीं है या कोई समाज को नई दिशा दे ही नहीं रहा। जो हमारे समाज को एक रोशनी, एक नई दिशा दे रहे हैं ऐसे युग पुरुषों को हम देख ही नहीं पा रहे हैं, क्योंकि इस अंधकार में हमने आंखें दृढ़ता से मूंद रखी हैं।

आप कल्पना कीजिए आप अपने कमरे में सोए हैं और रात्रि में अचानक लाइट चली जाती है और आपको उठना पड़ता है। तब आप एक प्रकाश बिंदु के सहारे दरवाजे तक पहुंचते हैं, वह प्रकाश दरवाजे के ही किसी झरोखे से आ रहा है और आप दरवाजा खोल कर बाहर चंद्रमा की शीतल चांदनी में आकर राहत अनुभव करते हैं। ऐसा ही कुछ हमारे वास्तविक जीवन में भी होता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी, मंहगाई और अज्ञानता के घने जहरीले बादलों के नीचे हम कैसे प्रसन्न रह सकते हैं? ये तेजाबी बादल किसी समय बरसकर हमारी समस्त पीढ़ी के जीवन को गला सकते हैं।

फिर क्या कोई इसका समाधान है? हां! है। और अवश्य है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि केवल बुराई हो और अच्छाई न हो। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी एक वस्तु के दो पहलू अवश्य ही होते हैं। **यह तो प्रकृति का नियम है कि जहां वाद होता है, वहां विवाद भी अवश्य होता है। यह हमारी अपनी इच्छा होनी चाहिए कि हम हरियाली से भरपूर सुहावना वातावरण ही पसंद करें न कि तपता रेगिस्तान,** जहां दूर-दूर तक जीवन के चिन्ह ही न दिखाई देते हों। यह सब सम्भव हो सकता है 'प्रेम' शब्द का अपने जीवन में सार्थक प्रयोग करके। प्रेम का सार्थक प्रयोग तब ही संभव है जब हमारे अंदर त्याग की भावना और धर्म की प्रवृत्ति होगी।

प्रेम करो प्रकृति से, प्रेम करो समाज से, अपने ईश्वर से, अपने गुरु जनों से ब्रह्माण्ड में स्थित एक-एक जीवन से। पूरे समाज में एक ऐसी गंगा बहा दो, जिसमें प्रेम का पानी हिलोरे लेता बहे, और इस अमृत तुल्य जल को बहाने के लिए त्याग का आधार होना चाहिए, और यह सब हो सकता है एक दृढ़ विश्वास के सहारे और विश्वास पैदा किया जाता है सकारात्मक विचारों की श्रृंखला से।

क्या आपको विश्वास की अनुभूति है? यदि नहीं तो कीजिए और शीघ्र कीजिए। **हमारे समाज में ज्ञान की गंगा को बहाते हुए, प्रेम का अमृत बरसाते हुए त्याग की भावना को प्रबल करते हुए परम पूज्य गुरुदेव आज भी हिमालय की तरह से आप के बीचों-बीच स्थित हैं। हमारे सम्पूर्ण विश्वास का केंद्र हैं वह। केवल गुरुदेव पर विश्वास करना ही समस्त ब्रह्माण्ड पर विश्वास करने जैसा है, क्योंकि वह ज्ञान का अथाह भण्डार हैं तथा सर्व समर्थ है। वह हमारी उंगली पकड़, हमें सही राह दिखा सकते हैं और आनंद की महान अनुभूति की ओर अग्रसर कर सकते हैं। समाज के कठोर धरातल पर प्रेम से जीने की कला सिखा सकते हैं, अपनी तपस्या के द्वारा अपनी साधना के द्वारा।**

आइए हम उनके चरणों में श्रद्धा से शत्-शत् वंदन करें।

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भैजे गुरौ
यादृशी भावना यस्त्र सिद्धिर्भवति तादृशी।

अर्थात् मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषधि तथा गुरु में जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि मिलती है।

रावणकृत तांत्रोक्त शिव पूजन
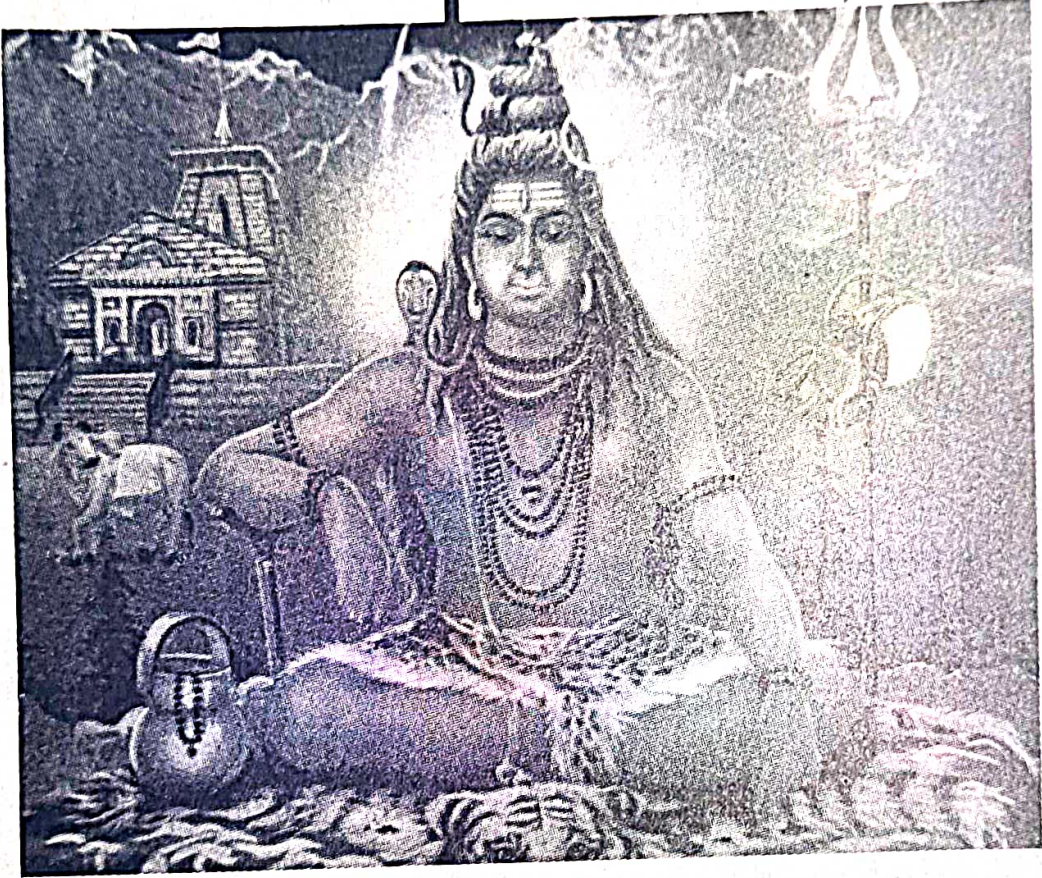
पत्रिका के जनवरी १९९४ के अंक में हमने शिव पूजन की महत्ता से सम्बंधित एक लेख प्रकाशित किया था जिसके मूल में **रावणकृत तांत्रोक्त शिव पूजन** का वर्णन है पाठकों ने उसका स्वागत करते हुए विशेष रूप से **शिव पूजन पैकेट** प्राप्त किए। जैसा कि जनवरी अंक में उल्लेख किया था, हम इस अंक में रावणकृत तांत्रोक्त पूजन पूर्ण रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

ईशान दिशा की ओर प्रातः श्वेतासन पर बैठ- श्वेत वस्त्र धारण कर, लकड़ी के बाजोट पर ताम्र- पात्र में **तांत्रोक्त शिवयंत्र** स्थापित करें यदि आपके पास किसी भी प्रकार का कोई भी शिवलिंग हो तो उसे भी बगल में स्थापित करें। शिवलिंग एक से अधिक नहीं होना चाहिए। **तांत्रोक्त यंत्र और शिवलिंग भगवान शिव-पार्वती का संयुक्त रूप है** और जहां भगवान शिव का ध्यान करें वहीं नानाविध आभूषणों और मंगल वस्त्रों से सुशोभित प्रसन्नवदना मां भगवती पार्वती का भी चिंतन करें। **पूज्यपाद गुरुदेव एवं पूज्यनीया गुरुमाता के संयुक्त चित्र** को स्थापित करें और भगवान शिव एवं पार्वती की भावना करते हुए उनका चंदन, बिल्वपत्र, अक्षत, मौली, सुपारी और गंगाजल से संयुक्त पूजन करें। भगवान शिव पर धतूरे का फल चढ़ाकर भस्म का लेपन करें तथा आशुतोष रूप में शिवरूपी गुरुदेव का चिंतन निम्न प्रकार से करें--

आशुतोषम् ज्ञानमयं कैवल्य फल दायकम्
निरान्तकम् निर्विकल्पम् निर्विशेषम् निरंजनम्

सर्वेशाम् हितकरतारं देव देवं निरामयम्
अर्धचंद्रोज्ज द्भालम् पंचवक्त्रम् सुभूषितम्

गणपति पूजन -

गोल सुपारी पर मौली लपेट, चावलों की ढेरी पर स्थापित कर भगवान गणपति की भावना करते हुए **धूम्र संकष्ट** निम्न मंत्र से अर्पित करें --

गां गीं गूं गें गौं गां गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय बलिम् ग्रहण स्वाहाः। ।

कार्तिकेय पूजन -

शिव यंत्र पर एक **गौरांग** समर्पित करें तथा निम्न मंत्र उच्चरित करें --

ॐ गौं गौं कार्तिकेय नमः।।

भैरव पूजन -

बाईं ओर चावलों की ढेरी पर गोल सुपारी स्थापित कर, सिंदूर का टीका व गुड़ का भोग लगाकर, **भैरव लोचन** मंत्र द्वारा बलि रूप में चढ़ाएं।

बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदाः
शांति करोतु मे नित्यम् भूत वेताल सेवितः

वीरभद्र पूजन -

भगवान शिव के प्रमुख गण वीरभद्र की स्थापना भैरव के संग कर एक **गुंडीचा** काले तिल व पुष्प के साथ निम्न मंत्र से चढ़ाएं -

एह्येहि पुत्र रौद्रनाथ कपिल जटा भार भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुखी सर्व विध्नान् नाशय-नाशय सर्वोपचार सहितं बलिम् ग्रहण - ग्रहण स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजन -

सम्पूर्ण पूजन से कुछ अलग हट कर दाहिनी ओर एक **रौद्रसाक्षी** की स्थापना लालपुष्प की पंखुड़ियों पर करें और एक बड़ा फल निम्न मंत्र द्वारा धूप-दीप के साथ बलि रूप में उसे अर्पित करें।

क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षः हुं स्थान क्षेत्रपाल धूप दीप सहितं बलिम् ग्रहण-ग्रहण सर्वान कामान् पूरय-पूरय स्वाहा।।

योगिनी पूजन -

महाशिवरात्रि योगनियों के उत्सव का अवसर है, जो साधक के जीवन में अनेक प्रकार से सफलतादायक सिद्ध होती हैं। एक **विकटा** स्थपित कर उसका पूजन, काजल, सिंदूर और लाल पुष्प से करें तथा निम्न मंत्र उच्चरित करें -

या काचिद योगिनी रौद्र सौम्या धरतरापरा।
खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रतास्तु मे सदा। ।

कुबेर पूजन -

भगवान शिव की एक संज्ञा **कुबेरपति** भी है और यह शिवरात्रि कुबेर साधना का सर्वाधिक सिद्ध मुहूर्त है, **गुणनिधि** को चांदी अथवा तांबे के पात्र में स्थापित कर उसका पूजन चंदन, धूप एवं सुगंधित द्रव्य से करें तथा निम्न मंत्र उच्चरित करें --

ॐ क्षौं कुबेराय नमः।।

इस सम्पूर्ण पूजन के बाद पुनः शिव-पार्वती का संक्षिप्त पूजन करें और घी का एक दीपक जला कर, निम्न शिव-पार्वती के संयुक्त मंत्र का जप रुद्राक्ष की माला से करें।

मंत्र

ॐ शं शिवाय नं नमः।।

प्रातः इस मंत्र की दो माला करना ही पर्याप्त है। रात्रि में साधक यदि चाहे तो अपनी इच्छानुसार इसी मंत्र का पुनः जप कर सकता है, किंतु वह एक माला से कम न हो। दूसरे दिन प्रातः तांत्रोक्त शिवयंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। शेष सभी सामग्रियों को लाल वस्त्र में बांध कर शिव मंदिर में भेंट चढ़ा दें। ✵

तंत्र के एक सौ आठ प्रयोग

मानव-जीवन, प्रकृति से एकरस होता है और प्रकृति के तादात्म्य से ही उसके जीवन की स्थितियां बनती या बिगड़ती हैं, यही तंत्र का मूल अर्थ है और इन अर्थों में फिर आप, हम व सभी **''तांत्रिक''** हैं। तांत्रिक बनने के लिए कोई विशेष वेशभूषा या आचरण लाने की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि व्यक्ति उन रहस्यों को समझे, प्रकृति-प्रदत्त दुर्लभ तथ्यों को प्राप्त करे, जिनके माध्यम से वह अपना जीवन सजा व संवार सकता है।

साधुओं-तांत्रिकों और परम्पराओं में से तंत्र के एक सौ आठ प्रयोग एकत्र करते समय हमारे मानस में एक ही विचार प्रमुख था कि केवल वे उपाय ही प्रस्तुत किए जाएं जो जनसामान्य के द्वारा सरलता से व्यवहार में लाए जा सकते हों और इस युग की अनुरूपता के साथ तीव्र प्रभावकारी बन कष्टों का समापन करने में सहायक हों।

ये प्रयोग वर्ष भर में कभी भी सम्पन्न किए जा सकते हैं
किंतु ये प्रयोग शिवरात्रि से होली की रात्रि के बीच कभी भी सम्पन्न किए जा सकते हैं

वस्तुतः यह सभी तंत्र प्रयोग, सिद्ध कहे जाने वाले गोपनीय प्रयोग ही हैं, जिनका रहस्य साधु, सन्यासी सहजता से स्पष्ट नहीं करते।

राजोग -

एक अनोखी जड़ जिसको मूल नक्षत्र में प्राप्त कर व मंत्रों से सिंचित कर निम्न प्रयोग किए जाते हैं -

१. कृष्ण पक्ष के किसी भी मंगलवार की रात्रि में यदि इसे घर के कूड़े-करकट के साथ घर के दरवाजे पर जला दें, तो इसके साथ ही विपदा का, दरिद्रता का भी विनाश हो जाता है।

२. सभी सदस्यों के सिर पर घुमाकर होली की रात्रि में अग्नि में समर्पित कर देने से रोग और पीड़ा दूर होती ही है।

देव्यारूपा -

अशोक के वृक्ष पर उगने वाला एक अनोखा **''बन्दा''** जिसकी प्राप्ति दुर्लभ है और जिससे--

१. यदि कोई स्त्री गर्भ धारण करने में समर्थ होने पर भी संतान को जन्म न दे पा रही हो या दूसरे शब्दों में बार-बार गर्भपात की स्थिति बन जाती हो।

तो गर्भिणी स्त्री की कमर में इसको काले वस्त्र में लपेट कर धारण करवाएं।

२. यदि कोई शत्रु अनायास पीड़ा दे रहा हो।

तो श्मशान में जाकर रात्रि में शत्रु का नाम लेकर यह बन्दा दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

चंद्रविराग-

कुम्हार के चाक की मिट्टी लेकर औघड़ पंथी जिसमें कुछ और साम्रगी मिलाकर एक अनोखी रचना बना लेते हैं जिससे--

१. कैसी भी विकट स्थिति आ गई हो तो एक चंद्रविराग सूखे कुंए में डाल देने से वह तुरंत शांत हो जाती है।

२. घर की चौखट के पास गड्ढा खोदकर एक चंद्रविराग डाल देना घर और परिवार की सुरक्षा का सिद्ध प्रयोग है।

लोहिता -

नागालैण्ड की पहाड़ियों में प्राप्त होने के कारण इसे इसके रंग के अनुरूप नाम दिया गया है--

१. लोहिता धारण करने वाले व्यक्ति के जीवन से शस्त्र का भय समाप्त हो जाता है।

२. होली की रात्रि को इसे होलिका जलने के समय अग्नि में डाल दें तो पूरे परिवार की पूर्ण सुरक्षा वर्ष भर रहती है।

जगुना -

सुन्दर आकार का यह पदार्थ वास्तव में अद्‌भुत कहा जा सकता है और उसमें भी एक विशेष प्रकार का छिद्रयुक्त जगुना ही तांत्रिक प्रयोगों में प्रयुक्त होता है।

१. पशुओं के बाड़े के पास इसे गाड़ने से सदैव उनकी सुरक्षा बनी रहती है और तांत्रिक प्रयोग या मूठ का प्रभाव नहीं पड़ता।

२. छोटे बच्चों की बीमारियां दूर करने के लिए इसे बालक के सिर पर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

रूपारंग -

उड़ीसा के सम्बलपुर क्षेत्र में शायद ही कोई इससे अपरिचित हो और--

१.जीवन की बाधाओं, कष्टों को दूर करने के लिए इसे खाट के पाये से बांध दे तो रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

२. सांवलेपन में सलोनापन आता है इसी से।

सुढार -

सुढार की प्राप्ति कठिनाई से होती है लेकिन तंत्र शास्त्र इससे भी अपरिचित नहीं--

१. पुरुषों के लिए सुढार साक्षात् कामदेव का उपहार है क्योंकि इसके स्पर्श मात्र से रग-रग में हलचल मच जाती है।

२. यदि स्तम्भन शक्ति का अभाव हो तो एक सुढार मुटठी में रख कर रतिक्रीड़ा में संलग्न होना वीर्य-स्तम्भन का अचूक टोटका बताया गया है।

मोरतुंग -

वैधक ग्रंथों में इसकी भस्म अनेक प्रकार से उपयोगी बताई गई है किंतु मोरतुंग के तांत्रिक लाभ भी हैं--

१. यदि कोई स्त्री नष्टपुष्पा हो (अर्थात् जिसका ऋतुस्राव रुक गया हो) तो उसे स्थायी रूप से मोरतुंग कमर में बांधना चाहिए।

२. यदि कोई स्त्री इसे बालों के बीच में छुपाकर धारण करती हो तो उसकी सुन्दरता में अनोखी वृद्धि हो जाती है।

शोण -

शोणभद्र से प्राप्त होने वाला एक विशिष्ट पत्थर तांत्रिक क्रियाओं में अपना अलग ही स्थान रखता है--

१. यदि बच्चे बार-बार अस्वस्थ हो जाते हों या नजर लगने का भय रहता हो तो एक शोण उनके ऊपर से घुमाकर किसी को कुछ धनराशि के साथ दान में दे दें।

२. शोण के स्थापित करने से घर में अनावश्यक वाद - विवाद पर नियंत्रण स्थापित होता है व गृह कलह समाप्त हो जाता है

तुमुल -

तुमल का वर्णन पूर्णरूप से नहीं मिलता लेकिन संक्षिप्त विवरण भी इसकी विशेषता बता जाता है--

१. यदि कोई व्यक्ति ऋण लेकर वापिस न दे रहा हो तो एक तुमुल पर उसका नाम बोल कर दक्षिण दिशा में फेंक दें, सप्ताह भर बीतते न बीतते वह खुद घर पर आकर धन वापिस दे जाएगा।

२. तुमुल की एक लड़ी गले में धारण करने से कुछ ही दिनों के भीतर व्यक्ति को **भूगर्भ सिद्धि** प्राप्त होने का विवरण भी शास्त्रों में मिला है।

जम्भा -

जलकुम्भी के समान जम्भा भी दल-दल से भरे तालाब में उगने वाली एक बेल है जिसके बीज का तांत्रिक दृष्टि से विशेष महत्व है--

१. यदि पत्नी को अनुकूल बनाना चाहते हों तो गोपनीय ढंग से जम्भा का बीज उसके सिर पर स्पर्श कराकर तालाब या जल पात्र में डाल दें।

२. घर के बीचों-बीच में एक जम्भा बीज गाड़ देने से गृह कलह समाप्त हो जाती है।

गोमती चक्र -

गोगती चक्र से प्रत्येक साधक परिचित है। इराके तंत्र में भी उपयोग संभव है--

१. दो गोमती चक्र लेकर जिन दो नागों को एक गुट्ठी सररों के साथ लाल वस्त्र में बांधकर रख दिया जाए तो उनगें जीवन भर मित्रता बनी रहती है।

२. दो गोमती चक्र श्मशान से चिता की भरग लाकर जिन दो नागों के साथ काले कपड़े में बांध दिया जाए तो उनगें जीवन भर के लिए फूट पड़ जाती है।

दसौधी -

दसौधी का उपयोग वैद्य और तांत्रिक समान रूप से करते रहे हैं--

१. यदि किसी की मद्यपान की लत न छूट रही हो तो उसके गले में दसौधी पहिना दे तो उसकी वह आदत छूट जाती है।

२. दसौधी से व्यक्ति को निद्रा-स्तम्भन के क्षेत्र में भी पर्याप्त सहायता मिलती है। सिद्ध तांत्रिक अपनी साधनाओं में इसी के प्रयोग से निद्रा को नियंत्रित कर पाने में समर्थ रहते हैं।

शर्वाणी -

शर्वाणी का अभिचारिक क्रियाओं के अंतर्गत उच्चाटन के लिए प्रमुखता से वर्णन है लेकिन इसके सौम्य उपयोग भी हैं--

१. होलिका दहन की रात्रि में एक शर्वाणी अपनी सबसे प्रमुख समस्या को बोलकर अग्नि में डाल दें तो उससे छुटकारा मिल जाता है। (अलग-अलग समस्याओं के लिए अलग-अगल शर्वाणी प्रयोग में लाए जा सकते हैं।)

२. यदि राज्यबाधा-भय हो तब एक शर्वाणी को नित्य अपने समीप रखना ही चाहिए।

तांत्रोक्त नारियल -

तंत्र और तांत्रोक्त नारियल एक दूसरे के पर्यायवाची ही हैं--

१. तांत्रोक्त नारियल लाल कपड़े में बांधकर मुख्य द्वार के पास स्थापित करने से घर का वातावरण शुद्ध होता है।

२.लक्ष्मी का वास यदि स्थायी न होता हो तो तांत्रोक्त नारियल को अपनी दुकान, घर या तिजोरी में रखें।

जतीन -

जतीन का प्रयोग मुख्य रूप से आकर्षण प्रयोगों में होता रहा है--

१. यदि गले में इस जतीन को संबंधित स्त्री का नाग लेते हुए धारण करें या जेव में रखे और उसके सागने जाएं तो वह सम्गोहित होती ही है।

२. गनोनुकूल विवाह के लिए जतीन पर्स मेंरखना एक सिद्ध तांत्रोक्त उपाय है।

कोटिल -

यह इसी नाग से पहिचाना जाता है और तंत्र के क्षेत्र गें रागबाण गाना गया है--

१. यदि आकरिगक दुर्घटनाओं का भय बना रहता हो या शत्रुबाधा प्रबल हो तो एक कोटिल चांदी के तावीज में भरकर स्थायी रूप से धारण कर लेना चाहिए।

२. द्वेषवश किसी झगड़े या मुकदमेबाजी में फंसा दिए गए हों तो प्रमुख शत्रु का नाम लेकर एक कोटिल आक के पेड़ की जड़ के पास गाड़ दें।

तांत्रोक्त फल -

तांत्रिक साधनाओं की एक ऐसी तांत्रोक्त सिद्ध सफल वस्तु जिसका अनेक प्रकार से उपयोग संभव है--

१. किसी भी पद्धति से लक्ष्मी की कोई भी साधना कर रहे हों, तांत्रोक्त फल के रखने पर वह साधना सफल होती ही है।

२. प्रत्येक शक्ति-साधना या दस महाविद्याओं में से कोई भी महाविद्या साधना तांत्रोक्त फल की भेंट चढ़ाए बिना पूर्ण मानी नहीं जाती।

होलिका -

होली की रात्रि में तांत्रिक साधनाओं के मध्य प्रयोग किया जाने वाला पदार्थ--

१. एक होलिका लेकर उसे कुंकुंम से रंग कर **ॐ पद्मावत्यै नमः** मंत्र का उच्चारण कर होलिका-दहन की अर्धरात्रि में लक्ष्मी के चित्र के आगे स्थापित करने से वर्ष भर लक्ष्मी स्थिर बनी रहती है। अगले वर्ष इसे होलिका में समर्पित कर दें।

२. यदि एक होलिका सिंदूर से रंग कर होलिका-दहन की रात्रि में मनोवांछित स्त्री या पुरुष के घर के आगे उसका नाम लेकर डाल दी जाए (जहां उसका पैर पड़ सके) तो वह अगले वर्ष तक के लिए सम्मोहित हो जाता या हो जाती है।

सिद्धिफल -

अपने नाम के अनुकूल प्रत्येक साधना में सिद्धि का प्रतीक और तांत्रोक्त रूप से--

१. पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए दो सिद्धि फल अपने शयन

कक्ष में पीले वस्त्र में बांधकर स्थापित करें।

२. मन में बैचेनी और झुंझलाहट भरी रहती है तो एक सिद्धि फल कुछ दक्षिणा के साथ किसी शिव मंदिर में भेंट चढ़ा दें।

कंचुकी -

छोटे से रूप में मिलने वाला यह पदार्थ बस दिखने में ही छोटा है--

१. आधा सीसी दर्द बने रहने पर किसी भी मंगलवार की प्रातः पांच कंचुकी के दाने चन्दन के साथ पीसकर माथे पर लगाने से लाभ मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

२. कंचुकी के ११ दानों की एक पोटली बनाकर बच्चों की कमर में पहिनाने से उन्हें रात्रि में सोते समय मूत्र-त्याग करने की आदत से छुटकारा मिल जाता है।

अकुड़ा -

यदि शुक्रवार को इसको मंत्र सिद्ध कर निम्न प्रयोग किए जाएं तो वे अचूक होते ही हैं--

१. एक अकुड़ा जेब में रख कर द्यूत क्रीड़ा में बैठने से सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

२. अकुड़ा अपनी तिजोरी या गल्ले में स्थापित करने से तिजोरी कभी रिक्त नहीं होती।

गोखुरा -

कहते हैं लाखों व्यक्तियों में से किसी एक सौभाग्यशाली को ही सही गोखुरा मिल पाता है--

१. यदि अंगूठी में उसे धारण करवा कर पहन लें तो उससे मिलने वाली स्त्रियां सम्मोहित होने लग जाती हैं।

२. जिसके पास गोखुरा होता है उसे सट्टे या शेयर बाजार में सफलता मिलती ही रहती है।

कास्तुनी -

स्वप्न विज्ञान अपने-आप में एक प्रामाणिक शास्त्र है और कास्तुनी के द्वारा ही उसमें पूर्णता प्राप्त होती है--

१. रात्रि में सोते समय एक कास्तुनी पर अपना प्रश्न बोलकर उसे घर से बाहर फेंक दें --

-- तो उसी रात्रि में स्वप्न के माध्यम से प्रश्न का उत्तर मिल जाता है।

२. यदि स्वप्न-वाराही साधना कर दूसरों का भविष्य बताने की सिद्धि प्राप्त करना चाहें तब कास्तुनी को अंगूठी में जड़वा कर बाएं हाथ में पहिनें।

कटवहेड़ी -

तंत्र के अन्य प्रयोग चूक भी जाएं किंतु कटवहेड़ी से कोई चूक हो जाए यह असम्भव है--

१. प्रत्येक तांत्रिक अपने शरीर को दृढ़ व सशक्त बनाए रखने के लिए कटवहेड़ी को आभूषण की तरह सदैव धारण किए ही रहता है।

२. कहते हैं जिसके पास कटवहेड़ी होती है उसे अपने-आप **भविष्य साधना** की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

नवांग -

मोती से मिलता-जुलता यह पत्थर सौन्दर्य के साथ-साथ अचूक सिद्धियां भी समेटे है--

१. चेहरे पर रूखापन व झाइयां किसी भी प्रयोग से न जा रही हों तो नवांग धारण कर लें।

२. प्रेम और सौन्दर्य का बेजोड़ पत्थर है नवांग, जिससे जीवन सजता और संवरता है।

तुमद्रीर -

आंध्र प्रदेश के आदिवासियों से प्राप्त एक अनोखा रहस्य है--

१. यदि बहुमूत्र रोग हो (अथवा डायबिटीज का रोग हो) तो बिना सोच-विचार के इसको धारण कर लेना चाहिए।

२. स्वप्न दोष के रोगियों को भी इसी विशिष्ट कौड़ी को धारण करने से स्थायी लाभ मिलता है।

कुमकुमी -

कैसा भी वीतराग साधु हो लेकिन कुमकुमी का मोह वह भी नहीं छोड़ पाता क्योंकि--

१. जिसके पास कुमकुमी होती है उसे जीवन में कभी भी धन के लिए चिंतित नहीं होना पड़ता।

२. यदि अष्ट लक्ष्मी यंत्र पर एक कुमकुमी चढ़ाकर अष्टलक्ष्मी मंत्र का जप किया जाए तो व्यक्ति को लक्ष्मी ही नहीं अष्ट लक्ष्मी का स्थायी सुख प्राप्त होता है।

रक्तरूपा -

तंत्र के क्षेत्र में इसका विशेष उपयोग है किंतु इसको प्राप्त करने के लिए विशिष्ट नक्षत्र एवं मंत्र का ज्ञान होना आवश्यक है--

१. नेत्र ज्योति मंद पड़ने की दशा में इसका स्पर्श नेत्रों पर कराने से गई ज्योति पुनः लौट आने का वर्णन मिलता है।

२. रक्तरूपा की प्राप्ति से व्यक्ति को जमीन में गड़ी निधि स्पष्ट दिखाई देने ही लगती है।

भटसर -

जंगली जड़ी किंतु अपने गुणों में ऐसी कि रत्नों के मोल बिके--

१. भूत-प्रेत बाधा विकट हो लेकिन निम्न मंत्र से इसी जड़ी द्वारा एक सौ आठ बार झाड़ा दें तो वह बाधा दूर होती ही है।

मंत्र

अघोरेभ्यो थ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः सर्वतः
सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः। ।

२. यदि व्यक्ति भूत-प्रेत साधना करने का इच्छुक हो तो इसे धारण कर साधना करे, फिर ये योनियां पलट कर आक्रमण नहीं करतीं।

तक्षकरूपा -

विषधर सर्प के रंग के समान ऐसी दुर्लभ मणि जिसका प्रयोग अचूक है--

१. यदि घर में सर्पादि विषैले जीव छुपे हों तो इसके स्थापन मात्र से ही वह स्वतः घर छोड़कर दूर चले जाते हैं।

२. तक्षकरूपा धारण करने से वैताल सिद्धि हो ही जाती है।

गंडिनी -

गंडिनी की प्राप्ति भारत में केवल मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में ही होती रही है और इसके उपयोग--

१. यदि स्त्री वंध्या हो अथवा गर्भाशय में दोष हो तो काले धागे से बांध कर इसको धारण करना आवश्यक है।

२. कैसा भी जटिल कोई स्त्री रोग हो, गंडिनी धारण कराने से उसका प्रभाव शांत होने लगता है।

विचित्रा -

केवल नाम में ही अटपटी लेकिन प्रयोग में--

१. सौन्दर्य का अभाव होने के कारण या उसमें कटाव न होने के कारण कई बार स्त्रियां खिन्न रहती हैं ऐसे में विचित्रा धारण उसके रूप और सौन्दर्य को सम्मोहक ढंग से वृद्धि करता ही है।

२. यदि पति का मन बदल गया हो तो यही विचित्रा तीन रातों तक उसके सिरहाने गोपनीय ढंग से दबी रहने दें और फिर घर से इतनी दूर फेंक दें कि निगाह न पड़े, यह पति वशीकरण का अचूक टोटका है।

कौतुकी -

विचित्रा के समान यह भी नाम में अनोखी और प्रभाव में भी अनोखी है--

१. कौतुकी शरीर के सौन्दर्य-वर्द्धन का अचूक उपाय है, जिस स्थान पर लोम बहुलता में हो और उसका नाश करना चाहें वहां इसको नियम पूर्वक रगड़ने से लोम नाश होता है और बेदाग और चमकदार त्वचा खिल उठती है।

२. यदि किसी पुरुष का हृदय जीतना हो और घर से बाहर जाते समय स्त्री दाएं पांव के नीचे एक कौतुकी दबा कर उस पुरुष से जाकर मिले, तो वह पुरुष जीवन भर के लिए बंध ही जाए।

बंगिना -

बंगिना का प्रयोग अत्यन्त तीव्र होने के कारण इसका रहस्य गुप्त ही कर दिया गया--

१. यदि पड़ोसियों से विवाद हो या अनावश्यक झगड़े-झंझट की स्थिति बनती रहती हो तो एक बंगिना किसी जुम्मेरात को मजार पर जाकर चढ़ा दें।

२. इत्र की शीशी में एक बंगिना २४ घंटे तक पड़ा रहने दें, बाद में वह इत्र जिसके कपड़े पर भी लगा दें वह गुलाम बनकर आगे-पीछे घूमे।

ज्वलित -

कहते हैं यदि व्यक्ति रात में श्मशान जाकर ज्वलित को देखे तो उसे उसमें से लपटें निकलती हुई दिखाई देती हैं--

१. ज्वलित का प्रयोग मुख्य रूप से शत्रुबाधा-निवारण के लिए ही किया जाता है जिससे स्थायी हल मिल सके।

२. ज्वलित को केसर में घिसकर उसका तिलक करने से व्यक्ति का स्वरूप अत्यन्त मोहक दिखाई देने लग जाता है।

अबोला -

जिसके पास अबोला हो उससे सामान्य जन तो क्या राज्य अधिकारी भी वशीभूत होने के लिए बाध्य हो जाते हैं--

१. राज्यबाधा हो या किसी महत्वपूर्ण कार्य में अटकाव, एक अबोला लेकर उसके वजन के बराबर राई के साथ किसी तिराहे पर गाड़ दें और खुद असर देख लें।

२. अबोला का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग तो यह है कि इसको दुकान में रखने से कभी भी **व्यापार बंध-प्रयोग** प्रभावी नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

कहीं आप पर किसी ने तंत्र प्रयोग तो नहीं करवा दिया

दैनिक जीवन में आने वाली हर कठिनाई को सामान्य सा समझ कर मत टाल दीजिए, इन्हीं छोटी - छोटी बाधाओं के पीछे छिपा है रहस्य-द्वेष वश कराए गए किसी तांत्रिक प्रयोग का. . .

जिसका निराकरण सामान्य उपचारों से सम्भव ही नहीं -- विवाह में बाधा, रोग का बना रहना, ऋण से मुक्ति न मिलना इत्यादि- इत्यादि। इन सभी का उपाय है तो केवल **'विशेष तंत्र रक्षा कवच'** . . .

. . . और तंत्र की सैकड़ों-सैकड़ों विधाओं में से कौन सी आपके लिए अनुकूल होगी, उसका निर्धारण कर निर्मित किए जाते हैं ये विशेष तंत्र रक्षा कवच, गुरुदेव की तपस्यात्मक ऊर्जा का स्पर्श पाकर संस्थान के योग्यतम विद्वानों, कर्मकाण्ड के श्रेष्ठतम ज्ञाताओं से सम्पर्क कर. . . लोकहितार्थ,समाज में निरन्तर बढ़ती जा रही तांत्रिक प्रयोगों की प्रबलता के नाश के लिए. . .

तो रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध है

विशेष तंत्र रक्षा कवच
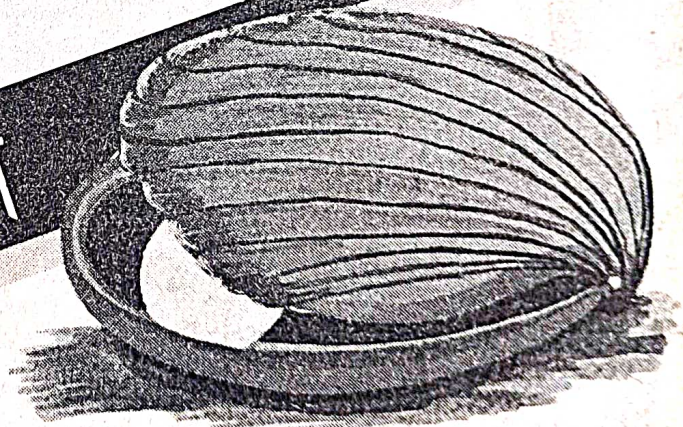
न्यौछावर ११०००/- रुपये

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६,
कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,नई दिल्ली-३४,
फोन:०११-७१८२२४८
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर-३४२००१, फोन-०२९१-३२२०९

धन वर्षा का बेजोड़ तंत्र

कामाख्या तंत्र

विश्व का सर्वाधिक तीव्र तंत्र है -- कामाख्या तंत्र!

शक्ति की आधार भूता कामाख्या देवी से सम्बन्ध रखने के कारण. . . जहां सती का गुह्यांग गिरा।

तान्त्रिकों का तीर्थ स्थल और सिद्ध पीठ

जीवन की प्रत्येक मनोकामना को पूर्ण करने में समर्थ शक्ति पीठ, तीव्र तंत्र. . .

जिसका विशिष्ट धनदायक यह प्रयोग तो अभी तक प्रकट ही नहीं हो सका था!

योगिनी **हृदय** में विस्तार से वर्णन मिलता है कि देवी के अंग प्रत्यंग गिरने से कहां- कहां कौन से शक्तिपीठ स्थापित हुए, उसकी क्या विशेषता है। भगवान शिव की सती के शव को लेकर घूमने की कथा तो सभी को ज्ञात है, लेकिन उसका खण्डन करने पर किस अंग का सम्बन्धित स्थान से क्या महत्व माना इसका रहस्य बहुत कम ही जानते हैं। जहां- जहां नाभि के ऊपर के अंग गिरे वे स्थान वेदोक्त अथवा दक्षिण मार्गी साधना के स्थान बने जबकि नाभि के नीचे के अंग जहां - जहां गिरे वे वाममार्गी साधना के गढ़ बने।

जहां महासती की योनि गिरी वहीं स्थापित हुआ विश्व विख्यात कामाक्षी पीठ अर्थात काम की आंख का पीठ! काम की आंखों से जीवन को समझने का रहस्य! क्योंकि काम ही व्यक्ति के जीवन की गतिशीतला उसकी सरसता का मूल कारण है, जिस प्रकार से पुष्पों के मध्य सुगन्ध न दिखाई पढ़ते हुए भी चारों ओर व्याप्त रहती

है। यदि जीवन से काम को निकाल दिया जाए तो शेष कुछ रह ही नहीं जाता, क्योंकि यही तो सम्पूर्ण जीवन चक्र की गति का कारण है और इसी पर प्रत्येक तंत्र का ढांचा खड़ा है। महाशक्ति ही अपने ज्योति स्वरूप में महायोनि रूपा ही है।

जीवन की मूल शक्ति काम शक्ति पर आधारित होने के कारण ही कामाख्या तंत्र अन्य तंत्र पंथियों की अपेक्षा अपने स्वरूप में पूर्ण स्पष्टता रखता है और जीवन की सभी स्थितियों को लेकर चलने वाला तंत्र है। यह इतना अधिक तीक्ष्ण और प्रभाव शाली तंत्र है कि गोपनीय और अप्रचलित ही रहा।

कामाख्या साधना का अर्थ वामाचारी पद्धतियां या मांस, मदिरा, मैथुन तक ही सीमित नहीं है, कामाख्या साधना भोग - विलास या स्वेच्छाचार की साधना नहीं है। यह जीवन के मूल रहस्य, शक्ति और जन्म का उद्गम समझाते हुए एक विशिष्ट साधना शैली है। यह परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और **''बहवृचोपनिषद''** में उल्लेख मिलता है कि कामाख्या देवी ही सृष्टि की सृजन कर्त्री हैं। उन्होंने ही पराशिव का भी सृजन किया है और आगम ग्रंथों में पराशिव को ही काम कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि कामाख्या देवी जीवन के प्रत्येक स्थिति में व्याप्त हैं ही।

कामाख्या तंत्र तो जीवन को पूर्णता देने का तंत्र है। जिस प्रकार कामाख्या देवी ही जीवन का सृजन करने वाली है और जीवन की प्रत्येक स्थिति में उनका ही वर्चस्व है। उसी प्रकार **कामाख्या तंत्र** भी जीवन की प्रत्येक स्थिति से सम्बन्ध रखता है। कामपीठ से जो भी प्रकट होगा वह पूर्ण ही होगा और इसी से कामाख्या तंत्र में एक - एक स्थिति का वर्णन मिलता है। जीवन की सफलता कई - कई छोटी- छोटी बातों के मिलने से ही पूरी होती है। धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा; स्वास्थ्य, पत्नी सुख, पुत्र सुख, वैभव, शत्रुनाश, राज सुख और ऐसी ही अनेक बातों से मिलकर जीवन को सम्पूर्णता मिलती है। इन सभी के बीच में धन का और ऐश्वर्य का विशेष अर्थ होता है और कम से कम इस युग में तो अवश्य ही। आज के युग में यदि व्यक्ति चाहे कि वह सीमित सी आय में ज़ीवन का सुख पूरी तरह से भोग ले तो यह सम्भव ही नहीं। केवल पद-प्रतिष्ठा और समाज में सम्मान की दृष्टि से ही नहीं आज तो जीवन की जरूरी बातें पूरी करने के लिए भी सामान्य से भी अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है। कामाख्या तंत्र इस बात की उपेक्षा नहीं करता।

कामाक्षी अर्थात् काम की अक्षि! काम की दृष्टि से जीवन को निहारने की कला!

जो कामाख्या तंत्र का आधार है . . .

कामाक्षी काली ही बन जाती है महालक्ष्मी मंत्रों के थोड़े से परिवर्तन से।

कामाख्या तंत्र में जिस प्रकार लक्ष्मीदायक प्रयोग वर्णित हुआ है उसमें मूल पूजन तो कामाक्षी देवी का ही है किन्तु मंत्र के अन्तर से यही कामाक्षी साधना धन-दायक साधना के रूप में, लक्ष्मी -दायक साधना के रूप में लाभकारी सिद्ध होती है। इस साधना में जिस **कामाक्षी काली यंत्र** की आवश्यकता पड़ती है उसका अमृत पीठेश्वरी मंत्रों से सिद्ध होना आवश्यक

होता है। इसी काम पीठ की सौम्य और वरदायक रूप में संज्ञा अमृत पीठेश्वरी है और वास्तव में कामाख्या अमृत पीठेश्वरी बन कर ही धन- दायक सिद्ध होती है। अतः सामान्य कामाख्या पूजन से प्रचुर धन- दायक योग सिद्ध नहीं होता है। इसके लिए तो यह विशेष साधना सम्पन्न करनी ही पड़ती है। कामाख्या काली का स्वरूप तो पूर्ण रूप से तांत्रोक्त ही है।

इस यंत्र को किसी भी बुधवार की रात्रि में १० बजे के बाद लाल वस्त्र पर स्थापित कर दें और इसका पूजन लाल फूलों, बिल्व पत्र, लवंग, रक्त चन्दन, सिन्दूर या काजल से करने के बाद एक विशेष न्यास सम्पन्न करें। जो इस साधना का मूल रहस्य है। इस न्यास में जिसे योनि न्यास के नाम से जाना जाता है, प्रत्येक सम्बन्धित अंग को स्पर्श करते हुए एक **पाटला** छुआएं और अलग पात्र में रखते जाएं। इस न्यास को सम्पन्न कर साधक पूरी तरह से शक्तिमय बन आगे के महत्वपूर्ण कामाक्षी लक्ष्मी मंत्र को अपने शरीर में समाहित कर पाने में समर्थ होता है। यह गोपनीय न्यास इस प्रकार है--

योनि न्यास -

शिरसे दक्षिण भागे - "ॐ योनि वीरायै नमः"। शिरसे वाम भागे " ॐ योनि विश्वायै नमः"। नासाग्रे -- " ॐ योनि प्रतीकायै नमः"। दक्षिण नेत्रे - "ॐ योनि कामायै नमः"। वाम नेत्रे - "ॐ योनि हारायै नमः"। ओष्ट पुटे -"ॐ योनि रूपायै नमः"। दक्षिण कपोल स्थले - "ॐ योनि च्छायै नमः"। वाम कपोल स्थले - "ॐ योनि कामायै नमः"। चिबुके -- "ॐ योनि प्रतीकायै नमः"। दक्षिण बाहु मूले - "ॐ योनि चित्तायै नमः। वाम बाहु मूले - "ॐ योनि नित्यायै नमः। हृदये --"ॐ योनि स्पष्टै नमः"। दक्षिण स्तने -"ॐ योनि आवाह्यायै नमः"। वाम स्तने - "ॐ योनि विद्यायै नमः"। नाभि -- "ॐ योनि स्थापयै नमः"।

काम की पीठ से जो कुछ प्रकट होगा वह पूर्ण होगा ही, सौन्दर्यशाली भी होगा, क्योंकि यह पूर्णता की पीठ ही नहीं सृजन की पीठ भी है. . .

अमृत पीठ भी तो है. . .

और इसी से कामाख्या तंत्र के धनदायक प्रयोग भी अचूक हैं, जीवन को सम्पन्न बनाने वाले हैं।

इस प्रकार योनि न्यास कर तथा स्वयं को कामाक्षी रूपा अनुभव कर **विद्व माला** द्वारा निम्न गोपनीय मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें। मंत्र जप न इससे कम करना है और न इससे अधिक।

मंत्र -

ॐ फट् कामाख्यै पूर्णत्व देहि देहि फट्

मंत्र जप पूर्ण कर पुनः कामाक्षी काली यंत्र का पूजन लाल पुष्पों से ही करें और यंत्र को तथा समस्त **पन्द्रह पाटला** व माला किसी लाल वस्त्र में बांध कर रख दें। यदि भविष्य में कभी गौहाटी स्थित कामाख्या देवी के मंदिर जाने का अवसर मिले तो वहीं भेंट स्वरूप चढ़ा दें अन्यथा घर में सुरक्षित रखा रहने दें, किसी अन्य के द्वारा भी न चढ़वायें।

यह साधना वास्तव में तंत्र की एक सशक्त और प्रभावशाली साधना है जिसके द्वारा साधक को एक के बाद एक धन के स्रोत मिलने आरम्भ हो जाते हैं। यदि वह नौकरी पेशा है तो कोई सहयोगी मार्ग प्रकट हो जाता है या पैतृक धन आदि के द्वारा धन प्राप्ति का नया मार्ग खुलता है। व्यापारी हैं तो व्यापार में लाभ की स्थिति या नये व्यापार को आरम्भ करने की स्थिति बनती है या शेयर मार्केट में एकदम से लाभ मिल जाता है। कहने का तात्पर्य है कि धन प्राप्ति के एकदम से इतने अधिक मार्ग या तो खुल जाते हैं या सूझने लगते हैं कि साधक हतप्रभ रह जाता है और एक प्रकार से धन की उसके ऊपर वर्षा सी होनी लगती है।

इस साधना का प्रभाव व्यक्ति को निरन्तर मिलता रहता है फिर भी वर्ष में एक बार होली अथवा दीपावली के दिन पुनः सम्पन्न कर लेना चाहिए।

शंकराचार्य ने जब लक्ष्मी से नृत्य सम्पन्न कराया

योगी का हठ तो विख्यात है . . . कब किस बात पर ठन जाए कुछ पता ही नहीं . . . और प्रकृति वाध्य हो जाए . . . उस हठ को मूर्त रूप देने में . . . यही पहचान है सिद्ध साधक और अद्वितीय युग पुरुष की।

शंकराचार्य . . . हठी और तेजस्वी व्यक्तित्व, अनेक साधनाओं के सिद्ध हस्त आचार्य . . . और वह हार मान जाएं लक्ष्मी से . . . संभव ही नहीं।

शुभ्र ज्योत्सना बिखरी हुई और गोदावरी के किनारे अपने पच्चीस शिष्यों के साथ विद्यमान पूज्यपाद आद्य शंकराचार्य . . . वातावरण में पिघली चांदी जैसा कुछ बिखरा हुआ और गोदावरी के कल-कल करते जल में उस चंद्रमा का प्रतिबिम्ब पिघली चांदी सा ही लगता हुआ . . . शुभ्र हो गए मन और मंद पवन से उल्लसित सभी शिष्य गण . . . अपने गुरु के पावन देह पुंज से आती हुई अमृत-रश्मियां और ऊपर नभ से बरसता हुआ साक्षात् अमृत . . . अनूठे क्षण गुरु और शिष्य के मध्य के, और आज यह तो एक विलक्षण घटना बनने जा रही है। कल होली का पर्व, और होली के रंगों को बांध कर उतार लेने का हठ ठान लिया था आद्य शंकराचार्य के दर्प से भरे हुए मन ने . . .

कपोलों पर उत्तेजना और स्वाभिमान से छलक आई खून की लालिमा, जैसे कल की जगह आज ही मन में गुलाल भर दिए हों सभी शिष्यों के चेहरे पर प्रकृति ने, इस निःस्तब्ध रात्रि में सामान्य जन तो सो गए होंगे होलिका-दहन कर, लेकिन सिद्धों, तांत्रिकों और साधकों को आज की रात नींद कहां . . . पूरे वर्ष भर इसी दिन को तो देखते रहते हैं टकटकी बांधकर, अपनी कोई चिर वांछित साधना को पूर्ण करने के लिए और यही

अवसर आ गया था आद्य शंकराचार्य के समक्ष।

"योगी होगा कोई, भटक रहा होगा अपने शिष्यों के साथ भिक्षा की तलाश में! शिष्य तो एकत्र कर लिए लेकिन उनके पालन पोषण का प्रबंध कैसे करते होंगे . . ." अपनी विजय-यात्रा में, भारत के इस छोर से उस छोर तक समस्त भूमि को नाप लेने और बांध लेने की इस अनोखी यात्रा में **किसी विरोधी ब्राह्मण द्वारा की गई यह टिप्पणी तिलमिलाकर रख गई थी आद्य शंकराचार्य को . . . कितने ही बुज़दिल और कमज़ोर शिष्य इस टिप्पणी को सुनकर धीरे-धीरे सरक गए और शेष रह गए ये बीस-पच्चीस शिष्य . . . जन्म-जन्मान्तरों की यात्रा के साक्षीभूत, लेकिन योगी-हठ तो योगी का ही हठ होता है।** उस अवसर पर की गई टिप्पणी का कोई उत्तर न देकर आज होली की रात्रि में वे स्पष्ट कर देना चाहते थे, अपने इन श्रेष्ठ निष्ठावान शिष्यों के समक्ष, कि वास्तव में जब योगी हठ ठान ले, तो क्या कुछ नहीं घटित कर सकता . . . केवल विश्वामित्र ही नहीं, कोई भी समर्थ और सक्षम साधक भी किस प्रकार से बाध्य कर सकता है लक्ष्मी को, कि वह उसके समक्ष उपस्थित हो, क्योंकि तीन रूपों में साधना बताई गई है लक्ष्मी की . . . मां रूप में, पत्नी रूप में, एवं प्रिया रूप में और यहां किसी भी पद का अर्थ लौकिक या वासनात्मक नहीं है। पत्नी या प्रिया तो एक भाव है जो साधक के जीवन में इस प्रकार आए, सभी प्रकार से उसका हित-चिंतन करे और उसे प्रचुर धन व ऐश्वर्य की आपूर्ति करे . . **योगी कोई दरिद्र या दीन-हीन व्यक्ति होता ही नहीं, जो ऐश्वर्य एवं अष्टादश सिद्धियों से युक्त हो, वही तो योगी पद का अधिकारी**

(शेष पृष्ठ ७७ पर)

अघोरियों के चैतन्य मंत्र जिनको मैंने उनके साथ रहकर सीखा

मैंने अघोरियों के साथ कुछ दिन रहकर उनसे जिज्ञासावश, अपनी सांसारिक मोह-माया वश कुछ विशेष साधनाओं और मंत्रों की जानकारी प्राप्त की, उनके द्वारा जो विशेष मंत्र मुझे प्राप्त हुए, उन्हें मैं नीचे ज्यों का त्यों लिख रहा हूं।

१. बाधा निवारण कार्य सिद्धि मंत्र --

यदि कार्य में बार-बार बाधा आ रही हो, शत्रु द्वारा पीड़ा पहुंचाई जा रही हो, अथवा पद की हानि हुई हो तो **अघोर चामुण्डा सिद्धि यंत्र** अपने सामने रखकर उसके आगे कागज पर शत्रु का नाम अथवा जिस बाधा का निवारण करना हो उस बाधा को लिखकर एक मास तक मंत्र-जप करने से शत्रु परास्त होता है, और बाधा पूर्ण रूप से शांत हो जाती है।

मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल ऐं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे ज्वलं हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

२. अघोर इच्छा सिद्धि मंत्र --

जब कोई विशेष इच्छा हो और उस इच्छापूर्ति के बिना सब कुछ अधूरा लग रहा हो तो यह अनुष्ठान करना चाहिए। वास्तव में इच्छा पूर्ति एक प्रकार से वशीकरण की ही साधना है, जिसमें **यक्ष-सिद्धि** होती है, और यक्ष अनुकूल होकर इच्छित वस्तु प्रदान करता है। वर्तमान जीवन में ये इच्छा-पूर्ति किसी भी माध्यम से हो सकती है, साधक **''शून्य सिद्धि यक्ष यंत्र''** धारण कर किसी भी अर्द्धरात्रि को इस मंत्र की ५ माला जप करे तो एक माह में उसकी इच्छा पूर्ति होती है।

मंत्र

ॐ खीं हस्फ्रों शून्य स्थिरं यक्षाय वशमनाय हुं हुं हस्फ्रों खीं हुं फट्।

३. भूत-प्रेत पीड़ा-शांति का अघोर मृत्युंजय मंत्र --

किसी भी प्रकार की जरा, पीड़ा, व्याधि हो तो रोगी को **''अघोर पीड़ा-नाशक यंत्र''** को जल में डुबा कर, हाथ में संकल्प लेकर ११ बार मंत्र जप करें, और यह क्रिया सूर्योदय के समय तथा सूर्यास्त के समय ११ दिन तक निरन्तर करें तो भूत-प्रेत व्याधि भाग जाता है, और रोगी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता हैं।

मंत्र

ॐ नमो भगवती वज्रश्रृंखले हनतु भक्षतु खादतु अहो रक्तं पिव-पिव नर वक्षास्थिरक्तपटे भस्मागिंभस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रप्राकारानिचिते पूर्वा दिशिं मुंचतु दक्षिणां दिशिं मुंचतु पश्चिमां दिशं मुंचतु उत्तरांदिशं मुंचतु नागार्थ धनग्रहपतिं बंधतु नागपीठं बंधतु यक्षराक्षसपिशाचन् बन्धतु प्रेत भूतगंधवदियो ये केचिद् उपद्रवास्तेभ्यो रक्षतु उर्ध्व रक्षतु अधो रक्षतु श्येकां मुंजतु ज्वल महाबले एह्येहिं तु मोटि मोटि सटावलि वज्राग्नि वज्रप्राकारे ऐं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् हं हं फुं फें फः सर्व ग्रहेभ्यः सर्व व्याधिभ्यः सर्वदुष्टोप्रपद्रवेभ्यः ह्रीं अशेषभ्यो मा रक्षतु।।

ऊपर दिए गए तीनों मंत्र पूर्ण रूप से आजमाये गए मंत्र है।, अघोर विद्या के जानकार सन्यासियों के पास जीवन की हर समस्या के साधनात्मक जानकारी होती है, इसलिए तो ये अपना जीवन निश्चिंत होकर अर्द्धनारीश्वर शिव (जिसमें शिव और शक्ति का सम्मिलित रूप है) के ध्यान में मग्न होकर मस्त रहते हैं, क्योंकि उन्होंने उस आनंद की अनुभूति कर ली होती है, जिसकी सामान्य व्यक्ति कल्पना ही नहीं कर सकता। उपरोक्त मंत्रों का गृहस्थ व्यक्ति भी पूर्णता के साथ प्रयोग कर सकता है।

जीवन में आठ प्रकार से सहायक है

■ ■

व्यक्ति कितनी ही साधनाएं क्यों न कर ले . . . सिद्धियां और सफलताएं भी प्राप्त कर ले, किंतु जगदम्बा-साधना की आवश्यकता उसे पग-पग पर फिर भी पड़ती ही है। जब तंत्र-माह हो, प्रकृति के बीच कोई अलग चैतन्यता हो, मन में नया कुछ घटित करने की, उसे प्राप्त करने की इच्छा बलवती हो रही हो तो जगदम्बा के ही सर्वाधिक सशक्त स्वरूप ललिता साधना से श्रेष्ठ कौन - सी अन्य साधना हो सकती है . . .
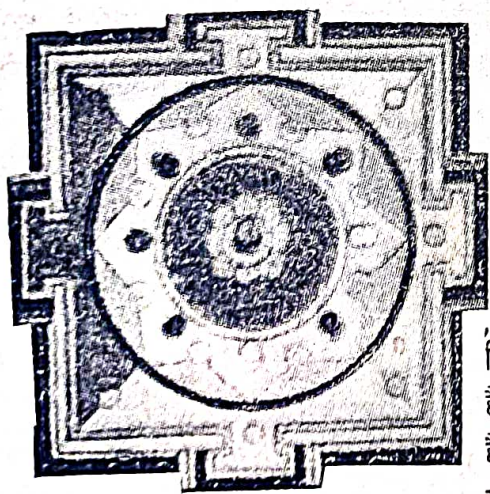
यदि व्यक्ति एक क्षण के लिए अपना अहं भाव, अपना कर्ता भाव छोड़कर देखे तो पाएगा कि यह प्रकृति स्वयं उसका पोषण कर रही है, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है। अन्न, जल, वायु, प्रकाश-प्रत्येक कुछ उसी की कृपा से ही तो वितरित हो रहा है, बिना किसी भेद- भाव या बाधा के। बाधा तो हम ही बना लेते हैं, स्वयं को स्थापित करने के प्रयास में।

यही जगदम्बा का विराट स्वरूप है, वे ही अलग-अलग रूपों से अलग-अलग माध्यमों से हमारे जीवन का कल्याण करने वाली हमें प्रतिक्षण रंजित करने वाली व इससे भी अधिक यह कि वे ही प्रतिक्षण हमारे सुख-दुख से कातर होने वाली भी है।

मां कोई भी कार्य क्यों न कर रही हो, किसी भी प्रकार से व्यस्त क्यों न हो उसका सम्पूर्ण ध्यान केवल अपने बच्चे में ही लगा रहता है। हाथ कार्य में व्यस्त रहते हैं और आंखें उचक-उचक कर प्रतिक्षण

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।।
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी तथा।।
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी।
कुमारी चैव कन्या च कौमारी युवती यतिः।।
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी।।
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी।।

अपने शिशु को निहारने में! बच्चे की कोई भी भाषा नहीं होती फिर भी मां उससे बात कर ही लेती है, और भाषा का ज्ञान भी तो उसे मातृ-मुख से ही होता है। इसी से 'मातृभाषा' की संज्ञा प्रचलित हुई। अपने मधुर, स्नेह सिक्त चुम्बनों के माध्यम से मानों वही वाक्-शक्ति, प्राण, चैतन्यता सब कुछ अपने शिशु में प्रवाहित करती रहती है, वह केवल अपने हृदय का रक्त-अपना दुग्धपान कराकर ही उसका पोषण नहीं करती, और **इसी से प्रत्येक जीव में अपने मातृत्व के प्रति विशेष आग्रह, प्रेम, ललक और सम्मान होता ही है।**

साधक भी यथार्थतः एक शिशु ही होता है। कोई इस शिशुत्व को सहज स्वीकार कर लेता है और किसी को आगे चलकर स्वीकार करना पड़ता है। जिसे हम अपनी साधना का बल कहते हैं वह वास्तव में क्या उसी मातृस्वरूपा भगवती जगदम्बा द्वारा दी गई भाषा-ज्ञान के समान ही नहीं है? समस्त ज्ञान-विज्ञान, साधना और तप उसी दिव्य पुंज से ही निकलकर तो सूर्य के प्रकाश की तरह प्रत्येक व्यक्ति तक आ रहा है। जीवन की और इस युग की आपाधापी के मध्य यह बात हम जितनी जल्दी स्वीकार कर लें, उतना ही हितकर होगा, न केवल आध्यात्मिक रूप से वरन् भौतिक रूप से भी।

यह युग कलियुग की संज्ञा से जाना जाता है, और जो प्रवृत्तियां, जैसी मानसिकता के बीच जीवन जिया जा रहा है उससे कोई भी अपरिचित नहीं। हम आपको कलियुग की दूषितता और सदाचार या नैतिकता की दुहाई देने अथवा नाम जपने की शिक्षा देने की अहंमन्यता करने के इच्छुक नहीं, क्योंकि ऐसा कहने से आपकी समस्याएं हल नहीं होने वालीं। यह अवश्य हो सकता है कुछ क्षणों के लिए एक मीठी गुदगुदी भरा स्वप्निल जगत सामने तैर जाए और फिर वही नित्य की आपाधापी।

सही अर्थों में यह तंत्र का एक माह ही नहीं सम्पूर्ण रूप से तंत्र का युग है। कलियुग पर अर्थात् 'कलि' पर नियंत्रण करने का रहस्य भक्ति, आराधना या निरंतर तोते की तरह दोहराए जा रहे धार्मिक प्रवचनों में नहीं अपितु साधनाओं में छुपा है, और वह भी तांत्रोक्त साधनाओं में। साक्षात् मां भगवती जगदम्बा द्वारा उद्भूत ज्ञान की सत्यता में। **'कलि' पर केवल 'काली' ही विजय प्राप्त करने में सक्षम है और काली का तात्पर्य ही है तांत्रोक्त साधना।** मां भगवती जगदम्बा के मूल स्वरूप महाकाली की साधना के विधान तो अथ से इति तक केवल तांत्रोक्त ही हैं, कोई भी साधना ग्रंथ उठाकर देखा जा सकता है। इन्हीं महाकाली की सर्व सौभाग्यदायक साधना प्राचीनकाल से ही **ललिताम्बा साधना** के नाम से विख्यात रही। ललिताम्बा कोई पृथक महादेवी नहीं वास्तव में महाकाली का ही एक विशेषण है, महाकाली के तेजस्वी व सौन्दर्यमय स्वरूप का ही नाम ललिता है--

ललितं श्रृंगार भावजन्या क्रिया विशेषः तद्वती ललिता

ललिता ही सम्पूर्ण तंत्र-शास्त्र की मूल देवी एवं आराध्या मानी गई हैं, और यह विद्या इतनी अधिक तीव्र, गोपनीय और दुर्लभ मानी गई है कि इसको गुरु पुत्र तक को भी बताना निषेध कर दिया गया। इसी से यह विद्या या साधना लुप्त एवं अप्रचलित हो गई। ललिता देवी के नाम से शक्तिपीठ अवश्य विद्यमान है लेकिन ललिता-साधना सर्व साधारण के बीच में रहस्यमय ही बनी रही। इसका कारण मात्र इतना ही था कि इसकी जो साधना विधि उपलब्ध थी वह इतनी अधिक तीव्र थी कि सामान्य साधक उसकी तेजस्विता सहन ही नहीं कर सकता था। **प्राचीन काल में जब शिष्य, गुरु के सामीप्य में रहते थे तब सेवा के मध्य गुरु धीमे-धीमे शक्तिपात करते हुए उसे इस योग्य बना देते थे कि वह कालान्तर में ललिता के मूल रहस्य एवं साधना को आत्मसात कर सके।**

इस दिशा में सिद्धाश्रम स्थित **योगीराज गुणातीतानन्द जी** का आभार मानना चाहिए, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को केवल ललिता साधना में ही संलग्न कर एक ऐसी पद्धति खोज निकाली जो एक गृहस्थ द्वारा भी उतनी ही सहजता से अपनाई जा सकती है जिस प्रकार से किसी संन्यासी साधक द्वारा और बिना दुष्प्रभाव या तीव्रता के जीवन के सभी मनोवांछित कार्य महाकाली की ललिता स्वरूप में समाहित तीक्ष्ण शक्ति से सम्पन्न किए जा सकते हैं।

स्वामी गुणातीतानन्द जी ने अपनी साधना में यह अनुभव किया कि यदि एक विशेष प्रकार का यंत्र रचित कर उसमें ललिता की शक्तियों को विभाजित कर उनकी पृथक-पृथक स्थापना की जाए और फिर सम्बन्धित विशेष ललिता मंत्र का जप किया जाए

जो समस्त जगत से भी अधिक ललित हैं, मोहक और सौन्दर्यवती हैं वही तो ललिता हैं।

मां भगवती जगदम्बा ऐसी ही हैं. . .

सम्पूर्ण तंत्र शास्त्र की मूल आराध्या देवी ललिता ही जगदम्बा साधना का रहस्य हैं . . .

तो सामान्य साधक को भी कोई दुष्प्रभाव नहीं देखना पड़ता और शक्ति इस प्रकार विभाजित होकर धीरे - धीरे साधक के शरीर में समाहित होती हुई उसे प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण कर देती है।

योगीराज गुणातीतानन्द जी ने इस विशिष्ट यंत्र की संज्ञा **रत्नोल्लसत् महायंत्र** की दी तथा ललिता की आठ पीठ शक्तियों प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदनी, सुप्रभा, एवं विजया का अंकन बीज रूप से तांत्रोक्त पद्धति द्वारा किया, जिससे यह यंत्र पूर्ण फलप्रद बन जाए।

इन आठ पीठ शक्तियों में रक्षात्मक, धनदायक, रोगनिवारक, शत्रु निवारक जैसी शक्तियां आठ रूपों में विभाजित हैं। इस यंत्र की स्थापना मात्र ही अपने- आप में दुर्गति का विनाश करने वाली कही गई है।

इस साधना के लिए किसी भी दिवस का कोई बन्धन नहीं है, और न ऐसा ही कोई विशेष नियम है कि साधक दिन अथवा रात्रि में साधना सम्पन्न करे।

जिस प्रकार से एक बालक कष्ट में होने पर कभी भी अपनी मां को पुकार सकता है, यह साधना भी ठीक ऐसी ही पुकार है। वस्त्र या तो पीले हों अथवा लाल। पीले वस्त्र पहिन कर साधक पूर्वाभिमुख होकर बैठे और विशेष प्रभाव के लिए लाल वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे।

इस साधना में इस विशिष्ट महायंत्र का पूजन देवी की प्रत्येक शक्ति का ध्यान करते हुए और उसे अपने अंदर समाहित करने की प्रबल भावना रखते हुए **गन्धाष्टक** की आठ बिन्दियों द्वारा ही करनी है, अन्य कोई विधान आवश्यक नहीं है क्योंकि शेष यह यंत्र ही अपने- आप में पूर्ण चैतन्य और फलप्रद है। साधक को चाहिए कि वह **श्री सुंदरी माला** के द्वारा मूल मंत्र की एक माला मंत्र- जप करे। वह मंत्र जो कि केवल इस विशेष महायंत्र से ही सम्बन्धित है इस प्रकार है--

मंत्र -

ॐ श्रीं ललितायै ह्रीं ऐं फट्

यद्यपि मूल प्रयोग तो एक दिन का ही है फिर भी साधक को चाहिए आगे भी नित्य कम से कम पांच बारमंत्र-जप उच्चारण करता रहे, जिससे ललिताम्बा देवी की समस्त शक्तियां उसे निरंतर प्राप्त होती रहें। अन्यथा प्रतिदिन इस यंत्र का दर्शन एवं सम्बन्धित पूजन तो करें ही। किसी विशेष कार्य पर जाते समय इस यंत्र को पीले कपड़े में लपेट कर अपने साथ रखा जा सकता है, इससे आकस्मिक विपत्तियों आदि से साधक भय रहित हो सकता है। ✵

भविष्य संकेत आप प्राप्त कर सकते हैं

जीवन के दूसरे छोर "भविष्य" को पकड़ने की क्रिया . . . आगे बढ़कर आगामी जीवन को समझ लेने का रहस्य . . . एक प्रामाणिक विवरण व विधि, सर्वथा मौलिक चिंतन . . .

जीवन के दो छोर होते हैं भूत और भविष्य। जीवन इन्हीं दोनों के समन्वय से ही गठित होता है। वर्तमान तो एक परिवर्तन का क्षण है जो इसकी संधि पर एक क्षण के लिए आता है और विलीन हो जाता है। वास्तव में वर्तमान को संवारने की कोई विद्या ही नहीं क्योंकि "वर्तमान" तो संक्रमण का एक पल मात्र है और इसी से भारतीय साधना में भूत-भविष्य की साधनाओं को ही प्रमुखता दी गई। भूत-भविष्य जानने की अनेक विधियां प्राप्त की गई। जहां भूतकाल में झांककर व्यक्ति अपनी क्रमबद्धता को समझने का प्रयास करता है वहीं भविष्य के क्षणों को पकड़कर अपना जीवन संवारने का 'पुरुषार्थ' करता है। **'पुरुषार्थ' कमर तोड़ मेहनत करने तक की ही संज्ञा नहीं है। जीवन को संपूर्ण रूप से समझ लेना भी "पुरुषार्थ" की ही एक क्रिया है, 'पुरुषार्थ' का ही एक अंग है।**

इस जीवन को आंख मूंद कर नहीं जिया जा सकता क्योंकि जीवन में यदि आंख मूंद कर चलते रहे तो निरन्तर इधर से उधर सिर टकराते-टकराते, लहूलुहान होते- होते जीवन का समापन आ जाएगा और आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त करना तो दूर, सामान्य भौतिक सुखों की भी प्राप्ति संभव नहीं हो पाएगी।

साधनात्मक दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से जीवन का अंत वह नहीं है जिसे सामान्यतः मृत्यु के अर्थ में परिभाषित किया जाता है वरन् यथार्थतः जीवन का अंत तो वह है जब यह शरीर अशक्त हो जाए, मन में उत्साह और आशा का कोई स्थान न रह जाए और बस शरीर घसीटने की क्रिया शेष रह जाए। जीवन में ऐसी स्थिति आने से पूर्व साधनात्मक उपायों द्वारा इसे संभाल लेना ही बुद्धिमता है।

भूतकाल में झांकने की अपेक्षा व्यक्ति के लिए अधिक उचित यही है कि वह अपने भविष्य के क्षणों को पकड़े। उसे वह विधि आती हो जिससे वह अपने भविष्य को अपने हाथ में ले सके और अपने जीवन को सुख-पूर्वक, उत्साह और आनंद से व्यतीत कर सके और यह क्रिया संभव हो सकती है तो केवल एक ही विधि से कि आपको भविष्य के संकेत प्राप्त करने की प्रामाणिक विधि ज्ञात हो।

यदि व्यक्ति के पास ऐसी श्रेष्ठ साधना नहीं है, ऐसा श्रेष्ठ बल नहीं है तो उस व्यक्ति एवं जमीन पर पड़े पत्थर में कोई अंतर ही नहीं, जो ठोकरों के माध्यम से इधर से उधर लुढ़कता रहता है। यदि मैं कहूं कि व्यक्ति वास्तव में बाधाएं स्वयं आमंत्रित करता है, उनका निर्माण स्वयं करता है

और फिर उसमें उलझ कर भटकता रहता है, तो यह एक कटु सत्य होगा, किंतु वास्तविकता तो यही है। यदि व्यक्ति श्रेष्ठ साधना का बल प्राप्त कर अपने जीवन के छोरों को समझने की क्रिया नहीं करता, उसे सुधारने का प्रयास नहीं करता तो उसमें व एक मूढ़ व्यक्ति में अंतर ही क्या? दुर्भाग्य से आज यही स्थिति है जिसकी रही-सही कसर भक्ति की क्रिया से पूरी हो जाती है कि "ईश्वर जो कर रहा है वह ठीक ही है!" यह वास्तव में पलयानवादी मानसिकता का ही एक प्रच्छन्न रूप ही तो है।

प्रकृति की ओर से व्यक्ति को प्रतिक्षण संकेत मिलते ही रहते हैं, प्रकृति प्रतिक्षण उसकी सहायक बनकर उसे जाग्रत व चेतन करने का प्रयास करती ही है किंतु या तो व्यक्ति के अंदर उन संकेतों को समझने की चेतना नहीं होती या फिर वह उनकी उपेक्षा कर जाता है और बाद में पछतावे के सिवा कुछ शेष नहीं रहता।

कई ऐसी लोकमान्यताएं हैं जिन्हें अंधविश्वास कहकर ठुकरा दिया जाता है। वास्तव में उनका आधार प्रकृति द्वारा प्रकट होने वाले सूक्ष्म संकेत ही हैं, उदाहरण के लिए बिल्ली द्वारा रास्ता काट देने की घटना। यह मात्र अंधविश्वास नहीं वरन् इसके पीछे पूर्ण प्रामाणिक आधार है। यह तो अब शोध से भी, वैज्ञानिक परीक्षणों से भी स्थापित हो चुका है कि कुत्ते एवं बिल्ली पराश्रव्य तरंगों को ग्रहण करने की सामर्थ्य रखते हैं और **परालौकिक जगत में घटित होने वाली प्रत्येक घटना पराश्रव्य तरंगों के माध्यम से ही ज्ञात हो सकती है।** यह मूक पशु उनको स्पष्ट नहीं कर सकते किंतु उससे विचलित होकर इधर से उधर भागने लगते हैं।

केवल पशु-पक्षी और प्रकृति के माध्यम ही नहीं वरन् अन्य ग्रहों के भी संकेत पृथ्वी तल को प्राप्त होते रहते हैं। यह बात और है कि अभी पृथ्वी का व्यक्ति और वैज्ञानिक उन संकेतों को समझने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं, किंतु **इस बात को विश्व के सभी वैज्ञानिक स्वीकार करते है कि अन्य ग्रहों से भी पृथ्वी ग्रह से संपर्क साधने की कोशिशें की जा रही हैं।** उनकी सभ्यता और विज्ञान संभवतः पृथ्वी ग्रह से अधिक श्रेष्ठ हैं और वे संकेतों के माध्यम से अनेक उपायों द्वारा पृथ्वी ग्रह को विभिन्न विपदाओं और प्राकृतिक विनाश-लीलाओं से बचाने की चेष्टा करते ही रहते हैं।

भविष्य के गर्भ में झांकना कौतूहल से भी अधिक अपने आप में संपूर्ण ज्ञान और विज्ञान है। जिसकी उपेक्षा भारतीय मनीषियों ने कदापि नहीं की और यही कारण था कि उनका जीवन सुखी संतुष्ट व परिपूर्ण रहा। किसी भी प्राचीन ग्रंथ का अध्ययन करके देखें यही स्पष्ट होता है कि वे अपना पूरा का पूरा जीवन भगवत् चिंतन और ब्रह्म-विषयक चिंतन में ही व्यतीत करते थे और ऐसा तभी संभव था जब वे अपने इस भौतिक जीवन के प्रति सुनिश्चित थे। न वे वनवासी थे, न वे कोपीन धारी। संयुक्त परिवार और सुसंगठित समाज में रहने वाले आर्य मनीषी केवल अपने भविष्य को समझते हुए अपने जीवन को प्रत्येक रूप से सुखी व संतोष जनक बनाते हुए आगे बढ़कर उन चिंतनों में संलग्न हो सके, जिनका आधार आज तक हमारे जीवन में तो है ही, तथाकथित विज्ञान भी ज्ञान के उन्हीं चिंतनों को अपना आधार बना रहा है।

पूर्वकाल में जहां भविष्य

भविष्य संकेत के लिए पंचांगुली साधना

जो साधक भविष्य कथन के क्षेत्र में रुचि रखते हैं, ज्योतिष, शेयर मार्केट, व्यापार में उतार- चढ़ाव से सम्बन्ध रखते हैं उनके लिए यह नाम अपरिचित नहीं, और प्रत्येक ज्योतिषी की जीवन में यही कामना रहती है, कि वह किसी न किसी प्रकार से पंचांगुली साधना सिद्ध कर लें। पंचांगुली के सिद्ध साधक को ज्योतिष के शास्त्र या ग्रंथ पलटने की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि पंचांगुली देवी उसे भविष्य में घटने वाली किसी भी घटना की प्रामाणिक जानकारी देती ही रहती है।

पंचांगुली की साधना गोपनीय होने के साथ - साथ अत्यन्त जटिल मानी गई है और पूर्व काल में भी बहुत कम ज्योतिषी ही पूर्णता से पंचांगुली सिद्ध करने में सफल हो पाते थे। इस साधना में सबसे अधिक महत्व **पंचांगुली देवी के यंत्र** का है जिसकी विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा ही अपने- आप में एक शास्त्र है किन्तु साधक को यदि विधिवत् प्राणप्रतिष्ठित किया हुआ, प्रथमावरण से लेकर नवमावरण तक की साधना, भूतोपसहांर इत्यादि से चैतन्य यंत्र एवं **पंचांगुली देवी का प्रामाणिक चित्र** प्राप्त हो जाए तो इसके समक्ष मात्र पंचागुली देवी का ध्यान करते हुए पंचांगुली मंत्र का २१ बार जपना सफलतादायक कहा गया है।

मंत्र-

"ॐ नमो पंचांगुली परशरी माता मंयगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौंसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपामध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये गणिमध्ये गारुणीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्तो चिन्तावे तस माथे माता पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।।

पाठकों के सुविधा के लिए **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** ने कठिनाई से चैतन्य किए गए यंत्र (प्रयोग विधि सहित) उपलब्ध कराने की व्यवस्था की है।

संकेत प्राप्त करने की विधि व्यक्ति की विकसित चेतना और प्रज्ञा होती थी वहीं कालान्तर में केवल प्रयोग के रूप में ऐसे उपाय ढूंढे गये जिनके द्वारा भविष्य को जानने की क्रियाएं सुलभ व सहज हो गईं।

व्यक्ति का मानसिक स्तर कुछ भी हो परंतु यह प्रयत्न किया गया कि वह भी भविष्य के ज्ञान का लाभ प्राप्त कर सके। यह एक कठिन कार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति तपस्या कर अपनी प्रज्ञा विकसित कर उस स्तर तक पहुंचे, जहां भूत, भविष्य, वर्तमान एक साथ देख सके और तब विशेष प्रयोग, तांत्रोक्त साधना महत्वपूर्ण हो जाती है।

छाया पुरुष साधना एक ऐसी ही साधना है। छाया पुरुष साधना में सिद्धि प्राप्त कर व्यक्ति जब निश्चित रूप से ऐसी क्षमता प्राप्त कर लेता है कि उसे न केवल अपने भविष्य का वरन् किसी के भी भविष्य का ज्ञान प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो जाता है। केवल ज्ञात ही नहीं होता साथ ही साथ उसकी आंखों के सामने भविष्य का चित्र भी खिंच जाता है और ऐसी श्रेष्ठ साधना केवल होली की रात्रि पर ही की जा सकती है।

होली का पर्व तो तांत्रोक्त साधनाओं के लिए सिद्ध पर्व है और कुछ ऐसी साधनाएं हैं जो केवल होली की रात्रि में ही सम्पन्न की जा सकती हैं।

साधना विधि -

यह साधना कर्ण पिशाचिनी साधना के समान ही है किंतु कर्ण पिशाचिनी साधना जहां तामसिक साधना है वहीं यह राजसी साधना है, होली की रात्रि को साधक लगभग दस बजे स्नान कर काली धोती पहिन, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठे और अपने सामने काले तिलों की ढेरी पर **छाया पुरुष यंत्र** को स्थापित कर दे, फिर सिंदूर का तिलक करे और दीपक जलाने के बाद उसका तेल अपने तलवों में लगा कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र की ३ माला मंत्र जप करे।

मंत्र-

ॐ ग्लौं ह्रौं भविष्य छायापुरुषाय सिद्धये कथय दर्शय ह्रौं ग्लौं फट्

दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही साधक उस यंत्र और माला को लाल वस्त्र में बांधकर जहां तीन रास्ते मिलते हों, वहां रख दे और बिना पीछे देखे घर वापिस आ जाए, रास्ते में यदि ऐसा लगे कि कोई उसे आवाज दे रहा है तब भी पीछे मुड़ कर न देखे, घर आकर स्नान करने के उपरान्त संक्षिप्त गुरु पूजन कर, पांच माला गुरु मंत्र का जप कर इस साधना को पूर्णता दें।

भविष्य में जब कभी भी किसी का भविष्य जानना हो तब उपरोक्त मंत्र का ११ बार मन ही मन उच्चारण करें और तब ही उसके सम्पूर्ण भविष्य का चित्र आंखों के सामने उपस्थित हो जाता है।

आज के युग में और होली का सिद्ध मुहूर्त सामने होने के कारण यह साधना वास्तव में बहुत अधिक उपयोगी बन गई है।

केवल एक रात्रि के प्रयोग से यदि अपने सम्पूर्ण जीवन को व्यवस्थित कर लेने के लिए, भावी अनिष्ट को पहले से जानकर बचने का मार्ग मिल रहा हो, तो उसमें कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

कर्ण पिशाचिनी

कल्पना कीजिए कि आप किसी महत्वपूर्ण व्यापारिक समझौते को करने जा रहे हैं किन्तु दूसरे व्यापारी का पूरा ज्ञान नहीं है, या कहीं पर विवाह की बात तय हो गई है लेकिन लड़की या लड़के का चरित्र सही - सही पता नहीं लग रहा है, या किसी व्यक्ति को आप बहुत इमानदार समझ कर अपने संस्थान में किसी महत्वपूर्ण पद पर रखने की सोच रहें हैं, लेकिन उसके मन में मौका मिलते ही कोई गड़बड़ी कर देने की योजना है-- दैनिक जीवन में तो सैकड़ों तरह के व्यक्तियों से मिलना जुलना पड़ता है लेकिन पग - पग पर घात मिलने की सम्भावना बनी ही रहती है। व्यक्ति क्या करे कि वह निश्चिंत होकर जीवन जी सके?

प्रत्येक स्थिति में यह आवश्यक नहीं होता कि व्यक्ति को भविष्य की जानकारी की आवश्यकता हो कहीं - कहीं ऐसी स्थिति भी बन जाती है जहां किसी के भूतकाल को जानना आवश्यक हो जाता है और तब ही हम कोई सही निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं। पंचांगुली साधना के द्वारा जहां भविष्य जानने की एक अपूर्व साधना सम्पन्न की जा सकती है वहीं किसी व्यक्ति का भूतकाल अथवा उसके मन में क्या चल रहा है, यह जानने की सर्वश्रेष्ठ साधना **कर्ण पिशाचिनी** मानी गई है। पिशाचिनी शब्द से अत्यधिक भ्रम होता है लेकिन जहां इस साधना के तामसिक रूप हैं वहीं सौम्य रूप भी है। साधकों का ऐसा अनुभव रहा है कि सौम्य रूप में साधना करने पर कर्ण पिशाचिनी किसी विकृत स्वरूप में न प्रकट होकर अत्यन्त सौम्य और उत्तेजक सौन्दर्य की स्वामिनी बनकर प्रकट होती है तथा साधक के द्वारा मन ही मन प्रश्न पूछने पर उसे सही उत्तर दे देती है तथा उसे कोई अन्य नहीं देख पाता।

किसी भी रविवार को रात्रि में साधना कक्ष को मिट्टी और गोबर से लीपकर उस पर कुश का आसन बिछा लें और सामने लाल वस्त्र पर **कर्ण पिशाचिनी यंत्र** स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजा करें तथा **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ हंसो हंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनी चंडवेगिनि स्वाहा

आपके जीवन का अनुपम सौभाग्य एवं गौरव है

गौरवशाली मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान मासिक पत्रिका की

आजीवन सदस्यता

आजीवन सदस्यता . . . केवल पत्रिका का आजीवन ग्राहक बनने की ही क्रिया नहीं, यह तो ऋषियों, सन्यासियों एवं विश्व के श्रेष्ठतम योगियों द्वारा अनुप्राणित **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** की भी सदस्यता है . . . उसके आधार एवं सम्पर्क सूत्र पूज्यपाद गुरुदेव के होठों पर अपना नाम अंकित कराने की बात है . . . जो जीवन की सम्पूर्णता और सौभाग्य है . . .

अब तो पूज्य गुरुदेव ने निश्चित कर लिया है, अपने प्रत्येक ऐसे सजग पाठक को सर्वथा निःशुल्क रूप से **महालक्ष्मी दीक्षा** देना भी . . . जिससे चैतन्य हो सके संवर सके पाठक एवं शिष्यों का सांसारिक पक्ष . . .

अन्य भी तो कई उपहार . . . सर्वथा निःशुल्क -- पारद शिवलिंग, गुरुचित्र, सूर्य कांत उपरत्न, प्रथम शिविर में शिविर सिद्धि पैकेट, गुरु यंत्र . . . और भी बहुत कुछ . . . केवल **६६६६/-,** यदि एक मुश्त न संभव हो तो तीन किश्तों में जमा करने की सुविधा भी . . .

नोट : बिना उपरोक्त उपहारों के केवल २४००/- द्वारा भी आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ११००३४,
फोन - ७१८२२४८
फेक्स- ०११-७१८६७००

अथवा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१,
फोन - ०२९१-३२२०६

राजयोग

जीवन में रजगुण की साधना. . . लघु से महान बनने की क्रिया, सामान्य कद - काठी और सामान्य जीवन जीते हुए भी ऊँचाईयों को छू लेने की क्रिया. . .

सम्पन्नता और साथ ही साथ जीवन में उतनी ही तेजस्विता भी -- यह तो राजयोग दीक्षा से ही सम्भव है।

राजयोग वास्तव में जीवन की एक धारणा थी न कि विधि पूर्वक विकसित किया गया कोई योग, और इसी कारणवश कभी इसे हठयोग से जोड़कर देखा जाता तो कभी श्वास - प्रश्वास की पद्धतियों से। राजयोग की जिस प्रकार से धारणा बनी उसके अनुसार प्राणायाम के विभिन्न उपायों को करना ही राजयोग मान लिया गया। जबकि राजयोग जिस "पातंजल -योगसूत्र" पर आधारित है, उसमें प्राणायाम को अन्य उपायों के साथ- साथ चित्त को स्थिर करने का एक उपाय कहा गया है -- **"प्रच्छर्दन विधारणाभ्यां वा प्राणस्य"** अर्थात् प्राणवायु धारण करने अथवा छोड़ने से भी चित्त स्थिर होता है।

राजयोग सही अर्थों में जीवन में "रजस" की अर्थात् सत, रज और तम, इन तीन गुणों में से रज गुण की साधना है, जिसके द्वारा जीवन वैभवशाली और समृद्ध बन सके। वह ऐश्वर्यवान और प्रभुता से भरा हो सके, जिस प्रकार राजसी जीवन होता है। जीवन में ऐसा सम्भव हो सके कि धन - दौलत एक प्रकार से पैरों में लोटती रहे, और समाज के व्यक्ति न केवल व्यक्ति विशेष की आज्ञा का पालन करें वरन ऐसा करने में गौरव का भी अनुभव करें। ऐसा जीवन ही एक 'नृप' का होता है,और यही राजयोग का वास्तविक अर्थ है।

आज की सामाजिक परिस्थिति में "राजा" पद का कोई परम्परागत अर्थ नहीं लिया जा सकता किन्तु राजसी गुण का जो तात्पर्य है उसके अनुसार आज की सामाजिक परिस्थिति में यही कहा जा सकता है कि व्यक्ति का जीवन दबा - सिकुड़ा न होकर खुला, उदार और सामर्थ्यवान हो। उसमें किसी भी प्रकार की संकीर्णता न हो। राजसी गुण का तात्पर्य दो बातों से लगाया जाता रहा। जिस प्रकार एक राजा जहां एक ओर अत्यन्त वैभव - विलास का एकछत्र स्वामी होता था वहीं उसका दूसरा गुण वीरता, उदात्तता, कल्याण करने की भावना, न्यायप्रिय होना भी अपेक्षित रहता था। रजस गुण केवल भोग - विलास तक सीमित रहने वाला अर्थ नहीं।

यदि रजस गुण की और गहरे में विवेचना समझने का प्रयास करें तो स्पष्ट होता है कि रजस गुण तो जीवन का एक ऐसा गुण होता है जो किसी भी व्यक्ति में प्रकट हो सकता है, प्रबल हो सकता है, इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति किसी विशेष गुणों या वैभव से सम्पन्न परिवार में ही जन्म ले। जिस व्यक्ति में भी ऐसी क्षमता हो कि वह ऐश्वर्य को अर्जित करने की, उसे धारण करने की , दान- पुण्य और परोपकार करने की तथा जीवन में सभी सुखों की भोग करने की क्षमता हो तो वही राजसी प्रवृत्ति का स्वामी है। कई बार ऐसा भी देखने में आता है कि किसी के पास धन तो बहुत होता है लेकिन उसे उदारता पूर्वक किसी को दे देने की मनोवृत्ति नहीं होती या देना भी पड़ता है तो बहुत मन मसोस कर देता है। यह संकीर्णता राजसी गुण नहीं हो सकती। भले ही व्यक्ति कितना ही "श्री" सम्पन्न क्यों न हो।

राजसी गुण के लिए यह भी आवश्यक नहीं कि व्यक्ति के चेहरे, आकार - प्रकार और रंग में कोई विलक्षणता अथवा अद्भुत सौन्दर्य हो। एक सामान्य ही नहीं अति सामान्य व्यक्ति भी अपने आन्तरिक गुणों के कारण, रजोगुण प्रधान होने के कारण वर्चस्व स्थापित कर सकता है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन एक सामान्य परिवार में जन्मे, कुरुप,, एक आंख से दोष युक्त तथा हल्का से लंगड़ा कर चलने वाले, गहरे रंग के राजनेता थे किन्तु पूरा देश उन पर मुग्ध था। अपने

चेहरे व शारीरिक व्यक्तित्व के स्थान पर उन्होंने अपने रजोगुण को इतना अधिक प्रबल किया जिससे उसके वाणी में ओज और क्षमता भर गई। वे देश के केवल राष्ट्रपति ही नहीं एकछत्र नायक रहे। उनके समान लोकप्रिय तो कोई राष्ट्रपति हुआ ही नहीं। अपने देश में भी लाल बहादुर शास्त्री का उदाहरण है जिन्होंने अपने मंझोले कद और अत्यन्त गरीब परिवार की पृष्ठ भूमि होने के बाद भी राष्ट्रनायक बन कर रजोगुण की ही प्रतिष्ठा की थी।

वाणी और चेहरे में ऐसा प्रभाव जन्मगत रूप से भी आता है और प्रयास करके भी। रजोगुण की प्रधानता होने पर तेज और बल ही नहीं उदारता और कल्याणकारी प्रवृत्ति भी जन्म ले लेती है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में न तो कोई अभाव होता है, न उसे धन की चिन्ता करनी पड़ती है। रजोगुण प्रधान व्यक्ति के पास लक्ष्मी आकर्षित होने के लिए बाध्य होती है, क्योंकि रजोगुण वास्तव में भगवान विष्णु का ही स्वरूप है। जिस व्यक्ति में रजोगुण प्रबल होता है वह जितना व्यय करता है उसका दुगुना उसके पास स्वतः ही लौट आता है।

एक गृहस्थ व्यक्ति भी भगवान विष्णु के समान जीवन में पालन, भरण - पोषण से ही सम्बन्धित होता है। अतः उसके लिए तो ऐसी स्थिति होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है और यह विशेषता यदि जन्म से साथ न हो तो केवल **राजयोग दीक्षा** के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। राजयोग दीक्षा के द्वारा स्वतः ही व्यक्ति के शरीर में जड़ता समाप्त होकर ऐसी तेजस्विता और आकर्षित करने की क्षमता बढ़ जाती है कि अन्य उसके पास खींच कर आने के लिए बाध्य हो जाते हैं। उसकी वाणी में ओज व आंखों में ऐसी लपक आ जाती है कि वह जिसे भी भरपूर निगाह से देख लेता है या जिससे भी कुछ क्षण बात कर लेता है वह स्वतः ही सम्मोहित हो जाता है। इसके लिए उसे सम्मोहन विद्या का आश्रय नहीं लेना पड़ता, और यही गुण, व्यक्तित्व की यही तेजस्विता और लपक आज के युग का एक आवश्यक अंग है, न केवल भौतिक सफलता के लिए, वरन हर प्रकार के द्वंद्व, तनाव और वैमनस्यता से बचने के लिए भी।

ऐसे व्यक्ति को ही राजयोगी कहा जाता है क्योंकि राजयोगी ही सभी भोगों के मध्य रहते हुए उनसे अलिप्त रहना जानता है। एक प्रकार से उसका जीवन कमल के समान होता है और कमल ही लक्ष्मी का निवास स्थल है, ऐसे व्यक्ति से यदि लक्ष्मी भी सम्मोहित हो जाती हो तो आश्चर्य ही क्या?

जो बाह्य रूप से यज्ञ है वही आन्तरिक रूप से योग है

– **पूज्यपाद गुरुदेव**

"... यह शरीर भी एक हवन कुण्ड ही है जिसमें जठराग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती है और हम उसमें भोजन रूपी आहुतियां निरन्तर देते रहते हैं। इसके लिए आवश्यक है साधक अपने शरीर को अधिक से अधिक समझे, अपने भीतर जाने का प्रयास करे और अपनी नाभि की चेतना को समझने का प्रयास करे क्योंकि नाभि ही वह केन्द्र बिन्दु है जहां से समस्त शरीर का व्यापार संचालित होता है। भस्त्रिका प्राणायाम के माध्यम से व्यक्ति की श्वास - प्रश्वास नाभि के मूल तक जाती है और उन श्वासों के माध्यम से व्यक्ति अपने नाभि को स्पर्श कर सकता है। यही कुण्डलिनी जागरण की क्रिया है और जब व्यक्ति की कुण्डलिनी जाग्रत होती है तब योग शास्त्र के अनुसार वह साधक **गोमेध यज्ञ** सम्पन्न कर लेता है क्योंकि **'गो'** का तात्पर्य है इन्द्रियां और **'मेध'** का तात्पर्य है उन्हें नियंत्रित करना। कुण्डलिनी जागरण में भी व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को जाग्रत करते हुए एक ऊंचाई की ओर अग्रसर होता है।

सुषम्ना के माध्यम से कुण्डलिनी को उत्थापित करने के पश्चात् पुनः नाभि प्रदेश की ओर अग्रसर होना होता है जो वास्तव में अमृत कुण्ड ही है क्योकि सहस्रार से झरता हुआ अमृत ही नाभि तक आता है। जिस प्रकार बिगड़ैल धोड़े को काबू में करना अत्यन्त कठिन होता है उसी प्रकार मानव मन भी है। बहुत कम योगियों को ही ज्ञात है कि मन पर नियन्त्रण नाभि के द्वारा ही सम्भव है। आज्ञा चक्र से आगे बढ़ने पर कुण्डलिनी का वेग पुनः एक विशेष नाड़ी के माध्यम से और नाभि की ओर गुरु निर्देशन में सतत् के अभ्यास के माध्यम से मोड़ा जा सकता है और इस प्रकार चक्र पूर्ण होता है। जब योगी इस अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं तो उसे **अश्वमेध यज्ञ** कहते हैं, अर्थात् अश्व के समान चंचल मन पर नियंत्रण।

सिद्ध योगी यही पर नहीं रूक जाते वरन नाभि से पुन हृदय की ओर गतिशील होते हैं। हृदय समस्त चेतना को केन्द्र है जिसे **वाजप** की संज्ञा दी गई है। वाजप की चेतना जाग्रत करना अत्यन्त कठिन कार्य है और इसका सिद्ध योगी **इच्छा मृत्यु सिद्धि** प्राप्त कर लेता है, अपनी धड़कनों को नियन्त्रित कर सकता है और इच्छानुसार समय तक बंद भी कर सकता है, यही योग शास्त्र का **वाजपेय यज्ञ** है।

क्रिया योग दीक्षा

इस मस्तिष्क और शरीर की कुल क्षमता का मात्र दस प्रतिशत ही तो इस्तेमाल कर पा रहा है आज का मनुष्य और यही उसके मानसिक तनाव तथा रोज के जीवन में उलझनों का कारण भी है।

क्रिया योग दीक्षा मानव की पूरी क्षमता का प्रयोग करना सिखाती है, और यही दूसरे शब्दों में कुण्डलिनी जागरण की भी क्रिया है।

मानव-जीवन में प्रभु ने असीम क्षमताएं दी हैं, किन्तु मनुष्य ने उसका पूर्ण उपयोग करना नहीं सीखा और साथ ही साथ भौतिकता के विकास के द्वारा वह निरन्तर उन क्षमताओं को वंचित होता गया जो उसके पूर्वजों में सहज रूप से विद्यमान थी। मनुष्य की जिन अनेक मांस-पेशियों का पूर्वकाल में सक्रिय होने का प्रमाण मिलता है वे वर्तमान काल में सक्षम नहीं रह गई। उदाहरण के लिए पहले मनुष्य आसानी से अपने कानों को हिला सकता था किन्तु धीरे-धीरे उसकी यह क्षमता लुप्त हो गई और वर्तमान में तो उसकी ऐसी क्षमताओं में निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। इसका एक सामान्य सा उदाहरण है वे देश जहां तकनीकी अत्यन्त विकसित अवस्था में है, जहां कंप्यूटर और कैलकुलेटर का प्रयोग बहुत अधिक है और वहां छोटे कक्षाओं के बच्चे भी सामान्य सा गुणा-भाग बिना कैलकुलेटर के मदद के नहीं कर पाते जबकि भारत में एक अशिक्षित बच्चा भी उसे जबानी बता देता है।

पूर्व काल में व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति सहज रूप से जाग्रत रहती थी क्योंकि उसके पूर्वजों की कुण्डलिनी जाग्रत होती थी और जिस प्रकार से बच्चा जन्म के साथ-साथ माता-पिता के अन्य गुण प्राप्त करता था वहीं जाग्रत कुण्डलिनी भी। कुण्डलिनी जाग्रत होने के कारण, आज्ञाचक्र पूर्ण रूप से चैतन्य होने के कारण उसे अपने भूत-भविष्य का ज्ञान होता था और वह अपना पूरा जीवन बिना किसी बाधा या दुर्घटना के जी सकता था। कालान्तर में उसकी इस क्षमता में धीरे-धीरे कमी आती गई और स्थिति अब तो यहां तक आ गई है कि व्यक्ति को कुण्डलिनी जागरण के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। दूसरी ओर यह भी नितान्त सत्य है जब तक व्यक्ति की कुण्डलिनी जाग्रत नहीं हो जाती तब तक न तो पूर्ण भौतिक विकास सम्भव है, न मानसिक शान्ति। बिना कुण्डलिनी जागरण के धारणा, ध्यान और समाधि की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि कुण्डलिनी जाग्रत होने पर ही व्यक्ति के अन्दर छिपा हुआ वह अमृत घट खुलता है जिसके अनिवर्चनीय आनन्द में डूब कर ही व्यक्ति समाधि-सुख को प्राप्त कर सकता है।

क्रिया योग-कुण्डलिनी जागरण का ही सुधरा हुआ रूप है। आद्य शंकराचार्य के शिष्य वागभट्ट द्वारा खोजी गई यह पद्धति आज के युग के लिए भी सर्वथा अनुकूल है क्योंकि कुण्डलिनी जागरण के लिए इस क्रियात्मक स्वरूप **क्रियायोग** का आश्रय लिए बिना कोई व्यक्ति इस अल्प जीवन में कुण्डलिनी जागरण के प्रयास में सफल नहीं हो सकता। पहले व्यक्ति की आयु लम्बी होती थी और उसके पास अवसर थे कि वह विभिन्न यौगिक उपाय अथवा तप और चिंतन के माध्यम से अपनी कुण्डलिनी में स्फुरण आरम्भ करे। लेकिन इस साठ-पैंसठ वर्ष के जीवन में अवसरों की न्यून्ता ही नहीं दुर्लभता भी है। साथ ही व्यक्ति के भौतिक जंजाल इतने अधिक बढ़ चुके हैं कि उसके चिंतन और ऊर्जा का एक बहुत बड़ा भाग तो वे ही ले जाते हैं। और फिर इन्हीं उहापोहों में फंसकर जीवन न तो मानसिक शान्ति तक पहुंच पाता है और न कुण्डलिनी जागरण की ओर और न मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य सिद्धाश्रम प्राप्ति की ओर।

जिस प्रकार राजयोग का अर्थ सामान्य रूप से प्राणायाम तक ही सीमित समझ लिया गया उसी प्रकार क्रियायोग को भी हठयोग की क्रियाओं में बांध दिया गया

क्योंकि सक्षम गुरु और गुरु शिष्य परम्परा का मध्यकाल में जिस प्रकार से लोप हुआ जिसमें गुरु अपने शक्तिपात द्वारा अर्थात **क्रिया योग दीक्षा** द्वारा शिष्य की अन्तर्देह को विशिष्ट मंत्रों और अपनी तेजस्विता व तपः ऊर्जा द्वारा झंकृत कर देते थे, वह ज्ञान अस्तित्व में नहीं रहा। जहां **क्रिया योग दीक्षा** के द्वारा गुरु ऐसी प्रक्रिया आरम्भ कर देते थे जिसके द्वारा एक के बाद एक चक्र स्वतः जाग्रत होने की चेष्टा में आ जाते थे, वहीं वह साधक को अनिवर्चनीय सुख की ओर ले जाने में समर्थ होता था।

क्रिया योग दीक्षा के द्वारा न केवल उसे शान्ति प्राप्त होती थी वरन शान्त मन मस्तिष्क होने के कारण दिन-प्रतिदिन के व्यवहारिक जीवन में भी मार्ग सूझते रहते थे। **क्रिया योग दीक्षा** सामान्य घटना नहीं है वरन **महात्मा-गांधी** जैसे व्यक्तित्व ने अपने जीवन में इच्छा व्यक्त की थी कि काश! उन्हें कोई सक्षम गुरु मिल पाते और वे क्रिया योग दीक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को आध्यात्मिक रूप से संवार लेते। उनके मन में ईश्वर और संसार को लेकर चिंतन चलता रहता था उसका हल वे जानते थे कि क्रिया योग के द्वारा ही मिल पाना सम्भव होगा। **स्वामी विशुद्धानन्द, लाहिड़ी महाशय, योगानन्द जी, गोपीनाथ कविराज जी**— किसी के जीवन-दर्शन और साहित्य को उठाकर देखें सभी ने एक ही स्वर में क्रियायोग दीक्षा को ही अनन्य कहा है। और ये सभी नाम कोई इतिहास की वस्तु नहीं वरन अबसे कुछ दशक पहले के ही हैं और प्राचीन सन्दर्भ लें तो शिष्य तीस साल और चालीस साल तक गुरु गृह में सेवा करता रहता था, केवल क्रियायोग दीक्षा की प्राप्ति की आशा में, क्योंकि इसी एक दीक्षा के माध्यम से पूरा जीवन व्यवस्थित जो हो सकता है। प्रारम्भ में हमने जिस बात का उल्लेख किया, मानव के निरन्तर सुप्त होती जा रही मानसिक-शारीरिक क्षमताओं की बात कही, उसका हल केवल **क्रिया योग दीक्षा** में ही छुपा है।

राज योग दीक्षा एवं क्रिया योग दीक्षा में एक सूक्ष्म भेद है। जहां राज योग दीक्षा जीवन को उदार और वैभवशाली बनाने की दीक्षा है, वहीं क्रिया योग दीक्षा मानव शरीर के अन्दर छुपी शक्तियों को प्रकट करने की और बिना किसी यौगिक क्रिया के कुण्डलिनी जाग्रत कर देने की महत्वपूर्ण दीक्षा है, जिससे व्यक्ति का सहस्रार तक चैतन्य हो जाता है। ✵

गुरु कृपा से लक्ष्मी प्राप्ति सम्भव हुई

आदरणीय गुरुदेव

आपके चरणों में सादर प्रणाम पहुंचे। मैं आपसे समय दीक्षा १७/०३/६३ को लिया। आपने सहस्त्ररूपा-लक्ष्मी साधना करने के लिए अनुमति दी। ।

दिनांक २२/३/६३ सोमवार (अमावस्या) दुपहर १ बजे साधना को आरम्भ किया। पूर्व दिशा में पीला आसन, पीला वस्त्र धारण करके सुगंधित अगरबत्ती, घी का दीपक जलाया, गणेश पूजन, गुरु पूजन, गुरु यंत्र पूजन, सहस्त्ररूपणि यंत्र पूजन किया, पूजा के लिए १०८ पुष्प और कमलगट्टे की माला तोड़ के १०८ मनके गिनकर अलग रखे थे। मैंने प्रथम गुरु मंत्र- जप स्फटिक माला से एक माला की, उनसे अनुमति लीं, फिर एक-एक मंत्र कहते हुए, एक-एक पुष्प सहस्त्ररूपी यंत्र को अर्पित किया। बाद में होम किया, आम की लकड़ियां जला दीं, सामने एक पात्र में घी रखा था। घी थोड़ा चम्मच में लिया उसमें एक कमलगट्टा डाल के अग्नि में आहुति दिया। इस तरह १०८ बार आहुतियां दी। बाद में आरती की, प्रसाद अर्पित किया और साधना समाप्ति का प्रसाद घर में बांट दिया।

और उसी रात पहरिया अर्धचेतना अवस्था में मुझे साक्षात्कार हुआ -- कुछ औरतें मेरे घर आकर बैठी थीं, और आपस में बात कर रही थीं। अपन सब लोग आ गए, और कोई आने वाला नहीं रहा। उन्हें बता दो। मैं तब बाजु के रूम में था। मैं वहां आया, उनसे पूछा आप कौन हैं? उसमें से एक ने कहा इन्हें अपने असली रूप बता दो। वर्ना ये भ्रमित अवस्था में रहेंगे। दूसरी ने कहा आपने हमें बुलाया हम आ गए, यहीं रहेंगे। इसके बाद झाकियां जिस तरह निकलती हैं, वैसी झाकियां दिखने लगी। सामने के दरवाजे से एक लक्ष्मी आती, थोड़ी देर रुककर आसमान में दूर जाते-जाते गायब हो जाती। इस तरह तकरीबन एक घंटा तक रहा और ख्वाब खुल गया। मैं फिर सोचा तो मेरे घर में, मेरे पास गुरुदेव खड़े थे, और मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। मैं समझ गया। साधना सफल हो गई

आपका कृपा पात्र
पी० के० पांढरे
द्वारा श्री गोविंदराव क्षिरसागर
शारदा चौक,
त० पु० पो० मौदा,
जिः- नागपुर (महाराष्ट्र)

मेरे अनुभव

प्रत्येक साधक को साधनाकाल में इस प्रकार दैवीय संकेत या विलक्षण अनुभूतियां होती ही हैं। आपके प्रकाशित विवरण के आधार पर अन्य साधकों एवं पाठकों के समक्ष नये रहस्य खुल सकते हैं, अतः अनुभूति, विवरण आपके फोटोग्राफ सहित आमंत्रित हैं, जिनके मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का दायित्व आप पर ही होगा।

विवरण की प्रामाणिकता एवं वर्णन की शैली के आधार पर उन्हें पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रविष्टि भेजने का पता

''मेरे अनुभव''
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन-०११-७१८२२४८

ऋण मोचक मंगल प्रयोग

चतुर्वर्ग चिन्तामणि महाग्रंथ के अनुसार धन-संबंधी, ऋण-दोष दूर करने का सर्व श्रेष्ठ उपाय "मंगल साधना" है। मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **"मंगल यंत्र"** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर प्रतिदिन ११ पाठ **ऋण मोचक मंगल स्तोत्र** का करें तथा सात मंगलवार तक इसके साथ यदि **मंगल माला** से पांच माला मंगल मंत्र का जप करें तो उसे शीघ्रातिशीघ्र फल प्राप्त होता है तथा ऋण-बाधा एवं राज्य-बाधा से मुक्ति मिलती है। यहां यह ध्यान देने योग्य है कि यह साधना मंगलवार को ही सम्पन्न करनी है।

मंगल मंत्र -

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।।

ऋणमोचक मंगल स्तोत्रम्

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनंदनः।।२।।
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्तापहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।३।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।४।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।५।।
स्तोत्रअंगारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पापि भवति क्वचित्।।६।।
अंगारक महाभाग भगवन् भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।७।।
ऋणरोगादिदारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यंतु मम सर्वदा।।८।।
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।९।।
विरिन्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः।।१०।।
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्रिदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।११।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तोत्रं च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा।।

मैंने अपने जीवन में कई व्यक्तियों को जो ऋण के कष्टकारक चंगुल में बुरी तरह से जकड़े हुए थे, उन्हें इस प्रयोग द्वारा ऋण-मुक्ति प्राप्त करते देखा है, वास्तव में मंगल-साधना अत्यन्त उत्तम साधना है।

चौबीसा यंत्र

गुरु गोरखनाथ को शाबर मंत्र विद्या सिद्ध अवतारी पुरुष माना गया है। इनके द्वारा शाबर मंत्रों की विशेष रचनाएं की गईं यह सिद्ध तथ्य है कि यदि कोई गुरु गोरखनाथ रचित लक्ष्मी मंत्रों से सम्पुटित **"चौबीसा यंत्र मुद्रिका"** धारण करे तो उसे ऋण सम्बंधी बाधा निवृत्ति में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

इस मुद्रिका को बुधवार के दिन पूजन कर कमल गट्टे की माला से पांच माला **"श्रीं"** बीज मंत्र का जप कर धारण करना चाहिए।

मनोबल की मशाल - आपके हाथ में

आपने ही कहा था कि ऐसा कुछ होना चाहिए जो अनूठा हो, अद्वितीय हो
वह क्षण, वह कार्य जिसकी आपको वर्षों से प्रतीक्षा थी
एक नया चेतना युक्त क्रियाशील महान कार्य आपके द्वारा
हमने प्रारम्भ किया है आपके संकल्प पर, आपके विश्वास पर

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

जिसके अन्तर्गत निम्न योजनाओं पर कार्य निरन्तर गतिशील होगा

- एक विशाल महान केन्द्र भवन का निर्माण जो विविध सुविधाओं एवं केन्द्रों से युक्त होगा और जिसका नाम होगा **''सिद्धाश्रम''**
- उपरोक्त केन्द्र में प्राचीन भारतीय विद्याओं के विकास, पुनरुत्थान से सम्बन्धित योजनाबद्ध कार्य
- योग, मंत्र, आयुर्वेद, साधनाएं आदि गूढ़ कार्यों का विकास जिसमें प्रत्येक व्यक्ति आकर स्वयं सीख सकता है एवं अपना जीवन पूर्णता तक पहुंचा सकेगा।
- प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान एवं उत्थान केन्द्र जिसमें **''नेचुरोपैथी''** , **आयुर्वेद** आदि द्वारा विभिन्न रोगों की इलाज की पूर्ण सुविधाएं
- विशिष्ट जड़ी बूटियों का सिद्धाश्रम में ही विकास और उनका प्रयोग जन - जन के लिए
- विशेष परोपकारी कार्यक्रम पूरे भारत वर्ष में जिसमे शिविर, प्रवचन, साधनाएं विद्याओं मंत्र, तंत्र, योग, मीमांसा का प्रेक्टिकल ज्ञान
- सामाजिक उत्थान हेतु विशेष परोपकारी कार्यक्रम पूरे भारत वर्ष में

इसके लिए आवश्यक है आपके सहयोग एवं पूर्ण भागीदारी की। इस विशाल कार्यक्रम में पूर्णता के लिए प्रत्येक जन का सहयोग आवश्यक ही है, तन से, मन से, धन से।

उपरोक्त ट्रस्ट से अन्तर्गत आप द्वारा भेजा गया अनुदान लाखों लोगों के चेहरों पर जीवन की मुस्कान ला सकेगा।

उपरोक्त ट्रस्ट रजिस्टर्ड है तथा आयकर अधिनियम धारा ८० जी. के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। यह छूट आयकर आयुक्त जोधपुर द्वारा उनके पत्र क्रमांक जे. सी. २/८० जी./ एन. - ७ / जे. यू. /९३ - ९४/ १४६७ तारीख ०६-०४-९३ से प्रभावी ९५ - ९६ तक। **भविष्य में सभी अनुदान उपरोक्त ट्रस्ट के नाम से ही मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें और इसकी रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।**

इस कार्य में विलम्ब नहीं करना है और जो भी संकल्प लें बड़ा लें, क्योंकि यह एक जन हितार्थ महान कार्यक्रम है, जिसकी भावना ही है ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''

धन राशि एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें

सचिव, डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरीटबल ट्रस्ट, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९

अथवा

सचिव, डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरीटबल ट्रस्ट, गुरुधाम, ३०६ कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्सः ०११-७१८६७००

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

धरती पर सिद्धाश्रम

भगवत् पाद आद्य शंकराचार्य ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि यदि हम ऋषि पुत्र हैं तो हमारा लक्ष्य केवल और केवल सिद्धाश्रम ही होना चाहिए। सिद्धाश्रम . . . एक स्थली मात्र ही नहीं, पुण्यता और आध्यात्मिकता का वह गुनगुनाता हुआ संगीत जिसकी उत्पत्ति तप और प्राणों से होती है और इस भौतिकता की झुलसन से भरे, खोखलेपन के विद्रूप से भरे समाज में केवल आध्यात्मिकता या कुछ भारतीय विद्याओं की पुर्नस्थापना ही नहीं वरन जो सही अर्थो में मानव जीवन है, जिसके द्वारा मानव और पशु में भेद किया जा सकता है, उसको स्पन्दित करने का आधार है।

सिद्धाश्रम जीवन का पुण्य चिन्तन है -

यह अन्य संस्थाओं की ही भाति एक धार्मिक संस्था ही नहीं है यह तो जीवन का चिन्तन है, देवत्व की शैली है, आध्यात्मिकता का आधार है, और इसी से पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी **(डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली)** ने यह मौलिक और नूतन चिन्तन दिया कि जीवन की श्रेयता और मेरी उपस्थिति की सफलता तभी है जब इस धरा सम्पूर्ण को ही आध्यात्मिकता के अनूठे और उसके छलछलाते हुए प्रवाह से रसप्लावित किया जा सके, और इसके लिए आवश्यक हो गया है कि एक ऐसे दिव्य स्थान का निर्माण हो, जो अपने आकार-प्रकार और अपनी अलग शैली के कारण सैकड़ों-हजारों संस्थाओं के बीच में भी न केवल सुस्थापित हो सके वरन अपनी सार्थकता का बोध भी करा सके।

आपके प्रयासों से ही सफल होगा यह -

आप एक सजग सप्राण व्यक्तित्व हैं, पुरुष हैं, और इस सबसे भी ऊपर उठकर ऐसे पूज्य गुरुदेव के शिष्य हैं जो अपने-आप में चैतन्यता, आध्यात्मिकता, करुणा और प्रवाह के साकार पुंज हैं। जिन्होंने अपने जीवन का एक-एक पल अपने शिष्यों के हित - चिन्तन और उनकी उन्नति के लिए ही व्यतीत किया है। आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को न केवल इस धरा पर वरन सिद्धाश्रम में भी स्पष्ट किया है। ऐसे दिव्य व्यक्तित्व का यंत्र-मात्र बनना भी अपने-आप में जीवन का परम सौभाग्य है, इस मानव देह की पूर्णता है और पवित्रता है।

इस जीवन में अनन्त सम्भावनाएं हैं, न केवल अपने लिए वरन दूसरों के लिए भी, और यह स्थिति जीवन में आती है पूर्ण रूप से आध्यात्मिक होने पर, उस अलौकिक आनन्द का रसपान करने पर, क्योंकि हृदय में छलछलाते इसआनन्द को व्यक्त किए बिना व्यक्ति रह सकता ही नहीं। दूसरे को प्रदान करने के इस सुख में जो सुख निहित है वह बढ़ता ही रहता है। यह तो 'दिन-दिन बढ़ता सवायो' सुख है और इसी सुख से मानव जीवन की पूर्णता है, आह्लाद का छलछलाता प्रवाह है।

आपने संकल्प लिया है -

आप सभी अपने जीवन में कभी न कभी इस सुख के साक्षीभूत बने ही हैं, आपने अनुभव किया ही है कि सामान्य जीवन शैली और भोग से अलग हठकर पूज्य गुरुदेव के साहचर्य में एक अनोखी मस्ती, एक अनोखी चैतन्यता, आंखों में नई चमक और पांवों में नई थिरकन आ जाती है। आप जानते हैं इसका कारण क्या है? क्योंकि उन क्षणों में आप एक ऐसे व्यक्तित्व के समक्ष होते हैं जो शिव स्वरूप हैं और उनके रोम-रोम से निकलती अमृत किरणें इस पत्थर जैसे शरीर को भी तरंगित कर देती हैं। पूज्यपाद गुरुदेव तो आपको इसी सुख का निरन्तर प्रवाह देना चाहते हैं, और आपने भी तो संकल्प लिया था अभी पिछली नवरात्रि में **आश्विन नवरात्रि के अवसर पर भिलाई** में, कि आप सभी मिलकर एक नया सिद्धाश्रम बनाएंगे, इसी धरती पर! जिससे पूज्य पाद गुरुदेव आपके बीच ही उपस्थित रहें।

हमें आवश्यकता है गुरुदेव की -

भले ही आपकी आयु ४५-५५ हो गई हो, आप स्वयं भी तीन-चार बच्चों के पिता हों लेकिन यथार्थ में एक अबोध बालक ही हैं इस अध्यात्म जगत में। आपने धन कमाना सीख लिया होगा लेकिन जीवन की विश्रान्ति प्राप्त करने के लिए जिस पथ पर चल रहे हैं, उस पर आपके पांव डगमग हैं। आपकी मूक निगाहें बार-बार ऊपर उठ ही जाती हैं, कि कोई तो हमारी ऊंगली पकड़कर पल दो पल के लिए ही इस विषमय जगत से अलग ले चले और ऐसा केवल पूज्य गुरुदेव ही कर सकते हैं।

प्रेम से आपूरित, पूज्य गुरुदेव से संस्पर्शित और आगे कुछ बढ़कर जीवन में करने की ललक रखने वालों के लिए कोई भी सीमाएं नहीं होतीं। विश्व सचमुच उनको परिवार ही लगता है। उन्हें कोई मत नहीं प्रकट करना पड़ता, किसी वाद का आश्रय नहीं लेना पड़ता और न किसी पंथ का अनुसरण ही करना पड़ता। यह एक ऐसे ही पवित्र कार्य में आपकी सहभागिता के लिए आपको आमन्त्रण है।

ट्रस्ट बनाना ही एक मात्र उपाय है -

जहां हमारा चिन्तन सीमाओं को पार करने का उदात्त हो और विश्व-बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत हो, वहां एक आधार रखना ही पड़ता है, एक विशाल भवन और उससे जुड़ी सहयोगी संस्थाएं निर्मित करनी ही पड़ती हैं क्योंकि बिना आधार के यदि गति दी भी जाए तो किस प्रकार? और इसीलिए पत्रिका परिवार ने पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए **सिद्धाश्रम साधक परिवार** ने उसे गति देते हुए जिस ट्रस्ट का निर्माण किया है वह पूज्यपाद गुरुदेव को ही समर्पित करने की भावना रखते हुए किया है एवं इस ट्रस्ट का नाम है **"डा० नारायणदत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट रजि०"** इस ट्रस्ट का विधिवत पंजीकरण एवं आयकर सम्बन्धी छूट प्रमाणपत्र भी प्राप्त कर लिया गया है। आप जो भी धनराशि भेजेंगे वह आपके लिए आयकर से छूट के योग होगी।

आप सभी की आवश्यकता है -

यह एकांगी कार्य नहीं, इस कार्य में हमें प्रत्येक वर्ग से आवश्यकता होगी -- डॉक्टर, इन्जीनियर, कलाकार, एकाउन्टेंट, लेखक, एवं श्रमिक, क्योंकि प्रत्येक अपने स्थान पर अतिविशिष्ट है। जब हमने सम्पूर्णता देने का निश्चय किया है तो वह समाज के सभी वर्गों से ही गठित होगी। किन्तु प्रारम्भिक चरण में सर्वाधिक आवश्यकता होती है, धन की, आर्थिक सहयोग की, क्योंकि भवन निर्माण और संस्था की रूपरेखा खड़ी करने में धन ही प्रारम्भिक आवश्यकता है। हमारी योजना का केन्द्र दिल्ली के ही आसपास होगा और जिस प्रकार से योजना है उसमें तीन चरण में काम होना है, जिस पर वर्तमान निर्माण- दर के मूल्य के अनुसार ११ करोड़ रुपये का व्यय अनुमानित है।

जीवन को, समाज को और मानवता को विश्रान्ति व आध्यात्मिकता की सुखद छांव देने के लिए फिर भी इस धनराशि को एक बार नगण्य कहा जा सकता है, किन्तु जहां तक व्यवहारिकता की बात है उसके लिए धन एकत्र करना ही होगा और यह सम्भव होगा सामूहिक प्रयास से, उदात्त मानसिकता से, अपने प्रिय गुरुदेव के प्रति अपनी भावना को स्पष्ट करने से, अपने संकल्प को पूरा करने से और आप से।

साधक तो ऐसे होते हैं!

जो साधक भक्ति एवं त्याग से परिपूर्ण होते हैं वे ही सही रूप से शिष्य कहलाने के अधिकारी हैं, **"धरती पर सिद्धाश्रम"** निर्माण हेतु जिन योग्य शिष्यों ने पूर्ण समर्पण भाव से आर्थिक सहयोग राशि **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाउन्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट** के नाम भेजा उनकी सूची नीचे दी जा रही है, आशा है अगली सूची में हमें हजारों नाम प्रकाशित करने पड़ेंगे —

नाम	स्थान	नाम	स्थान	नाम	स्थान
श्री रमेश चन्द्र वर्मा	बिलासपुर	श्री ए. के. पाण्डे	जबलपुर	श्री के.बी. द्विवेदी	बिलासपुर
श्री एस. आर. चन्द्रा	बिलासपुर	श्री जी. एल. चौधरी	बोकारो	श्री चन्द्रशेखर	रायपुर
श्री विपिन चन्द्र जोशी	अलमोड़ा	श्री शेर सिंग	बिलासपुर	श्रीमती शैल देवी शर्मा	दुर्ग
श्री सोमनाथ	बालाघाट	श्री रवि एन. मिश्रा	कलकत्ता	श्री विन्दा प्रसाद साहू	भोपाल
श्री राम नाथ सोनारे	बैतूल	श्री मूल सिंह	दुर्ग	श्री दुर्वासा राम साहू	दुर्ग
श्री अशोक एच. जोशी	वलसाड	श्री कमल अतुलकर	आमला	श्री राज कुमार निगम	फर्रुखाबाद
श्री रमाकान्त राय	दार्जिलिंग	श्री लिनेश के. साहू	दुर्ग	श्री राजू चौधरी	हजारीबाग
श्री जवाहर लाल गोयल	बुलन्दशहर	श्री गोलमान सिंग उईके	बैतूल	श्री चन्द्र शेखर प्रसाद	धनबाद
श्री पी. डी. कौशल	रायपुर	श्री मथुरा देवी वर्मा	बंगलौर	श्री कृष्णा मनी अधिकारी	नेपाल
श्री पी. एस. वर्मा	ग्वालियर	श्री आनन्द कुमार	बरेली	श्री तारांचन्द	बाड़मेर

जो केवल होली की रात्रि में ही सिद्ध होती है

होली और यक्षिणी साधनाएं . . . एक दूसरे के लिए ही तो गढ़ी गई हैं, और यक्षिणी साधना भी साधारण न हो वरन् विशेष हो . . . होलिका यक्षिणी।

तांत्रोक्त साधना एवं महारात्रि होने के कारण अत्यन्त प्रभावशाली, केवल ऐसे ही पर्व के लिए . . .

हो**लिका यक्षिणी** के विषय में लिखने से पूर्व यह स्पष्ट कर देना आवश्यक रहेगा कि भले ही यह तांत्रोक्त साधना हो और होली जैसे तांत्रोक्त साधनाओं के सिद्ध पर्व पर सम्पन्न की जाने वाली साधना हो किंतु होलिका यक्षिणी अपने स्वरूप और प्रस्तुतिकरण में अत्यन्त ही सौम्य यक्षिणी है तथा अन्य यक्षिणी साधनाओं में जहां भय व रोमान्च की स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं वहीं होलिका यक्षिणी के साथ ऐसी कोई भी विपरीत स्थिति नहीं जुड़ी।

. . . एक नववधु की भांति सलज्ज और कोमल बनकर ही उपस्थित होती है होलिका यक्षिणी, लाल वस्त्रों में लज्जा से लाल होती हुई। **यदि पूर्व में कोई यक्षिणी साधना सम्पन्न की हो और प्रारम्भिक सफलता मिलने के बाद भी पूर्ण प्रत्यक्षीकरण की स्थिति न बनी हो तो उस साधना को भी होलिका-दहन की रात्रि में सम्पन्न कर उसमें मनोवांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है।** लेकिन उससे भी अच्छा यह है कि व्यक्ति इस चैतन्य रात्रि में

यक्षिणी अभिशप्त देव वर्ग की स्त्री है। देवयोनी में भ्रमवश अथवा प्रमाद वश कोई अपराध हो जाने से उसे उस योनि से नीचे गिरकर किंतु मानव से ऊपर की इस योनि में आना पड़ता है और यही यक्ष योनि की उत्पत्ति की कथा है। इस योनि में रहते हुए यक्ष एवं यक्षिणी को विविध प्रकार से सभी को संतुष्ट कर अपने को श्राप से मुक्त करना होता है। इसी कारणवश यह यक्षिणी अपने साधक को विविध प्रकार के द्रव्य, आभूषण और चमत्कारिक वस्त्रों के साथ-साथ उसका मनोवांछित भोग और मनोरंजन भी प्रदान करती है, क्योंकि ऐसा करने से उसकी मुक्ति संभव होती है। **श्राप से मुक्त होने की विवशता के अतिरिक्त यक्षिणी का स्वरूप एवं हाव-भाव अत्यन्त विलासी होता है** और वह अपने सिद्ध साधक का अनेक प्रकार से मनोरंजन करती ही है। विनोद-प्रियता और उत्तेजक हाव-भाव यक्षिणी की अतिरिक्त विशेषता है। विलासमयता, कटाक्षों की बात, मादक मंथर गति व यौवन की परिपूर्णता ही यक्षिणी का सही स्वरूप है और उसके इन्हीं लक्षणों से सही परिचय और परीक्षण होता है कि क्या वास्तव में यक्षिणी ही उपस्थित हुई है।

श्रृंगार प्रियता द्वारा अत्यन्त उत्तेजक स्वरूप में लाल वस्त्रों से सजकर होलिका अपने प्रभाव से साधक को सम्मोहित करने की ऐसी शक्ति समाहित किए है जो कि शायद किसी अप्सरा वर्ग की स्त्री में भी विरले होगी। जहां अन्य यक्षिणियां अपने सौन्दर्य के माध्यम से साधक को आकृष्ट करने में सफल होती हैं **वहीं होलिका यक्षिणी उत्तेजकता और कामुक व विलासी नायिका का स्वरूप धारण कर साधक को बेसुध कर देती है**। इसी से ऐसी तीक्ष्ण यक्षिणी की साधना का जो दिवस निर्धारित किया गया वह कोई होलिका यक्षिणी की ही सिद्धि प्राप्त करे जिसके द्वारा वह प्रेयसी के रूप में सिद्ध होकर जीवन-पर्यन्त व्यक्ति की सहायक बनी रहेगी। यक्षिणी-साधना-तंत्र के विद्वानों के लिए कोई नई बात नहीं और अलग-अलग यक्षिणियों की साधना अलग-अलग ढंग से करने का विधान **उड्डीश तंत्र, दत्तात्रेय तंत्र, भूत डामर तंत्र,** इत्यादि ग्रंथों में मिलता है और इसी प्रकार अलग-अलग यक्षिणियों को अलग-अलग ढंग से सिद्ध करने की विधि भी है। भगिनी, जननी, पुत्र-वधू, पत्नी, अथवा प्रेयसी . . . इन रूपों में यक्षिणी की साधनाएं की जाती हैं किंतु होलिका यक्षिणी केवल प्रेयसी रूप में ही सिद्ध की जा सकती है, जो पूरे जीवन भर व्यक्ति के साथ भार्या के समान रहती हुई उसे सभी सुख व भोग प्रदान करती है।

यक्षिणियां अपने स्वरूप में आनंदप्रद और प्रचुर धनदायक होती हैं, क्योंकि ये जिस वर्ग की हैं उसी वर्ग के अधिपति कुबेर हैं और शास्त्र-प्रमाण है कि यक्षिणी के सिद्ध साधक को यक्षिणी, कुबेर के गृह से धन लाकर प्रदान करने वाली होती है।

यक्षिणी साधना का यह एक गोपनीय पक्ष है और साधक को इस साधना के द्वारा स्वतः ही कुबेर साधना के समस्त लाभ प्राप्त हो जाते हैं। **दत्तात्रेय तंत्र** में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि यक्षिणी साधना संम्पन्न करने से पूर्व कुबेर का पूजन करने से यक्षिणी की प्राप्ति तो होती है साथ ही जीवन पर्यन्त कभी न सूखने वाला धन का स्रोत एवं भगवान शिव का सुरक्षा-चक्र भी प्राप्त होता ही है।

ॐ यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रिय बान्धवः।
एकां मे वशमां नित्यं यक्षिणीं कुरुते नमः। ।

अर्थात् "भगवान शिव के प्रिय बन्धु यक्षराज "कुबेर को प्रणाम हो, जिनकी कृपा से एक यक्षिणी मेरे वशीभूत हो जाए।"

साधारण दिवस नहीं हैं अपितु वर्ष का सर्वाधिक चैतन्य, तांत्रोक्त दिवस होलिका-दहन की रात्रि का है जिस दिन सामान्य रूप से भी कोई तांत्रोक्त साधना की जाए तो चौंकाने वाले परिणाम प्राप्त होते हैं, फिर ये साधना तो केवल और केवल इसी दिवस के लिए रची गई है।

मैंने एक अन्य ग्रंथ में होलिका का उल्लेख राक्षसी के रूप में पढ़ा था, किंतु मुझे जब यह साधना प्राप्त हुई तब ही मैं साधना सम्पन्न करके समझ सका कि होलिका तो अपनी कोमलता और सलज्जता के कारण किसी भी नववधु के सौन्दर्य से कम है ही नहीं। लाल रंग इसको इतना प्रिय है कि इसके सारे शरीर पर लाल रंग की ही प्रचुरता झलकती रहती है **. . . माथे पर लाल रंग की बिंदी, लाल रंग में रंगे ओष्ठ, लाल वस्त्र, पैरों में आलक्तक एवं हथेलियों से कोहनियों तक मेंहदी का श्रृंगार** . . . आभूषण प्रियता तो प्रत्येक यक्षिणी की विशेषता है और होलिका यक्षिणी भी इससे अछूती नहीं, जो साक्षात् कुबेर के गृह की ही हो उसे आभूषणों और द्रव्यों की कमी भी कैसी? होलिका की विशेषता केवल यहीं तक सीमित नहीं कि वह अपने साधक को द्रव्य और धन देती है वरन् आग्रह पूर्वक प्रामाणिक तांत्रोक्त साधना द्वारा एवं प्रेम-पूर्वक आह्वान करने पर होलिका अपने सिद्ध साधक को यौवन का अतिरिक्त वेग और स्फूर्ति भी देती ही है। मूलतः देव वर्ग की स्त्री होने के कारण यक्षिणी के पास कई सिद्धियां, लेप, अंजन, औषधि तथा गोपनीय ज्ञान भी होता ही है। जहां वह जननी या भगिनी रूप में सिद्ध होने पर साधक को विदेश यात्रा या स्वादिष्ट भोजन और मनोनुकूल स्त्री की प्राप्ति कराती है वहीं प्रेयसी रूप में अथवा भार्या रूप में सिद्ध होने पर भोग और विलास के साथ-साथ उत्तेजक यौवन भी प्रदान कर जाती है।

ज्यों स्वर्णाभूषणों में मादक सुगन्ध ही घुल गयी हो!
यौवन से दमकती स्वर्णिम काया और अभिसार की सुगन्ध !
नववधु सी ही सलज्ज सिर से पांव तक दहकते लाल रंग को ही समेटे हुए
होली की लपटों से भी ज्यादा दहकती हुई. . .

होलिका यक्षिणी की साधना होलिका-दहन की रात्रि में सामान्यतः होलिका दहन के पश्चात् अथवा ठीक मध्य रात्रि को प्रारम्भ की जाती है। मूल ग्रंथों में तो इस साधना को एकान्त में वट-वृक्ष के नीचे करने का विधान है जिसकी पूर्ति अपने घर में वट-वृक्ष की एक डाल स्थापित करके भी की जा सकती है। इस साधना के लिए एकान्त होना अत्यन्त आवश्यक है। इस साधना का निश्चय करने के उपरान्त चाहिए कि साधक होलिका-दहन की रात्रि से पूर्व ही दिन में ग्यारह बजे के आसपास जाकर वट-वृक्ष की एक डाल लाकर अपने साधना कक्ष में मिट्टी के ढेर में दबाकर स्थापित कर दें। रात्रि को साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व इस डाल का वट-वृक्ष के रूप में पूजन करें और अपनी मनोकामना बोलकर उसकी पूर्ति की प्रार्थना करें। गहरे लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के आसन पर बैठ अपने सामने लाल रंग का वस्त्र बिछाएं, यदि ये वस्त्र रेशमी हो तो अधिक उपयुक्त रहता है। अपने सामने **होलिका यक्षिणी यंत्र, गर्भसार** एवं **पांच मदूराग** स्थापित करें गर्भसार वास्तव में कुबेर यंत्र का ही तांत्रोक्त स्वरूप है और जहां होली की रात्रि में इसको स्थापित करने से होलिका यक्षिणी की सिद्धि प्राप्त होती है वहीं कुबेर साधना का भी पूर्ण प्रभाव प्राप्त होता ही है।

बाईं ओर चावलों की ढेरी पर **भैरव गुटिका** स्थापित कर उसका सिंदूर, धूप, दीप एवं गुड़ के नैवेद्य से पूजन कर निम्न मंत्र उच्चरित करें --

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम्
भैरवाय नमस्तुभ्यं आज्ञाम् दार्तुमर्हसि। ।

इसके बाद हाथ में अक्षत लेकर दसों दिशाओं में फेंकते हुए निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ रक्षा विधान सम्पन्न करें --

अपसर्पन्तु ये भूतः ये भूतः भूमि संस्थितः ये भूतः विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचः सर्वतो दिशम्।।
सर्वेषांम विरोधेन पूजा कार्य समारभे।।

यह रक्षा विधान अत्यन्त तीक्ष्ण है और इस विशिष्ट साधना के लिए आवश्यक है जिससे साधना काल में कोई विघ्न-बाधा उपस्थित न हो और जब यक्षिणी प्रकट हो तब साधक भयभीत न हो। प्रायः यह देखा गया है कि साधक को यक्षिणी सिद्धि प्रथम बार में ही हो जाती है लेकिन वह इतना अधिक हड़बड़ा जाता है अथवा

कामोत्तेजित हो जाता है कि अपना मनोवांछित पूर्ण करने में असमर्थ रहता है, और इन सभी स्थितियों का निराकरण इसी प्रकार के रक्षा-विधान से संभव होता है।

साधना के दूसरे चरण में **गर्भसार** स्थापित कर उसका पूजन पुष्प की पंखुड़ियों से किया जाता है। इसे किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में स्थापित करना चाहिए, आगे के जीवन में यह जीवन पर्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है। सुगन्धित अगरबत्ती लगाकर **होलिका यक्षिणी यंत्र** पर **पांच मद्राग** चढ़ायें।

ये होलिका यक्षिणी की पांच शक्तियों-मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण, द्रावण के प्रतीक हैं जिनकी पुष्टि साधक की देह व कामभाव में होती है। तेज सुगन्ध वाले किसी इत्र को यंत्र पर लगाएं और थोड़ा-सा अपने शरीर पर भी मलें।

तीव्र गंध की अगरबत्ती कमरे में प्रज्ज्वलित करें और तीव्र गंध के ही सुंदर पुष्पों को होलिका यक्षिणी यंत्र पर चढ़ाएं।

सम्पूर्ण पूजन में यही चिंतन रखें कि "मैं भार्या रूप में होलिका यक्षिणी को विविध सुगन्ध व पुष्पों से श्रृंगारित कर रहा हूं।"

ऐसा करने के बाद होलिका यक्षिणी के सुंदर व आभूषणों से आच्छादित नववधू स्वरूप का चिंतन करें। शास्त्रों में उल्लेख है –

कुंकुमेन भूर्जपत्र प्रतिमा विलिख्य।
गन्धाक्षतपुष्पविधिना सम्पूज्य।।

अर्थात् केसर के द्वारा भोजपत्र के ऊपर जिस यक्षिणी की साधना करनी हो उसका चित्र लिखकर चंदन, अक्षत, पुष्प और धूप से पूजन आदि करें। **ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण यंत्र इसी साधन को पूर्ण करता है, जिस पर साधक अपनी भावनाएं स्पष्ट कर सकता है।**

उपरोक्त संक्षिप्त पूजन करने के उपरान्त **रक्त स्फटिक** की माला से होलिका यक्षिणी के मूल मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें।

मंत्र -

ॐ ह्रौं फट्

इस मंत्र जप में तेल का दीपक लगा लें एवं निष्कम्प भाव से (बिना विचलित हुए) मंत्र-जप करते रहें, यदि बीच में किसी प्रकार की ध्वनि, पदचाप, वस्त्रों की सरसराहट या पायलों की ध्वनि जैसी आवाज आए तो विचलित न हों और न सिर घुमाकर देखने का प्रयास करें।

यह संपूर्ण जप एक बार में ही पूर्ण करना है। मंत्र-जप समाप्त कर जब यक्षिणी प्रत्यक्ष हो तो उसे तीव्र सुगन्ध वाला इत्र भेंट स्वरूप दें। जिसके उपरान्त वह स्वयं ही जीवन-पर्यन्त भार्या बनकर संपूर्ण सुख और विविध प्रकार से संतोष देने का वचन देती है।

होलिका यक्षिणी को सिद्ध कर लेने के उपरान्त उसे आह्वान करने का कोई मंत्र नहीं है क्योंकि यह फिर साधक की इच्छानुसार ही प्रत्यक्ष होती रहती है। यों अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिक्षण वह साधक के साथ उपस्थित रहती है जिसको कि केवल साधक ही देख सकता है।

चन्द्रप्रिया जड़ी . . . जिसके सम्मोहन से बंध कर अप्सराएं और यक्षिणियां भी व्यग्र हो उठे! कहते हैं जिसके पास यह जड़ी होती है, अप्सरा या यक्षिणी उसके सम्मोहन में बंध जाती है और इसे धारण करने वाले व्यक्ति को मनोवांछित अप्सरा साधना सफल होती है।

ऐसे साधक को अप्सरा या यक्षिणी का पूर्ण सुख सान्निध्य और प्रेम प्राप्त होने लगता है।

मंत्र-जप समाप्त होते ही सम्पूर्ण पूजन सामग्री अर्थात् होलिका यक्षिणी यंत्र, पांच मद्राग एवं रक्त स्फटिक माला ले जाकर जहां होलिका-दहन हुआ हो उसके सामने रख दें और वापस घर लौटकर स्नान कर साधना की पूर्णता समझें।

गर्भसार, जो कि प्रकृति का एक उपहार कहा गया है, उसे अपने पूजा-स्थान अथवा दुकान पर इस प्रकार से स्थापित करें कि उस पर किसी की दृष्टि न पड़े, **यह वास्तव में कुबेर का ही स्वरूप है इसका पूजन नित्य केवल फूल की पंखुड़ियों से करना ऋद्धि-सिद्धि दायक एवं होलिका यक्षिणी का पूर्ण सुख सान्निध्य, वैभव और प्रेम प्राप्त कराने वाला होता है।**

होलिका यक्षिणी की यह साधना एक ऐसी साधना है जिसको साधक को स्वयं अनुभूत कर ही लेना चाहिए क्योंकि एक साधना से ही जहां एक ओर सुख-वैभव-यौवन प्राप्त होता है, वहीं कुबेर साधना के भी स्थायी लाभ प्राप्त होने लग जाते हैं।

ध्यान जीवन का एक ऐसा चिंतन है कि जिस व्यक्ति की भी भारतीय साधना में रुचि होती है वह क्षण दो क्षण रुक कर ध्यान के विषय में सोचता ही है . . . ध्यान का प्रचार भी पर्याप्त रूप में हुआ है और विभिन्न पद्धतियों द्वारा व्यक्ति ने ध्यान की दशा प्राप्त करने की ओर कदम भी बढ़ाए . . .

. . . किंतु ध्यान में एकाग्रता कैसे आए? यह केवल सामान्य व्यक्ति के चिंतन का विषय ही नहीं, वरन् मनीषियों व योग शास्त्रियों के लिए भी समान रूप से चिंतन का विषय रहा है।

ध्यान में एकाग्रता कैसे लाएं

श्री **रामकृष्ण परमहंस** भारत में एक ऐसी आध्यात्मिक विभूति हुए हैं जिनकी सरल जीवन-पद्धति व अति सामान्य उपदेश-शैली की समानता प्रायः अन्यत्र नहीं। दक्षिणेश्वर का प्रसंग है कि वे बाग में अपने कुछ शिष्यों के साथ बैठे हुए थे और सामने ही थोड़ी दूर पर विभिन्न प्रकार की मुद्रायें बनाए बंदर भी आंख बंद किए बैठे थे, अचानक उन्होंने अपने समस्त शिष्यों का ध्यान उस ओर आकृष्ट कर इंगित किया, "...इन्हें देखो कितने भोले और साधारण बनकर बैठे हैं, लेकिन कोई सोच रहा होगा कि मुझे अभी उस पेड़ से जाकर आम तोड़ना है और किसी का ध्यान किसी के बगीचे में फले केलों पर होगा, और ये हुपऽऽऽ करके एक ही क्षण में वहां कूद जायेंगे . . . **ऐसे ही मेरे शिष्यों का भी ध्यान रहता है!"**

एक सहज रूप में कहे गए इस वक्तव्य के पीछे वास्तव में गम्भीर रहस्य छुपा है कि साधक जिसे अपना ध्यान कहता है या जिसे अपना ध्यान समझने की भूल कर बैठता है, वह वास्तव में उसका ध्यान होता ही नहीं क्योंकि उस समय उसकी बंद आंखों में भी एक काल्पनिक पर्दे पर विविध बिम्ब, विविध दृश्य आते और जाते रहते हैं। एक गम्भीर साधक के लिए यह स्थिति चिंतन का विषय होती है कि ऐसा क्यों होता है? ध्यान में

एकाग्रता और इन विभिन्न दृश्यों से मुक्ति की दशा क्या प्रयासपूर्वक प्राप्त की जा सकती है . . . ज्यों ही वह इस दिशा में और सक्रिय होता है, दृश्य, बिम्ब और अधिक तीव्र हो जाते हैं। वासनाओं की भीड़, विविध विचारों का कोलाहल, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या और ऐसे ही न जाने कितने संवेग, ज्यों बांध तोड़ कर चारों ओर छा जाते हैं।

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि जब तक हम ध्यान में नहीं जायेंगे, अपने मन की अतल गहराइयों को स्पर्श करने की कला नहीं सीख पाएंगे, तब तक हमें पूर्ण शांति और पूर्ण विश्राम प्राप्त नहीं हो सकेगा। **केवल कुछ क्षण के लिए आंख मूंद कर बैठ लेना और एक प्रकार से आत्मप्रवंचना कर लेने से कोई लाभ नहीं।** ध्यान तो इस प्रकार का होना चाहिए कि व्यक्ति जब चाहे अपने-आप को समस्त विचारों से काट कर विचार-शून्य हो सके, किसी एक बिंदु पर केंद्रित हो सके, यही ध्यान का वास्तविक अर्थ है। ध्यान का वास्तविक अर्थ ही अधिकांश साधकों के मन में स्पष्ट नहीं होता और इस विषय में जिस प्रकार से पूज्य गुरुदेव ने सर्वथा नवीन तथ्य दिए हैं वही ध्यान की यथार्थ परिभाषा है। पूज्यपाद गुरुदेव ने जड़ ध्यान की अपेक्षा सक्रिय ध्यान की अवधारणा प्रस्तुत की है। जिसके अनुसार ध्यान का अर्थ आंख बंद कर लेना और जड़ हो जाना नहीं है और न समाधि का अर्थ जमीन में गड़ जाना है। समाधि ही ध्यान की सर्वोच्च अवस्था है। वास्तव में समाधि और ध्यान में कोई विशेष अंतर है ही नहीं। जिसने भी ध्यान की ओर अपने को उन्मुख किया है वह वास्तव में समाधि-सुख का ही अभिलाषी है और **समाधि का तात्पर्य पूज्य गुरुदेव के अनुसार यही है कि व्यक्ति ब्रह्माण्डमय हो जाए। वह जड़-चेतन सभी से तादात्म्य स्थापित कर ले और यही वास्तविक सुख का मूल रहस्य है।** पूज्यपाद गुरुदेव के अनुसार जिस प्रकार ध्यान एवं समाधि में कोई विशेष भेद नहीं है, उसी प्रकार स्थूल व सूक्ष्म में भी कोई विशेष भेद नहीं है। व्यक्ति एक क्षण में ही स्थूल और ठीक उसी क्षण में ही सूक्ष्म दोनों ही हो सकता है और निरंतर इसी प्रकार की क्रिया सीख लेना, एक ही क्षण में दोनों भाव-भूमियों को स्पर्श करते रहना ही ध्यान में एकाग्रता का वास्तविक अर्थ है। ध्यान, इस स्थूल जगत से सूक्ष्म की यात्रा है, समस्त बाह्य चिंतनों से कटकर अंतर में प्रवेश की यात्रा— उस अंतस में जहां कोई कोलाहल नहीं, जहां विचारों की भीड़ नहीं। यह सत्य है कि व्यक्ति अपना भौतिक जगत की समस्याओं की

न यह जीवन शुभ है न अशुभ बस 'अस्ति' मात्र है . . . साक्षी बनना और एक ओर खड़े होकर निहारते रहना - यही तो ध्यान है! यही समाधि की भी यात्रा है . . .

उपेक्षा नहीं कर सकता, लेकिन वह ध्यानपूर्वक विचार करे तो अधिकांश समस्याएं केवल विचारात्मक स्तर के कारण होती हैं, विचारों के निरंतर कोलाहल के कारण होती हैं और इन अतिरिक्त विचारों को समाप्त करने की क्रिया ध्यान है जो स्थूल जगत से सूक्ष्म जगत की ओर जाने पर ही संभव है।

ध्यान के लिए बलात् कोई भी प्रक्रिया अपनाने की आवश्कता ही नहीं है। यह तो उसी प्रकार सहज और सरल है, जिस प्रकार जीवन के अन्य क्रिया-कलाप। थोड़ा सा एकान्त, पवित्र वातावरण, मन में एक आग्रह और शांति के स्रोत को ढूंढने की कामना, इन्हीं का समन्वित रूप है-ध्यान। जैसा कि पूज्यपाद गुरुदेव ने एक स्थान पर उद्घाटित किया है कि तुम मुझे प्राणों से आवाज दो और मैं तुम्हारे समक्ष उपस्थित हूं, ठीक यही स्थिति ध्यान की है। अपने प्राणों को झंकृत कर अपने गुरुदेव या अपने जीवन के एक चिंतन का स्पर्श करने की क्रिया ही ध्यान है। यह जब परिपक्व हो जाती है तो फिर यह गौण है कि आंखें खुली हैं अथवा बंद, क्योंकि जो कुछ हमारा अभीष्ट था वह जब हमें यों ही प्राप्त हो रहा है, मन की शांति और दिव्यता का एक आभामंडल आलोकित हो रहा है, तो वही ध्यान है और सक्रिय ध्यान है। इसी में निरन्तर व्यक्ति गतिशील रहता हुआ अपने सामान्य जीवन को भी भली-भांति जीता रहता है फिर उसे अलग से बैठकर पालथी मारने की आंख बंद करने की, कोई आवश्यकता नहीं रहती।

ध्यान में एकाग्रता आए, इसके लिए पहली और अन्तिम स्थिति है कि व्यक्ति सहज हो। वह मन में न तो कोई भ्रम पाले और न ऐसा कोई

मिथ्या गर्व कि मैं ध्यान कर रहा हूं! वास्तव में जब हम जिस क्षण ऐसे बोध से भर जाते हैं कि मैं एक श्रेष्ठ योगी हूं, मैं अध्यात्म पथ का यात्री हूं, मैं ध्यान कर रहा हूं, तो वही क्षण साधक के जीवन में सबसे अधिक घातक सिद्ध होता है। तब वह बलात् अपने मन को अनजाने में ही सही, एक दिशा में ठेल रहा होता है, जबकि ध्यान तो बलात् ठेलने की प्रक्रिया ही नहीं।

जिस प्रकार चीनी दार्शनिक **ताओ** को एक सूखा पत्ता उड़ते देखकर एक ही क्षण में समाधि लग गई, वही स्थिति हमें अपने जीवन में लानी ही है। जैसा कि उन्होंने एक क्षण में अनुभूत कर लिया कि मुझे भी इसी सूखे पत्ते की तरह अपने आप को छोड़ देना है, **ठीक यदि हम भी अपने मन को उस तरह छोड़ देने की कला जान लें और स्पष्ट शब्दों में कहें कि मन को खुला छोड़ देने का साहस कर लें, तो ध्यान हमें अगले ही क्षण उपलब्ध होगा।** आवश्यकता है इस प्रकार का साहस करने की ऐसा करने पर अनेक दबी वासनाएं, तृष्णाएं उभर आएंगी लेकिन व्यक्ति फिर भी इस पथ पर गतिशील रहे, क्योंकि अंततोगत्वा वह उसी शुद्ध चैतन्य घन का एक स्वरूप है। यदि उसमें कोई विकार है तो वह उसका अपना नहीं और यही क्रिया आगे चलते हुए एक दिन व्यक्ति को आप्तकाम व निष्काम कर देती है। एक पीड़ा अवश्य सहनी पड़ती है, लेकिन पीड़ा तो प्रत्येक सुखद स्थिति को जन्म देते समय सहनी ही पड़ेगी। या तो हम दुर्गन्ध से भरा यह मन-मस्तिष्क लेकर जीते रहें या इस क्रिया को अपनाकर सहज सुख, सहज समाधि को प्राप्त हो जाएं।

ध्यान की यह प्रक्रिया ही सर्वथा प्रामाणिक और आज के युग में अनुकूल है, न इसमें कोई जटिलता है, न कोई क्रम, न कोई मंत्र-जप और न बाह्य रूप से कोई भी अवलम्ब लेने की आवश्यकता। यह तो **'अप्प दीपो भव'** की क्रिया है और ध्यान भी एक दीपक प्रज्ज्वलित करने की ही तो क्रिया है। यदि बाह्य रूप से यह दीपक प्रज्ज्वलित हो भी गया तो, उसे ऊर्जा कब तक बाहर से मिलती रहेगी? इसके लिए तो उसे उस स्रोत तक की यात्रा करनी ही पड़ेगी जहां से उसे निरंतर ईंधन मिलता रहे और वह अपने जीवन को सदैव प्रकाशित व आलोकित बनाए रख सके।

यह क्रिया केवल इसी प्रकार से संभव हो सकती है, अपने मन को स्पर्श कर, अपनी तृष्णाओं, इच्छाओं और द्वन्दों को समझ कर, फिर व्यक्ति स्वयं ही ध्यान की एकाग्रता की ओर अग्रसर हो सकता है। ❋

सौभाग्य, सम्पन्नता, आरोग्य, सौन्दर्य
सही ज्ञान, उत्तम मार्ग यही तो है
सही मायनों में जीवन की पूर्णता

. . . और यही सम्भव है केवल प्रामाणिक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों के माध्यम से जो रचित है डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी द्वारा

१.गुरु सूत्र -
जब पूज्य गुरुदेव ने स्वयं ही बता दिये हों गुरु साधना के समस्त रहस्य, कि पाठक परिपूर्ण कर ले अपना जीवन **मूल्यः २०/-**

२. हिमालय का सिद्ध योगी
एक असाधारण व्यक्तित्व! मात्र एक लौकिक पुरुष ही नहीं एक देवदूत का इस धरा पर आगमन दिव्यात्मा के द्वारा वर्णित साधना जगत की कुछ घड़ियां **मूल्य : ३५/-**

३. मुहूर्त ज्योतिष -
यदि पंचांग नहीं भी देखना आता हो तब भी आप अपने पर्व और उत्सव का निर्धारण सहज रूप में कर सकते हैं, इस पुस्तक की सहायता से, एक लघु ग्रंथ **मूल्यः ३०/-**

४. स्वर्ण तंत्रम्-
भारत की कीमियागीरी जगत विख्यात रही है, स्वर्ण बनाना भी दुर्लभ नहीं था प्राचीन भारत में, स्वर्ण साधना के रहस्यों को वर्णित करती एक अनोखी पुस्तक
मूल्यः ३०/-

५. निखिलेश्वरानंद रहस्य -
प्रत्येक आध्यात्मिक चिंतन से युक्त व्यक्तित्व के ओठों पर उच्चरित होने के योग्य स्तवन पाठ
मूल्यः ३०/-

६. लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग - जैन ग्रंथों, साबर मंत्रों और विभिन्न पद्धतियों में से चुने हुए वास्तव में दुर्लभ प्रयोग, सहजता से अपनाने के लिए **मूल्यः ३०/-**

७. भौतिक सफलताएंः साधना एवं सिद्धियां -
आध्यात्मिक पक्ष भी सफल होता है भौतिक जीवन की सफलता से, दैनिक जीवन में आने वाले कष्टों का निवारण स्वयं करने में आप भी समर्थ हो सकेंगे ही. . .
मूल्यः ३०/-

८. महालक्ष्मी साधना एवं सिद्धि -
लक्ष्मी नहीं महालक्ष्मी! अर्थात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीयता, प्रत्येक पक्ष में वैभव की जगमाहट, **'श्री'** का प्रकाश
मूल्य : ३०/-

९. विश्व की अलौकिक साधनाएं - वायु गमन, परकाया प्रवेश, पक्षी शब्द ज्ञान जैसी विद्याएं केवल वर्णन या कौतूहल का ही विषय नहीं वे पूर्णतयः सत्य और प्रामाणिक हैं, दुर्लभ और अलौकिक साधनाओं को सर्व सुलभ करने का प्रथम प्रयास पुस्तक के रूप में
मूल्य : ३०/-

सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
हाई कोर्ट कॉलोनी, श्रीमाली मार्ग,
जोधपुर(राज.)-३४२००१,
फोनः०२९१-३२२०९

(पृष्ठ १७ का शेष)

तुरणी -

यह पदार्थ तांत्रिक क्रियाओं में अनजाना नहीं है--
१. यदि पुत्र-प्राप्ति की इच्छा हो तो तुरणी का एक टुकड़ा धारण कर लेना एक सफल टोटका है।
२. काकबन्ध्या (अर्थात् एक संतान के बाद अन्य संतान न होना) की स्थिति में तुरणी का एक छोटा सा टुकड़ा कमर पर बांध दे।

अंतुला -

आक की जड़ों में सौभाग्यवश कभी-कभी मिल जाने वाली अनोखी गुटिका जिससे--
१. यदि अंतुला को कंठ में धारण कर व्यक्ति किसी को श्राप अथवा आशीर्वाद दे तो वह अचूक होता ही है।
२. ताबीज में अंतुला भरकर धारण करने से **दिव्य दृष्टि** प्राप्त करने में समर्थ होता है।

बेतुना -

जिस प्रकार एकमुखी रुद्राक्ष की प्राप्ति दुर्लभ है उसी प्रकार बेतुना की प्राप्ति भी--
१. प्रतिष्ठान, फैक्ट्री अथवा मकान का निर्माण कराते समय एक बेतुना नींव में विधिपूर्वक स्थापित करने से श्री एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।
२. बेतुना को गले में धारण करने से व्यक्ति को प्रत्येक साधना में सफलता प्राप्त होने की क्रिया आरम्भ हो जाती है।

वक्त्रामृत -

मूलतः तांत्रिक प्रयोज्य वस्तु होते हुए भी इसका उल्लेख नाविक-शास्त्र के ग्रंथों में ही अधिक मिलता रहा--
१. क्योंकि प्रत्येक विदेश यात्रा का इच्छुक व्यक्ति वक्त्रामृत को अपने हृदय के पास ही रखता है।
२. जिनकी साहसिक और रोमांच से भरे कार्यों में रुचि हो वे भी वक्त्रामृत को किसी न किसी रूप से धारण अवश्य करें।

सोगुणी -

सोगुणी का विस्तृत वर्णन **"तंत्र प्रभा"** नामक ग्रंथ में मिलता है--
१. किसी भी प्रकार की कोई भी **अप्सरा साधना** हो उसमें सोगुणी को रखना शुभ माना गया है।
२. यदि यक्षिणी साधनाओं में सोगुणी को धारण कर बैठा जाए तो कोई भी भय या बाधा उपस्थित नहीं होती और सिद्ध प्राप्त होती है।

डुंगरू -

डुंगरू, जो देखने में बीज के समान होता है, अपने आप में तंत्र का विशाल वृक्ष समेटे है--
१. यदि घर के चारों ओर डुंगरू के दाने बिखेर दिए जाएं तो एक दैवी रक्षा-चक्र निर्मित हो जाता है।
२. पितृ दोष या दूषित आत्माओं की उपस्थिति होने पर तांबे के एक खोखले तावीज में डुंगरू के दाने भर कर घर में टांग देना लाभप्रद रहता है।

नफीसी -

यह मुस्लिम तंत्र का एक सफल टोटका है और अचूक फल देने में समर्थ है--
१. यदि अमावस्या की रात्रि में एक कुल्हड़ में सात मिर्च के टुकड़े, सरसों के दानों को नफीसी के साथ किसी तिराहे पर रख दिया जाए तो सभी प्रकार की तांत्रिक बाधाओं से छुटकारा मिल जाता है।
२. जिस अंग में पीड़ा रहती हो वहां नफीसी हरे कपड़े से बांध दें, ऐसा करने से आहिस्ता-आहिस्ता राहत मिलने लगेगी।

निड्डूर -

निड्डूर की प्राप्ति का स्थान भी अनोखा है, भूमि से नहीं वरन् समुद्र से मिलने वाली--
१. जिनका जीवन अस्त-व्यस्त रहता हो बार-बार स्थानान्तरण होता रहता हो अथवा कार्य स्थायी रूप से न जम रहा हो तो उसे निड्डूर का ही सहारा लेना चाहिए।
२. मन में उहापोह रहती हो या व्यवसाय का चुनाव न कर पा रहे हों तो निड्डूर धारण करने से स्वतः ही मार्ग सूझने लगता है।

तिलतिला -

वास्तव में यह गृहस्थ व्यक्ति के लिए तंत्र का उपहार है--
१. तिलतिला गर्भ-निरोध का एक सुरक्षित उपाय है जिससे व्यक्ति को कृत्रिम उपायों को अपनाने की बाध्यता नहीं रहती।
२. रविवार अथवा शुक्रवार के दिन पीपल के पत्ते के साथ तिलतिला को नाभि पर बांधने से अतिरजोस्राव में लाभ मिलता है।

रतिललित -

रतिललित की खोज वज्रयान के साधकों ने की थी

जिससे--
१. यदि यौवन ढल गया हो और मन में उत्साह और उमंग मंद पड़ गया हो तो निःसंकोच रतिललित को धारण करना चाहिए।
२. यदि पति-पत्नी दोनों ही इसे धारण कर लें तो पुत्र प्राप्ति होती है।

गंदुमी -

गहरे रंग का यह पत्थर वास्तव में एक उपरत्न है--
१. जिनकी गंधर्व-साधना या विद्या में रुचि हो उन्हें प्रयत्न कर इसकी प्राप्ति कर ही लेनी चाहिए।
२. यदि वाणी में भोंडापन हो या वाणी से किसी को प्रभावित करने में असमर्थ रहते हों तो गन्दुमी, तंत्र-वरदान है।

कैवल्यमणि -

''तंत्र ज्योति'' में स्पष्ट कहा गया है कि जिसके पूर्वजन्म के पुण्य जाग्रत होते हैं, वही इसे प्राप्त करने में समर्थ होता है--
१. जो सात्विक साधनाओं - गुरु साधना, गणपति साधना, भुवनेश्वरी साधना में रुचि रखते हों उन्हें यह मणि विशेष प्रभाव देती है।
२. रात्रि के अंधकार में यदि इसे टकटकी बांधकर देखें तो इसमें से श्वेत किरणें निकलती दिखाई देती हैं, जिसके सामने बैठने से ही चित्त शांत और विचार शून्य होने लग जाता है तथा भूत - भविष्य दिखने लगता है।

अर्ध सिंहली -

कुछ विद्वानों के अनुसार यह मूलतः दक्षिण-पूर्व के तांत्रिकों की खोज है ।
१. जिसके पास अर्ध सिंहली होती है उसकी आज्ञा का पालन करने में अन्य व्यक्ति हर्ष अनुभव करते हैं।
२. अर्ध सिंहली को सोने या चांदी में धारण करने से व्यक्ति का शरीर वज्र के समान दृढ़ हो जाता है।

हंसमुक्तक -

यह दक्षिण मार्गी तांत्रिक साधनाओं की एक श्रेष्ठतम उपलब्धि है--
१. यदि बालक पढ़ाई में कमजोर हो, चंचल हो या उसका मन पढ़ाई में न लगता हो तो उसके गले में हंसमुक्तक अवश्य ही धारण करा देना चाहिए।
२. हंसमुक्तक धारण करने वाले व्यक्ति में बुद्धि-चातुर्य और संकेतों को समझने की क्षमता का अलौकिक ढंग से विकास हो जाता है।

शिरोसुरा -

कहते हैं कभी केवल नृपगण अपने मुकुट में इसको मणि की भांति धारण करते थे--
१. एक शिरोसुरा श्वेत पुष्पों तथा चांदी के छोटे से टुकड़े के साथ होलिका-दहन की रात्रि में अग्नि में समर्पित कर देने से व्यक्ति नृप के समान ऐश्वर्यवान बन जाता है।
२. श्वेत चंदन में लपेट कर शिरोसुरा को निरंतर मस्तक में धारण करने वाला व्यक्ति भूगर्भ-ज्ञान का श्रेष्ठ ज्ञाता होता है।

कालप्रभा -

जिसके पास कालप्रभा का बल होता है वह तंत्र के क्षेत्र में प्रकाण्ड विद्धान होता है--
१. कालप्रभा को निरंतर धारण किए रहने से व्यक्ति को **छाया पुरुष की सिद्धि** मिलने लग जाती है, जो अदृश्य रहते हुए भी उसे आगामी जीवन के सभी रहस्य बताता रहता है।
२. यदि मृत्यु आसन्न संकट हो तो एक कालप्रभा को किसी प्राचीन सरोवर या वटवृक्ष के मूल में गाड़ते ही लाभ मिलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

दत्तात्रेय मुद्रिका -

तंत्र के क्षेत्र में रुचि हो और व्यक्ति की उंगली में **दत्तात्रेय मुद्रिका** न हो, इससे बड़ा विरोधाभास और क्या होगा? –
१. ऐसे व्यक्ति को धीरे-धीरे अपना भूत और भविष्य तो ज्ञात होता ही है वह दूसरों के विषय में भी ऐसी क्षमता प्राप्त कर लेता है।
२. कोई तांत्रिक प्रयोग गलत भी हो जाए तब दत्तात्रेय मुद्रिका उसका विपरीत प्रभाव अपने ऊपर ले लेती है।

तंन्त्राणामतिगूढ़त्वात् तद्भावोऽप्यतिगोपितः।
ब्राह्मणो वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो बुद्धिमानवशी।।

तन्त्रों के अत्यन्त गूढ़ होने के कारण उनका भाव भी अत्यन्त गुप्त है। वेद व शास्त्रों के अर्थ तत्वों को जानने वाला बुद्धिमान ब्रह्मवेत्ता ही उनका ज्ञाता हो सकता है।

वेदसारशिवस्तवः

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद् गंगवारिं
महादव मेकं स्मरामि स्मरामि ।।
महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम् ।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं
सदानन्दमीड्ये प्रभुं पञ्चवक्त्राम् ।।
गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगम्
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्राम् ।।
शिवाकान्त शम्भो शशांकार्धमौले
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ।।
परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकार ओंकारवेद्यम् ।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ।।
न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु-
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमर्तिं तमीड्ये ।।
अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ।।
नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ।।
प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेशं त्रिनेत्रा ।
शिवाकन्त शांत स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ।।
शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-
स्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ।।
त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिंगात्मक हर चराचरविश्वरूपिन् ।।
इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतो
वेदसारशिवस्तवः सम्पूर्णः ।।

साधना सिद्धि

यदि साधना में बाधाएं आ रही है या साधना में सिद्धि नहीं मिल रही है तो हमें लिख भेजें (अपना पता लिखा लिफाफा साथ में आना आवश्यक है) हम आपके लिए सहायक हैं, आपको लिख भेजेंगे कि किस प्रकार से आप सफलता पा सकते हैं।

रेशम से भी ज्यादा कोमल निर्झर रूपा अप्सरा

उतरती शाम जैसी ही उत्तेजक गुलाबी रंगत सारी की सारी देह . . . जो कुछ और गहरा गई नजाकत से . . . . . .रेशम से भी ज्यादा कोमल बन!

ठगा सा खड़ा रह गया मैं, . . . रूप का निर्झर! कि कोमलता का! या फिर अंग-प्रत्यंग की रेशम जैसी कोमल गढ़न में ढला हुआ हल्का मांसल बदन . . . निर्झर! भिगोता चला गया मेरी आंखों से लेकर अंदर गहरे कहीं दूर तक . . . सारे तन को हल्की सनसनाहट से भरता हुआ . . . रही-सही कसर उसके अंगों की दर्शनीयता से पूरी हो रही थी . . . . जो कुछ सौन्दर्य के झकोरे नहीं कह पा रहे थे वह अंगों की गोलाइयां और उनकी कोमलता खुद ब खुद बोल रही थी।

आभूषण तो बस एक बहाना बन गए थे शरीर के सौन्दर्य को दिखाने का . . . सभी उभारों को स्पष्ट करने का, और उनके कसाव में अंग-प्रत्यंग थिरक-थिरक कर नृत्य करने को व्यग्र हो रहा था , ज्यों वे आभूषण न होकर संगीत के वाद्य यंत्र हों . . . बस देह को छुआ नहीं और यौवन का नृत्य प्रारम्भ हो गया, मादकता का निर्झर बहता साधक को बेसुध करने की सीमाएं तोड़ चला . . . यदि उन्नत वक्षस्थलों के कम्पन न हो रहे होते तो क्या कोई चित्रलिखित दृश्य ही नहीं था . . . ऐसा सौन्दर्य तो केवल कवियों की पंक्तियों में या फिर शिल्पकारों के हाथों में छुपे जादू से ही गढ़ा गया है . . . **किसने गढ़ा होगा यह सौन्दर्य, किन क्षणों में और कैसे . . . कौन होगा वह शिल्पकार और कैसे वह संयत रह गया होगा इतनी मादकता को एक ही देह में भरते हुए, उसमें प्राण डालते समय . . .**

कहते हैं, समुद्र मंथन में उत्पन्न हुई थीं साठ करोड़ अप्सराएं, देवताओं और साधकों के मन को

रंजन करने के लिए और उसको देखकर मेरे मन में हो रही सारी उथल-पुथल क्या किसी समुद्र मंथन से कम थी . . .

ज्यों समुद्र के खारे जल में भीग कर लावण्य ही लावण्य अपने सारे तन में समाए, उनको कटावों पर बिखेरे आ गई हो निर्झर रूपा . . . जैसा नाम वैसी ही अठखेलियां, वैसा ही तन और वैसी ही आंखें . . . घनी पलकों और बरौनियों के बीच में से झांकती . . . मूक आमंत्रण लिए चमकती और कौंध से भरी, प्रेमिका की मूक निमंत्रण देती आंखें . . .

एक ओर लज्जा से भरी-भरी और दूसरी ओर प्रबल आग्रह भी . . . अपने सिद्ध साधक की देह में जाकर घुल-मिल जाने का . . . मादकता के खिले हुए पिंगल वर्ण में यौवन की घटा गुलाबी रंगत भरकर उत्तेजना का एक नया ही रंग गढ़ गई थी।

नृत्य तो मैंने कई अप्सराओं के देखे, उनको सराहा भी, उनसे आनन्दित भी हुआ और रोमांच भी मिला लेकिन कोई इस प्रकार बिना थिरके ही नृत्य की घटा सी छा जाएगी, इसकी तो कभी कल्पना ही नहीं की थी, यह तो नाट्य- शास्त्र का एक नया ही अध्याय था! . . . **संगीत की स्वर लहरियों जैसे ही ढले थे जिसके अंग-प्रत्यंग, अलाप की तरह उठते हुए उभार और अवरोह की तरह क्षीण होती कटि, ग्रीवा और कलाईयां,** सचमुच ही सौन्दर्य साधना के सिद्धतम साधक को भी एक बार विवश कर देने के लिए सक्षम, उसकी रग-रग में तूफान उठा देने की साकार मूर्ति, एक निर्झर बह उठा मेरे मन में . . . ज्यों एक झरना उछल कर गिरे और फिर उठ जाए!

बस रेशम की छुअन ही नहीं, संगीत का आरोह - अवरोह भी. . .
और देह ही नहीं बिखरी रेशम के ढेर की तरह संगीत के बोल भी छिटक गए, गुनगुनाकर मंद होते हुए. . .
झरने की तरह

अचानक ही मिल गई थी मुझे

यह साधना, जिस तरह अचानक उपस्थित हो गई निर्झर रूपा। इतर योनियों के आचरण और साधनाओं पर शोध करते समय एक ग्रंथ में केवल निर्झर रूपा नाम और कुछ अटपटी सी साधना विधि प्राप्त हुई थी। अप्सरा वर्ग की स्त्री होने की कल्पना भी मेरे मन नहीं आ सकी। उस ग्रंथ में यह साधना मुझे जिस प्रकार से मिली, उसे ज्यों का त्यों मैं यहां देने में कोई झिझक नहीं अनुभव कर रहा हूं क्योंकि **यह तो साधना जगत का एक अजीब सा रहस्य है कि कोई अप्सरा साधना इतर योनियों की साधनाओं के बीच कैसे जा मिली।**

उस अज्ञात ग्रंथ में बिना किसी संदर्भ या विवरण के एक स्थान पर मात्र इतना ही लिखा हुआ था कि होली की रात को १२ बजे एकांत में बैठें, नदी का तट, अशोक वृक्ष का मूल अथवा कोई सुनसान जंगल हो तो अधिक उचित और फिर भोज-पत्र पर अष्ट गंध से निम्न यंत्र बनाकर प्रत्येक खाने में एक-एक **मकर केतु** रखें और इनके ऊपर कोई भी सुगंधित फूल चढ़ा कर घी का दीपक जला दें और फिर सुंदर मनोहर विविध मनकों और रत्नों से बनी **नवतिका माला** से यह मंत्र उसी रात में १ माला जप लें।

(निर्झरा यंत्र)

७	५	६
२	४	३
१	८	९

मंत्र -

ॐ इलि इलि गिलि गिलि चुली चुली प्रौं सिंगी सिंगी रूपा अरूपा निर्झरा निर्झरा रूपा प्रिया प्रियतमा इलन इलन हलौ हलौ आगच्छ आगच्छ रस देहि देहि फट्

टेसुओं के फूल का मादक पीलापन, अबीर का उत्तेजक गुलाबीपन, यौवन की लालिमा और आंखों का नीलापन . . . क्या रंग नहीं छुपे हैं इस निर्झर रूपा अप्सरा की देह में।

मंत्र-जप समाप्त होते ही घी का दीपक फूंक मारकर बुझा दें और दीपक में पड़ा घी अपने दोनों पैरों के तलुओं पर मल कर नौ मकर केतु के दाने अलग-अलग दिशाओं में फेंक, भोजपत्र साथ ले, बिना पीछे मुड़ कर देखे वापस आ जाएं और किसी से भी इस साधना के रहस्य अथवा अनुभव न बताएं। यदि साधक एकांत कमरे में साधना कर रहा हो, तब भी इसी प्रकार से करें और दूसरे दिन सुबह भोज-पत्र पर अंकित यंत्र अपनी बांह या गले में किसी ताबीज में भरकर धारण कर लें। दूसरे दिन पुनः रात्रि में केवल उपरोक्त माला से इसी मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें। यह मंत्र-जप साधक अपनी इच्छा से कहीं पर भी बैठकर कर सकता है, जैसे वस्त्र चाहे धारण कर सकता है और मंत्र जप में निष्कम्प भाव से बिना भयभीत हुए मंत्र जप करता रहे, जब एक यौवनमयी रूपसी सामने आए तो उसका दाहिना हाथ पकड़ कर मंत्र बोले . . .

मंत्र

ॐ निर्झरा इलि हिन्

. . . एक रेशम के थान की तरह ही निर्झर रूपा का तन मेरे सामने बिखरा था, जो न मुट्ठियों की भींच में आ रहा था और न समेटे सिमटने वाला था, बस उसकी **धूप-छांव जैसी कुछ गुनगुनाहट से और कुछ शीतलता से भरी देह** के साथ-साथ मेरा मन सूखे पत्ते की तरह थिरक रहा था, किसी प्रकार संयत कर उसका कोमल हाथ मैंने अपने हाथ में लेकर बड़ी कठिनाई से उपरोक्त मंत्र बोला **और अगले ही क्षण . . .**

यही क्षण थे जब मैं जान सका कि मुझे एक अप्सरा सिद्ध हो गई है और ऐसी अप्सरा जो अपने-आप में अनोखी है। अनजाने में ही मेरे हाथ एक अत्यन्त दुर्लभ साधना आ गई, जो भूल से इतर योनियों की श्रेणियों में जा गिरी थी। इसी से इसका नाम किसी ग्रंथ में या १०८ अप्सराओं के मध्य नहीं मिल पाता। संभवतः इसका कारण यह है कि ऐसी श्रेष्ठ अप्सरा की साधना को किसी साधक ने कालान्तर में गोपनीय कर दिया हो और सामान्य जन को भ्रम में डालने के लिए उसका नाम एक इतर योनियों की पुस्तक में डाल दिया हो।

साथ में होली के पर्व पर सिद्ध किए जाने के कारण यह संदेह और भी अधिक गहरा हो जाता है, लेकिन **यह तो होली का उपहार है जिसका एक-एक रंग निर्झर रूपा के देह और कटाक्षों में भरा है, गुलाल और अबीर से भी ज्यादा जो बिखेर देती है होली के रंग साधक पर, बस एक दिन के लिए नहीं हमेशा-हमेशा के लिए!**
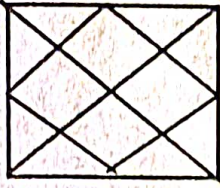
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

पंकज कुमार शर्मा, पठानकोट
प्रश्न - **क्या मुझे गैस एजेंसी फायदेमंद रहेगी?**
उत्तर - नहीं

दिव्यान्सु याज्ञिक, बम्बई
प्रश्न - **मेरी कुंडली में शनि शुभ है या अशुभ?**
उत्तर - शुभ फलदायक है।

विजय कुमार तोदी, राउरकेला
प्रश्न - **अच्छे समय की कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?**
उत्तर - दो वर्ष पश्चात् ही पूर्ण मानसिक संतोष मिलेगा।

आनंद शंकर पाण्डेय, पश्चिम सिक्किम
प्रश्न - **कौन सी दीक्षा उपयुक्त रहेगी?**
उत्तर - तंत्र दीक्षा।

इनेश सिन्हा, पटना
प्रश्न - **मेरा स्वास्थ्य कैसा रहेगा?**
उत्तर - सामान्यतः ठीक नहीं रहेगा।

इंदरजीत सिंह, पटियाला
प्रश्न - **राजकीय सेवा में स्थायित्व कब तक?**
उत्तर - अभी लगभग छह माह कठिन है।

गोपाल खड़का, काठमाण्डू
प्रश्न - **टेक्नीकल क्षेत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर - नहीं

रणजीत कुमार, होशियारपुर
प्रश्न - **क्या मुझे शशिदेव्य अप्सरा की साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर - हां।

अर्चना, लखनऊ
प्रश्न - **पुत्र लाभ कब तक?**
उत्तर - इस वर्ष सुयोग निर्मित होगा।

राकेश कुमार, आगरा
प्रश्न - **चित्त अस्थिर है, क्या करूं?**
उत्तर - पुखराज रत्न धारण कर वृहस्पति मंत्र -जप करें।

विष्णु दत्त शर्मा, दिल्ली
प्रश्न - **संतान सुख कब तक?**
उत्तर - योग क्षीण है।

दीपक ओमहरे झांसी
प्रश्न - **मैं नौकरी करूंगा या व्यवसाय?**
उत्तर - आपके लिए नौकरी करना ही उपयुक्त रहेगा।

टी० राजन, अण्डमान
प्रश्न - **सरकारी नौकरी हेतु किस क्षेत्र में प्रयास करूं?**
उत्तर - सिंचाई विभाग, जनसम्पर्क विभाग अथवा सार्वजनिक निर्माण विभाग में।

अजीत कुमार नायक, रांची
प्रश्न - **नौकरी कब तक मिलेगी या नहीं?**
उत्तर - आपका भाग्योदय स्वव्यवसाय में ही होगा।

परमजीत कुमार, अम्बाला
प्रश्न - **नौकरी कब तक मिलेगी?**
उत्तर - अस्थायी नौकरी दो माह से तीन माह के भीतर, स्थायी वर्ष १९९७ में।

सुरेश चंद्र, नारनौल
प्रश्न - **मुझे किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर - गुरु साधना अथवा किसी सौम्य सात्विक साधना में।

कैलाश नाथ मिश्र, अम्बाला छावनी
प्रश्न - **नौकरी सम्बंधी विवाद का क्या होगा?**
उत्तर - निर्णय आपके पक्ष में होगा किंतु मध्य के लगभग दो वर्ष अत्यन्त कठिन रहेंगे।

सोम प्रकाश, देहरादून
प्रश्न - **ऋण मुक्ति का उपाय बताएं?**
उत्तर - भैरव साधना पूर्ण क्षमता से करें।

राममेहर सिंह मलिक, जींद
प्रश्न - **सफलता किस क्षेत्र में? रत्न बताएं।**
उत्तर- अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में विशेष लाभ मिलेगा। पन्ना धारण करें।

पुण्डरीकाक्ष शर्मा, अलवर
प्रश्न - **संतान कब तक होगी?**
उत्तर - पूर्ण विवरण भेजें।

कृष्ण लाल वैष्णय, सिरोही
प्रश्न - **मकान कब तक बनेगा?**
उत्तर - वर्तमान में सम्भव नहीं।

राकेश कुमार भटनागर, दिल्ली
प्रश्न - **ऋण मुक्ति का उपाय बताइए?**
उत्तर - ऋण मुक्ति दीक्षा प्राप्त करें।

मलकीत सिंह, कोटकपुर
प्रश्न - **भाग्योदय कब तक?**
उत्तर - साढ़े सात माह पश्चात् स्थितियों में परिवर्तन होगा।

महेन्द्र कुमार शर्मा, जयपुर
प्रश्न - **स्वयं का मकान कब बनेगा?**
उत्तर - स्वगृहयोग नहीं है किंतु आवास का कष्ट भी नहीं होगा।

बी० प्रभुदास पटेल, कच्छ, (गुजरात)
प्रश्न - **मुझे किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर - अप्सरा साधनाओं में।

रीता बामनी, लुधियाना
प्रश्न - **मुझे नौकरी कब मिलेगी?**
उत्तर - वर्तमान में नौकरी का योग नहीं। अस्थायी रूप से प्राइवेट सैक्टर में कोई कार्य प्राप्ति सम्भव।

सौ० रंजना आर० खरड, अमरावती
प्रश्न - **क्या पुत्र लाभ सम्भव है?**
उत्तर - हां।

महादेव भट्टाचार्य, हजारीबाग
प्रश्न - **क्या मुझे साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर - योग-मार्ग आपके लिए अधिक सहायक होगा।

आलोक प्रकाश, इलाहाबाद
प्रश्न - **किसी कार्य में स्थिति सम्पल नहीं रही।**
उत्तर - तीव्र तांत्रिक प्रयोग। निराकरण का उपाय करें।

नीरजा गुप्ता, फरीदाबाद
प्रश्न - **भाग्योदय कब तक?**
उत्तर - पूर्ण भाग्योदय वर्ष १९९५ में।

रवीन्द्र कुमार बंसल, लुधियाना
प्रश्न - **मनोकामना कब पूर्ण होगी?**
उत्तर - मार्च ९४ से स्थितियों में सुधार आरम्भ होगा।

सन्मान सिंह कुशवाह, विदिशा
प्रश्न - **पेट में गांठ का निदान क्या है?**
उत्तर - तंत्र निवारण प्रयोग अथवा भैरव साधना।

कूपन क्रमांक :- ११६ (कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-...

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव
पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

राशिफल

मेष - सामान्य उतार - चढ़ाव का माह जिससे हतोत्साहित होना ठीक नहीं। स्वास्थ्य में खिन्नता रहेगी व अर्थागम के स्रोत मध्यम होंगे। आकस्मिक खर्चों से असंतुलन और बढ़ेगा। पत्नी का व्यवहार मन में खेद प्रदान करने वाला होगा। अतिथियों के आगमन से व्यस्तता रहेगी। कई महत्वपूर्ण कार्य बीच में रुक जाएंगे। नौकरी पेशा व्यक्तियों की जिम्मेदारी बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग ग्राहकों की आवाजाही मंद पड़ने से चिंतातुर रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति मन में उच्चाटन की स्थिति रहेगी। शत्रु पक्ष से सावधान रहे तथा वाहन के प्रयोग में भी सावधानी बरतें।
अनुकूल साधना- गणपति।
महत्वपूर्ण दिवस-रविवार।

वृषभ - यात्राएं अनुकूल रहेंगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य को पूर्णता प्रदान करने में समर्थ होंगे। दूरस्थ स्थानों से विशेष अनुकूल समाचार प्राप्त होंगे। आलस्य का त्याग करना आवश्यक है अन्यथा महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाने की भी सम्भावनाएं हैं। फिजूलखर्ची में कटौती लाना आवश्यक है। आय के स्रोत उत्तम रहेंगे। पत्नी से विचारों में मतभेद रहेगा। परिवार की ओर से किंचित उदासीनता भी बनी रहेगी। शत्रु पक्ष निष्क्रिय होगा। व्यापार में विविध कारणों से चिंता बनी रहेगी।
अनुकूल साधना-कौमारी।
महत्वपूर्ण दिवस-मंगलवार।

मिथुन - दाम्पत्य जीवन में मतभेद से पूरे माह मन में खिन्नता रहेगी। आय-व्यय चक्र संतुलित रहेगा। नौकरी पेशा वर्ग को अधिकारियों की ओर से कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु पक्ष की चालों से सावधान रहें। यात्राओं का विचार फिलहाल छोड़ दें। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता आएगी। सौन्दर्य व वेशभूषा में मन अधिक लगेगा और इस तरह से धन का व्यय भी होगा। राज्य पक्ष से अनुकूलता रहेगी। कोई पूर्व परिचित मिलने से मन में हर्ष रहेगा। आमोद-प्रमोद के भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध होंगे। शेयर आदि में धन लगाने के लिए अनुकूल माह है। १७ तारीख सभी दृष्टियों से आपके लिए अनुकूल रहेगी।
अनुकूल साधना-कार्तिकय।
महत्वपूर्ण दिवस-सोमवार।

कर्क - कोई चिर-प्रतीक्षित मनोकामना पूर्ण होगी। आर्थिक उन्नति के नये-नये अवसर प्राप्त होंगे। सामाजिक सम्पर्क बढ़ेंगे तथा व्यस्तता भी। अध्ययन के क्षेत्र में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। मन में उल्लास और प्रसन्नता रहेगी। विवाह के क्षेत्र में आ रही बाधाएं दूर होंगी। प्रेम-प्रसंगों में प्रगाढ़ता आएगी। व्यापारी वर्ग को कुछ उतार-चढ़ाव देखने पड़ सकते हैं। नौकरी पेशा वर्ग को कार्यों की अधिकता से झुंझलाहट बनी रह सकती है। ज्योतिष के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी।
अनुकूल साधना- भुवनेश्वरी।
महत्वपूर्ण दिवस-बुधवार।

सिंह - विरोधी अड़ंगे लगाते ही रहेंगे। किसी षडयंत्र का पता चलेगा। प्रतिष्ठा के प्रति सतर्क रहें। सामाजिक सम्पर्कों में प्रगाढ़ता आएगी। जो लोग राजनीति में सक्रिय हैं उनको विशेष अनुकूलता प्राप्त हो सकेगी। महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि होगी तथा इस दिशा में अनेक अनुकूल अवसर भी उपस्थित होंगे। किसी महत्वपूर्ण कार्यों के मध्य अनावश्यक रूप से व्यवधान आ जाने से चिंतातुर रहेंगे। जो व्यक्ति शेयर मार्केट में रुचि रखते हैं वे इस माह का अधिक से अधिक लाभ लेने का प्रयास करें। व्यापारी वर्ग सम्पूर्ण रूप से अनुकूलता और आर्थिक लाभ प्राप्त करेगा।
अनुकूल साधना-सूर्य साधना।
महत्वपूर्ण दिवस-बुधवार।

कन्या - आय-व्यय के संतुलन को बनाए रखने में व्यस्त रहेंगे। दूरस्थ परिजनों की चिंता से मन में उथल-पुथल रहेगी। आय की स्थितियों में सुधार होगा तथा जमा-पूंजी में भी वृद्धि होगी। कहीं से सुखद समाचार मिलेगा। मन में सामाजिक सम्पर्कों एवं खुद अपने प्रति भी उदासी जैसी रहेगी। व्यापारी वर्ग आगामी समय के लिए महत्वपूर्ण समझौते कर सकता है। शत्रुओं की गतिविधियां शांत होंगी। यात्राएं मध्यम ही रहेंगी। दाम्पत्य जीवन में नीरसता आएगी। संतान की ओर से सुख मिलेगा।
अनुकूल साधना-यक्षिणी।
अनुकूल दिवस-मंगलवार।

तुला - यह माह आपके लिए विशेष अनुकूल सिद्ध होगा। आपके जीवन में सुखद परिवर्तन होगा। चिर-प्रतीक्षित कामना की पूर्ति होने के आसार हैं। प्रवास का काल समाप्त होगा तथा प्रियजन से मिलन होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से मामूली से उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आय की दृष्टि से अभी कुछ समय तक स्थिति मध्यम रहेगी किंतु शीघ्र ही आय का स्थायी स्रोत प्राप्त होगा। मन में उत्फुल्लता रहेगी तथा मित्रों से विशेष सहयोग मिलेगा। राज्य-पक्ष से स्थितियों में कोई सुधार नहीं होगा। दाम्पत्य जीवन संतोषजनक रहेगा।
अनुकूल साधना-गणपति।
महत्वपूर्ण दिवस-बुधवार।

धनु - परिवार के किसी वृद्ध सदस्य के द्वारा आपकी समस्याओं का निराकरण होगा। मानसिक संतोष की स्थितियां बनेंगी। मन में सद्विचारों की प्रबलता रहेगी। सम्भव है कि किसी तीर्थ स्थान की यात्रा का सुयोग भी निर्मित हो। आगामी दृष्टि से यह माह पूर्ण सफलतादायक है। व्यय पर नियंत्रण स्थापित होगा। संतानों के विवाह में आ रही अड़चनें दूर होंगी। प्रेम-प्रसंग का परित्याग करना ही आपके व्यक्तित्व के अनुकूल रहेगा। नौकरी पेशा व्यक्ति भी संतोष का अनुभव करेंगे। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
अनुकूल साधना- हनुमान
महत्वपूर्ण दिवस - गुरुदेव

कुंभ - इस माह विवाद की कुछ ऐसी दशाएं आ सकती हैं जिनका समाधान परस्पर विचार-विमर्श से ही प्राप्त करना उचित रहेगा। राज्य पक्ष से अनुकूलता प्रायः नहीं के बराबर ही रहेगी। मुकदमेबाजी में उलझन से बचें। आय की स्थितियों में न्यूनता आएगी जो माह के अंत तक ही सुधर पाएगी। दाम्पत्य जीवन अनुकूल रहेगा। व्यापारी वर्ग के लिए यह माह मध्यम फलदायक है। पूंजी-निवेश करने से आगामी समय में सफलता मिलने के संकेत हैं। शत्रु पक्ष की उपेक्षा न करें। मित्र विश्वसनीय रहेंगे। सामाजिक सम्पर्कों में न्यूनता आ सकती है।
अनुकूल साधना-महासरस्वती।
महत्वपूर्ण दिवस-मंगलवार।

वृश्चिक - आय- व्यय का संतुलन स्थापित होना प्रारम्भ होगा। स्नायु दौर्बल्य के कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। प्रायः चित्त में उद्विग्नता रहेगी एवं उचित निर्णय लेने में निर्णय- शक्ति का अभाव रहेगा। पारिवारिक सुख सामान्य रहेगा। नौकरी पेशावर्ग के कार्यालय के कार्यों की अधिकता के कारण तनाव रहेगा। शत्रु पक्ष कष्ट दें सकता है। उत्तेजना की स्थितियों से बचें।
अनुकूल साधना-दुर्गा।
महत्वपूर्ण दिवस-गुरुवार।

मकर - प्रभाव में तीव्रता से वृद्धि होगी। वर्चस्व बढ़ेगा तथा अधीनस्थ सहयोगी रहेंगे, उद्यमशीलता में भी वृद्धि होगी, जिसके फलस्वरूप आय के स्रोत सुदृढ़ होंगे। व्यापारी वर्ग के लिए यह अत्यन्त श्रेष्ठ माह है। विशेष रूप से इस राशि के जो व्यक्ति मशीनरी से सम्बन्धित हों वे अवश्य ही अपने व्यापार में वृद्धि का प्रयत्न करें। स्वास्थ्य के प्रति मन में उपेक्षा रहेगी।
अनुकूल साधना-भैरव।
महत्वपूर्ण दिवस-रविवार।

मीन - आर्थिक दृष्टि से प्रबलता रहेगी। जीवन के प्रति सकारात्मक ढंग से चिंतन का क्रम प्रारम्भ होगा। मन में संतोष श्रद्धा एवं भक्ति की भावनाएं प्रबल रहेंगी। अपने व्यवसाय अथवा कार्य में मन लगेगा। नवीन विचारों का जन्म होगा। विवाह में बाधाएं आएंगी। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। किसी पूर्व परिचित से सुखद भेंट होगी। सम्बंधियों एवं रिश्तेदारों का आवागमन लगा रहेगा।
अनुकूल साधना-शिव साधना।
महत्वपूर्ण दिवस-गुरुवार।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०८.०२.६४	माह कृष्ण १३	महाविद्या दिवस
१५.०२.६४	माह शुक्ल ५	वसंत पंचमी
१८.०२.६४	माह शुक्ल ७	पाप मोचन दिवस
२२.०२.६४	माह शुक्ल ११	जया एकादशी
२४.०२.६४	माह शुक्ल १३	विश्वकर्मा जयन्ती
२५.०२.६४	माह पूर्णिमा	ललिता जयन्ती
०२.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ५	उच्छिट गणपति सिद्धि दिवस
०५.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ८	सीता अष्टमी
०८.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ११	विजया एकादशी
१०.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण १३	शिवरात्रि
१२.०३.६४	फाल्गुन कृष्ण ३०	हर गौरी सिद्धि दिवस
१५.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ३	वेताल सिद्धि दिवस
१७.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ५	काया कल्प दिवस
२०.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ८	होलाष्टक
२३.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल ११	आमलकी एकादशी
२७.०३.६४	फाल्गुन शुक्ल १५	होलिका दहन
२८.०३.६४	चैत्र कृष्ण १	वसंत सिद्धि उत्सव
२६.०३.६४	चैत्र कृष्ण २	भ्राता पूर्णायु सिद्धि दिवस
३१.०३.६४	चैत्र कृष्ण ५	अपूर्ण इच्छा पूर्ण दिवस
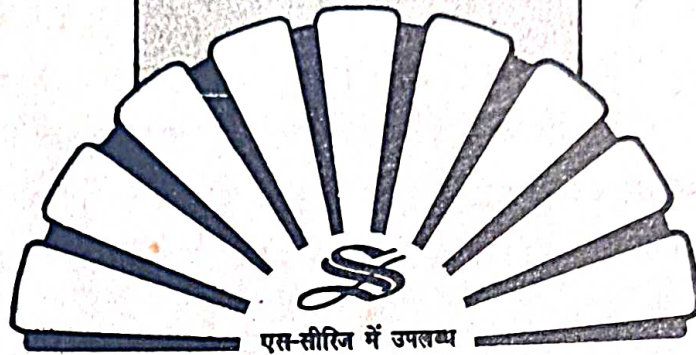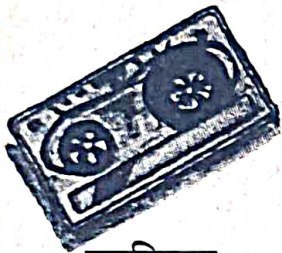
ऑडियो कैसेट

प्रति कैसेट ३०/-

पराविज्ञान :

विज्ञान की सीमाओं को भी पार करता हुआ. . . भारतीय विज्ञान अर्थात् **'पराविज्ञान'** जिसके द्वारा प्राप्त होते हैं सम्पूर्ण सृष्टि के रहस्य, भूत-भविष्य की साधनाओं का रहस्य बताता एक नवीन शैली का ऑडियो कैसेट

ॐ मणि पद्मे हुं

तिब्बत के लामाओं का मूल मंत्र और जिसमें एक - एक शब्द का अपना अर्थ है लौकिक जगत की ही नहीं, मृत्योपरान्त जीवन और पूर्व जीवन के सभी रहस्य बताने का विशेष मंत्र, अद्भुत प्रस्तुति तिब्वती लामा मंत्र की

कुबेर पति शिवशक्ति साधना :

"भस्मांग रागाय विभूषिताय. . ." और ऐसे ही शरीर पर चिता की भस्म लपेटे भगवान शिव ही ऐश्वर्यादि पति भी हैं और कुबेर पति भी . . . जिनकी साधना से प्राप्त होता है जीवन का अतुलनीय वैभव

तंत्र रहस्य :

उफनती वेगवती नदी है तंत्र का क्षेत्र, प्रवाह के साथ - साथ चुनौतियां भी और तब आवश्यक बन जाता है यह कैसेट . . . तंत्र के क्षेत्र में प्रत्येक जिज्ञासु साधक के लिए।

लक्ष्मी मेरी चेरी :

योग का मार्ग धारण किया और लक्ष्मी प्रगट न हुई यह सम्भव ही नहीं, किन्तु कैसे? ? इसी का सटीक विवेचन इस कैसेट में स्वयं पूज्पपाद गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में।

विडियो

(प्रति कैसेट २००/-)

जीवन पग-पग साधना है -

यह है यदि आपकी अंगुली पकड़ रखी हो पूज्यपाद गुरुदेव ने और तब सुरम्य जीवन में विचरण का आनन्द . . . बन जाती है साधना पग - पग पर. . .

स्वर्णदेहा अप्सरा

एक सौ आठ अप्सरा साधनाओं में चुनकर इसका अंकन किया गया है विडियो के माध्यम से, क्योंकि यह अपने रूप और सौन्दर्य में है भी तो ऐसी ही . . .

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)
फोन-०२९१-३२२०६
अथवा
गुरुधाम
३०६,कोहाट एन्क्लेव
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४
फोन-०११-७१८२२४८
फेक्स-०११-७१८६७००
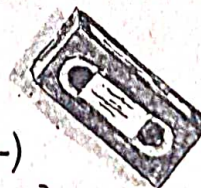
उच्चस्तरीय योगी जल पर भी उसी प्रकार सुगमतापूर्वक विचरण करते हैं जिस प्रकार सामान्य मानव सड़कों पर करता है। यह विश्व की उन दुर्लभ गोपनीय विशिष्टतम साधनाओं में से एक है जिसका रहस्य बिरले योगियों को ही ज्ञात है । आद्य शंकराचार्य इस साधना के श्रेष्ठ साधक थे और उन्होंने अपने प्रिय शिष्य पद्‌मपाद को इस कला में निष्णात कर दिया था जिसका प्रत्येक कदम जल पर पड़ते ही नवीन कमल पुष्पों की सृष्टि कर देता था परंतु उनकी पद्धति योग का एक दुरूह विषय है जबकि तांत्रोक्त पद्धति से यही साधना सहज व सुलभ बन जाती है।

उच्चस्तरीय साधना के गूढ़ रहस्यों को उजागर करती हुई प्रस्तुत है स्वामी आत्मानंद की यह अमूल्य भेंट . . . पत्रिका पाठकों के लिए सर्वथा पहली बार . . .

दिवसावसान करीब था। सुनहले क्षितिज के पार भगवान भास्कर विश्राम करने को उद्यत हो अपनी प्रखर रश्मियों को समेट चुके थे। खग-विहानों का झुण्ड कोलाहल करते हुए अपने गंतव्य वृक्षों की ओर चल पड़ा था। क्रमशः निर्भय विचरण करते हुए आंग्ल पर्यटक भी अपना सामान समेटने लगे, सिवाए उनके जो अभी भी रात्रि में नौका-विहार का आनंद लेने को उत्सुक प्रतीत होते हुए घाट की अंतिम सीढ़ियों पर विराजमान थे।

यह काशी का प्रसिद्ध मीरघाट था। नित्यक्रमानुसार मैं भी सांझ होते ही विशालाक्षी मंदिर की ओर चल पड़ा था। अपने अस्थायी निवास दशाश्वमेध गली से मीरघाट पहुंचने में मुझे अधिक समय नहीं लगा और साधु-संतों, पर्यटकों, गऊ माताओं और पुजारियों के झुण्ड को पार करता हुआ मैं अंततः विशालाक्षी मंदिर में पहुंच गया। एकांत में स्थित यह मंदिर अपने आप में पूर्ण चैतन्य सिद्धपीठ है जहां अपने परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार मैं इकतालीस दिनों की साधना में तल्लीन था।

प्रथम दिन मंदिर के भीतर पांव रखते ही विद्युतीय तरंगों सा आभास हुआ, पूरे शरीर में सनसनाहट दौड़ गई और मेरा रोम-रोम चैतन्यता का साक्षीभूत बन गया था। सौम्य हृदय पुजारी से वार्तालाप करने पर ज्ञात हुआ कि भारत के प्रसिद्ध बावन शक्तिपीठों में यह स्थान महत्वपूर्ण है जहां दक्ष के अग्निकुंड में स्वयं को भस्म कर देने वाली

शिवप्रिया सती की आंख गिर पड़ी थी। कालान्तर में उस स्थान ने भव्य मंदिर का रूप धारण कर लिया।

गर्भगृह में स्थापित मां विशालाक्षी के भव्य कृष्णवर्णीय विग्रह के दर्शन कर मैं प्रसन्नता से भर उठा। रोम-रोम पुलकित हो उठा और भावातिरेक में आंसुओं का अजस्र प्रवाह उमड़ पड़ा मानों जन्म-जन्मान्तर से भटकते हुए अबोध बालक को उसकी मां पुनः मिल गयी हो। वयोवृद्ध पुजारी विस्मय विमुग्ध सा मुझे देखता रहा उसी क्षण मेरे विगलित कंठ से मां की स्तुति में आद्य शंकराचार्य विरचित कुछ पद लहरियां उच्चरित हो उठीं --

> ''विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीम्
> समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
> अनादि सुरादि मखादिं भवादिं,
> स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।
> जगन्मोहिनीयम् तु वाग्वादिनीयम्
> सुहृदपोषिणी शत्रुसंहारणीयम्।
> वचस्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्
> स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।''

तत्पश्चात् मेरी साधना अनवरत रूप से जारी रही और अवर्णनीय अनुभूतियों का अमृत मेरे तन-मन को आप्लावित करता रहा। आज इसी दिव्य साधना का पैंतीसवां दिन था और मां के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा संजोए हुए मैं अपने निर्दिष्ट साधना-स्थल की ओर त्वरित गति से गतिशील था।

सौंदर्य प्रतिमा सी वह संन्यासिनी -

पर यह क्या? मंदिर के कपाट खोलते ही एक अत्यंत मोहक सुगंध मेरे मन-मस्तिष्क को आप्लावित कर गई और उस अपरिचित मादक सुगंध से किंचित हैरान सा मैं गर्भगृह तक पहुंचा ही था कि सामने उपस्थित दृश्य का अवलोकन कर चौंक पड़ा। एक अनुपम लावण्यमयी कन्या गर्भगृह में मेरे आसन से सटकर ही बैठी थी। लगभग बाईस वर्षीया वह कन्या अपनी सन्यासी वेषभूषा में भी साक्षात् सौंदर्य प्रतिमा ही थी - केसर मिश्रित दुग्ध सा गौर वर्ण, घटाओं सी लहराती खुली केशराशि, प्रत्येक अंग सांचे में ढला हुआ और मुखमंडल पर अपूर्व तेजस्विता। रक्तवर्णीय परिधान व ललाट पर कुंकुम का तिलक उसके सौंदर्य को द्विगुणित कर रहे थे पर इन सबसे बेखबर वह बाला पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई अपने मंत्रोच्चारण में तल्लीन थी।

वह मादक सुगंध इसी के दिव्य शरीर से निःसृत हो रही है, यह भान होते मुझे देर न लगी और चाहते हुए भी मैं उसके ध्यान में व्याघात उत्पन्न करने का साहस न

लगभग बाईस वर्षीया कन्या. . . जो अपने सन्यस्त परिधान में भी साक्षात् सौंदर्य प्रतिमा ही थी। यौवन की आभा से उद्दीप्त उसका शरीर कामदेव की प्रत्यंचा के समान विश्व-विजय को आतुर प्रतीत हो रहा था पर इन सबसे बेखबर वह बाला पद्मासन में बैठी हुई मंत्रोच्चारण में तल्लीन थी।

कर सका। कौतूहल से भरा हुआ मैं भी अपने आसन पर जाकर बैठ गया और संक्षिप्त पूजन क्रम समाप्त करने के उपरान्त मंत्र-जप प्रारम्भ कर दिया। पर उस संपूर्ण रात्रि काल में मेरा ध्यान उस दिव्य बाला की ओर ही लगा रहा जो अकम्पित मुद्रा में आसीन होकर अस्फुट मंत्र-जप कर रही थी। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में जप-समाप्ति पर जब मेरे नेत्र खुले तो वह अदृश्य हो चुकी थी।

चार दिनों तक यही क्रम जारी रहा और उस रहस्यमयी रूपसी से परिचय प्राप्त करने का मुझे सुअवसर नहीं मिला। सच कहूं तो मेरा ध्यान बंट चुका था। अनेक प्रश्न मेरे मानस में कौंध उठते -''इस निर्जन स्थान पर यह अप्रतिम सुंदरी कहां से आती है? यह इतनी निर्भय कैसे है? इसका दैदीप्यमान ललाट इसके उच्चकोटि की साधनाओं का परिचायक है पर इतनी मोहक दिव्य सुगंध यह अपने शरीर से किस प्रकार निःसृत कर लेती है? - मैं इन्हीं सब विचारों में डूबता उतरता रहता।

साधना की अंतिम रात्रि को पूर्ण मनोयोगपूर्वक मैंने साधना सम्पन्न की। जप समाप्त होते ही मुझे क्षणिक समाधि अवस्था की प्राप्ति हुई और साथ ही मां विशालाक्षी के बिम्बात्मक दर्शन भी। मैं स्वयं को धन्य अनुभव कर ही रहा था कि पूज्य गुरुदेव के आदेशात्मक स्वर ने मेरा भ्रमजाल तोड़ दिया - ''अभी और प्रयत्न कर। तेरी सफलता का अंतिम सोपान यह नहीं है।''

जल गमन की वह अद्भुत घटना -

हर्ष मिश्रित विषाद लेकर मैं प्रातःकाल गंगातट पर पहुंचा और निर्निमेष दृष्टि से उदित होते हुए सूर्य को निहारने लगा। साधना क्षेत्र की असीमितता के समक्ष अपने क्षुद्र अस्तित्व-बोध को लिए हुए मैं पूर्वगामी घटनाओं का विश्लेषण कर ही रहा था कि सहसा वह दिव्य बाला पुनः

> **मेरी आंखों के सामने वह सुंदरी मंथर गति से गंगा की लहरों पर चल रही थी। देखते ही देखते वह गंगा के दूसरे तट पर पहुंचकर घने जंगलों में अदृश्य हो गई।**

गंगातट पर दृष्टिगत हुई। इस बार उससे मिलने का लोभ संवरण मैं नहीं कर पाया और द्रुत गति से उस तक पहुंचने का प्रयास करने लगा। पर निमिषान्तर में ही वह घाट की अंतिम सीढ़ियों पर पहुंच गई और उसके बाद जो कुछ मैंने देखा, वह निश्चय ही मेरे जीवन की सर्वाधिक अविश्वसनीय घटना थी। मेरी आंखों के सामने ही वह सुंदरी मंथर गति से गंगा की लहरों पर चल रही थी। देखते ही देखते वह गंगा के दूसरे तट पर पहुंचकर जंगलों मे अदृश्य हो गई।

"निश्चय ही वह उच्चकोटि की साधनाओं में सिद्धहस्त है और अपने गुरु की योग्यतम शिष्या भी, तभी इतनी अल्पायु में ही इस उच्चस्तर पर प्रतिष्ठित हो सकी है। काश! मैं भी इसके समकक्ष हो पाता।" - और एक दृढ़ संकल्प के साथ मैं संध्या की प्रतीक्षा करने लगा जब वह साधिका मेरे समक्ष विशालाक्षी के प्रांगण में उपस्थित होने वाली थी।

नियत समय पर मैं मंदिर के गर्भगृह स्थित अपने आसन पर अनमने मन से बैठा ही था कि वह सन्यासिनी मंदिर में प्रविष्ट हुई। पहली बार मुझे देखकर उसके होठों पर मुस्कराहट दौड़ गई, और उसने पूछा, "मां विशालाक्षी के दर्शन कर लिए?" मैं हतप्रभ था कि उसे मेरी सम्पूर्ण साधना का ज्ञान कैसे हो गया। किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा जब मैं शांत रहा तो अन्ततः सौम्य स्वर में मेरा उत्साहवर्धन करते हुए उसने कहा, "अनन्यचित्त होना ही सिद्धि की अनिवार्य शर्त है। निराश होने की आवश्यकता नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूं और पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार ही मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करने को प्रस्तुत हुई हूं।"

अब तो हमारे मध्य संकोच की सभी दीवारें ढह चुकी थीं। अपनी गुरुबहन को इतने दिव्य स्तर पर प्रतिष्ठित पाकर मैं अत्यन्त आह्लादित था। हालांकि आयु में वह मुझसे बहुत छोटी थी पर साधना क्षेत्र में आयु का तो कोई बंधन होता ही नहीं, अतः मैं तो उसके लिए शिशु-तुल्य ही था। उसने अपने संन्यस्त जीवन के अनेक रोचक संस्मरण मुझे सुनाए। उसकी निर्भयता का कारण भी यही था कि पूज्य गुरुदेव स्वयं अपनी सन्यासी शिष्या के साथ हर क्षण सशरीर विचरण करते थे। साधना के उच्चतम स्तर को स्पर्श करने पर ही यह स्थिति प्राप्त होती है, ऐसा मुझे ज्ञान था अतः मैं उसे देखकर ही अभिभूत हुआ जा रहा था। गुरुदेव के सान्निध्य की चर्चा करते हुए जब उसकी आंखें चमक उठतीं तो मुझे ऐसा प्रतीत होता मानों साक्षात् मां विशालाक्षी ही मुझे साधना विषयक ज्ञान प्रदान कर रही हों और मैं एक दिव्य लोक में पहुंच जाता।

रात्रि के प्रथम प्रहर तक हम भारत की अनेक लुप्त होती हुई साधनाओं की चर्चा करते रहे। जल गमन साधना, परकाया प्रवेश आदि के रहस्यों को जानने के लिए मैं अत्यंत उत्सुक था परंतु वह रूपसी शांत व संयत रहते हुए स्वयं को छिपाने का भरसक प्रयास कर रही थी। अधीर होकर मैंने जब उसे बताया कि मैं उसके जलगमन का गूढ़ साक्षी रहा हूं तब वह चौंक पड़ी और हिचकते हुए उसने कई रहस्यों का अनावरण मेरे समक्ष किया।

जलगमन प्रक्रिया में सिद्धहस्त होना अब मेरी आकांक्षा का रूप ले चुका था। आरंभ में तो उसने टालने का प्रयत्न किया परंतु जब उसने देखा कि मैं प्राण-प्रण से इस साधना को हस्तगत करने हेतु कृतसंकल्प हूं तो वह इस विद्या का ज्ञान देने के लिए सहमत हो गईं सर्वप्रथम ध्यानावस्था में बैठकर उसने पूज्य गुरुदेव से अनुमति प्राप्त की और मुझसे अपनी सिद्धि का दुरुपयोग न करने का संकल्प करवाया। तत्पश्चात् उसने इस गोपनीय साधना का सम्पूर्ण विधान मेरे समक्ष स्पष्ट कर दिया जिसे अपनाकर कोई भी एकनिष्ठ साधक जलगमन प्रक्रिया में पारंगत हो सकता है।

यह साधना एक दिन की है। सर्वप्रथम साधक पांच माला गुरु मंत्र जप सम्पन्न करे और उसके बाद पूज्य गुरुदेव से मन ही मन आशीर्वाद प्राप्त करके ही इस साधना में बैठे। साधना से पूर्व सम्बन्धित **दीक्षा** ले लें तो अच्छा है। इसके बाद एकान्त स्थान में लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठे और सामने **मनोहर गुरु-चित्र व गुरु यंत्र** स्थापित कर दे। सर्व प्रथम गणपति पूजन, गुरु-पूजन सम्पन्न करे और फिर **जलद् माला** से निम्नलिखित मंत्र का जप आरंभ करें —

मंत्र -

ॐ गुं गुरुवै जं जं जं वैं गुं ॐ फट्

नित्य एक माला मंत्र जप तीन दिन तक करें। साधना काल में एक समय भोजन करे तथा ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह रात्रिकालीन साधना है और पूर्ण विधि-विधान के साथ साधना सम्पन्न करने पर साधक निश्चय ही जलगमन प्रक्रिया में सिद्ध हो जाता है।

इस दीक्षा को सद्गुरुदेव अपने शिष्य को भलीभांति परखकर उसके विशेष विनय पर ही प्रदान करते हैं।

स्वप्न सिद्धि गुटिका

जिसके द्वारा बिना किसी साधना के स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है

- जब जीवन की समस्याएं जटिल हो जाएं और हल न सूझ रहा हो, न किसी के सामने खुल कर कहा ही जा सकता हो तब कोई तो उपाय होना ही चाहिए, जो प्रामाणिक हो, कसौटी पर खरा उतरा हो और जिससे गोपनीयता भी बनी रह सके, कि जीवन को तनाव रहित बनाया जा सके।
- प्रेम अथवा मनोवाछिंत विवाह की समस्या हो, **प्रेमी अथवा प्रेमिका का मन बदल गया हो** अथवा उसके किसी दूसरे से सम्बन्ध बन गए हों और वास्तविकता सही - सही नहीं पता चल पा रही हो तब इसी गुटिका के गुप्त प्रयोग से सम्बन्धों को तार - तार समझा जा सकता है, और जीवन में किसी भी अवांछनीय स्थिति से बचा जा सकता है।
- घरेलू झगड़े और तनाव की स्थितियां हों लेकिन सम्बन्धी के मन क्या चल रहा है, इसका सही - सही पता नहीं चल पा रहा हो, **जहां जायदाद के झगड़े, साझा सम्पत्ति की बात** हो वहां भी इसी गुटिका का उपयोग अवश्य करना चाहिए।
- व्यापारिक मामलों में ऋण के लेन - देन की बात हो या साझेदारी की और **सच्चाई को जानना नितांत आवश्यक हो** तब भी स्वप्न सिद्धि गुटिका पर ही प्रयोग करना चाहिए।
- कोई गुप्त शत्रु हो, व्यापार में प्रतिद्वन्दिता हो या अपने व्यापार में ही भीतर से कोई धोखा देने के प्रयास में लगा हो, तब **भी स्वप्न के माध्यम से आने वाले संकटों को भांप लेना ही बुद्धिमत्ता है।**
- कोई शारीरिक समस्या हो, कोई ऐसा रोग हो जिसे प्रकट न कर पा रहे हों और न उसके निवारण का उपाय सूझ रहा हो या वैवाहिक जीवन की कोई दुर्बलता हो ही **तब भी स्वप्न एक अच्छा माध्यम है।**

– क्योंकि सभी बातें खुल कर नहीं कही जा सकतीं।

साथ ही किसी बात का दो टूक हल जानना जरूरी हो और कोई भी विश्वसनीय अथवा मददगार न हो तब स्वप्न सिद्धि गुटिका ही आपकी मित्र बन कर एक मात्र हल रह जाती है, आपकी समस्याओं को कहीं प्रकट न करने वाली. . .

साथ ही अचूक फल देने में सक्षम, क्योंकि यह स्वप्न के माध्यम से हल जानने का निश्चित परीक्षित उपाय रहा है।

एक कागज पर अपनी समस्या या प्रश्न लिखकर उसे गुटिका के साथ बांधकर सिरहाने रख लें और सुबह उठने पर या तो आपको हल मिल चुका होगा नहीं तो रात में देखे गए स्वप्नों को बारीकी से याद करें, उन्हीं में कोई न कोई हल छुपा होगा।

एक गुटिका को लेकर एक प्रश्न के साथ यही प्रयोग दुहराया जा सकता है, नए प्रश्न के लिए गुटिका का बदलना आवश्यक हो जाता है।

इसी को और भी अधिक सफल ढंग से किया जा सकता है यदि पाठक एक स्वप्न सिद्धि गुटिका को लेकर यह **लघु प्रयोग** सम्पन्न कर ले। इसके लिए आवश्यक है कि मोंगरे के फूल या सफेद सुगन्धित कोई भी फूल लेकर उनके बीच में यह गुटिका रख कर निम्न गोपनीय मंत्र का १०८ बार रात्रि में सोते समय बिस्तर पर बैठे - बैठे ही उच्चारण करें और फूलों सहित गुटिका को सफेद कपड़े में बांधकर सिरहाने रख लें।

मंत्र -

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य विद्येवदवद स्वाहा।।

जब तक फूल पूरी तरह से सूख न जाएं तब तक नित्य इसी गुटिका को नित्य अपने सिरहाने रख कर सोएं जिससे समस्याओं का स्पष्ट हल दिख सके।

जहां के पत्थर भी उड़ते हैं. . .

हरे - भरे जंगलों और कल-कल करते झरनों की दिव्य भूमि गढ़वाल के एक - एक चप्पे पर सिद्ध पुरुषों का इतिहास, भारतीय प्राचीन विद्याओं के गौरव की कथाएं और साधना जगत के रहस्यों की बातें बिखरी हुई हैं -- जो केवल इतिहास की ही विषय - वस्तु नहीं, वर्तमान की भी बात है ही जीवित और सप्रमाण. . .

भले ही आज गढ़वाल में पहले की अपेक्षा वातावरण बदल गया हो, धार्मिक मूल्यों का ह्रास हो रहा हो, तीर्थ यात्रियों की सेवा के स्थान पर व्यवसायिकता हावी हो गई हो, सौजन्यता और आत्मीयता के स्थान पर आकर्षित करने वाले आश्रमों और होटलों की भरमार बढ़ गई हो, लेकिन इन्हीं विरोधाभासों और द्वन्दों के बीच में ऐसे व्यक्तित्व भी गतिशील हैं जो सही अर्थों में भारतीय ऋषि परम्परा के वाहक और प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। जो प्राण - प्रण से अपने गौरव, अपनी तपोमयता और अपनी श्रेष्ठता से समस्त विपरीत परिस्थितियों में जूझते हुए भी ऐसी विद्याओं को जीवित रखना ही जीवन का लक्ष्य बना चुके हैं।

अनेक व्यक्तित्व . . . प्रायः हर दूसरा व्यक्ति ही गैरिक वस्त्र धारण किए हुए, त्रिपुण्ड और भस्म लगाए, कहीं कोई पिण्डी स्थापित किए हुए तो कहीं कोई पीतल की मूर्ति सिन्दूर और फूलों से सजाए हुए और हर बीस कदम पर सीधे - सादे सहज श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता हुआ . . . केदार की यात्रा में पग - पग पर गौरी कुण्ड से लेकर केदार नाथ तक यही दृश्य दिखाई देता है. . प्राकृतिक सुषमा और प्रकृति के सहज वातावरण के बीच में मन वितृष्णा से भर उठता है. . . सहज श्रद्धालु तीर्थ यात्रियों की भावनाओं की तो बात मैं नहीं जानता, लेकिन साधक की आंखें पथरा जाती हैं, किसी सिद्धयोगी या तपस्वी के दर्शन को . . . पक्षियों के कलरव और ध्वनि के साथ ऊंची उठती पहाड़ियों के

आज वायु गमन प्रक्रिया एक गम्भीरता से भी अधिक कौतुक की विषय - वस्तु हो गई है. . . चमत्कारपूर्ण और किंचित रहस्य - रोमान्च से भरी व समझी जाने वाली. . . तो किसी के लिए कपोल कल्पना का विषय. . .

लेकिन सत्य है भारतीय ज्ञान की यह अनूठी प्रक्रिया भी और आज भी बिखरे हैं इसके ज्ञाता . . .

. . . योगी और सिद्ध तपस्वी! यत्र - तत्र विचरण करते हुए. . .

बीच में जाती हुई पगडण्डियों को देखकर मन में कौतुहल जगता है कि शायद यह मार्ग किसी तपः स्थली को जा रहा हो . . . कुछ प्रसिद्ध नाम वासुकीताल जैसे स्थानों पर सिद्ध योगियों की तलाश में बढ़ जाते हैं कुछ साधक. . .

यह सत्य है कि यह तपोभूमि दिव्य पुरुषों से शून्य नहीं है लेकिन उनकी विरलता और उनकी दुर्लभ प्राप्ति प्रायः शून्य ही बना गई है. . . ऐसे हताश वातावरण में प्रखरता से आज भी एक नाम जगमगा रहा है और वह है **प्रसिद्ध योगी उड़िया नाथ जी . . सत्य है कि योगी की आयु, जाति, धर्म या नाम का कोई भी न तो ज्ञान होता है और न उससे ऐसा पूछना ही शास्त्र सम्मत माना गया है. .** .और परिचय की आवश्यकता ही कहां? जिनके आते ही प्रकृति स्वयं खिलखिलाने लग जाती है, अणु- अणु चैतन्य हो जाता है, और जो अपने श्वेत केशों के मध्य गौर वर्णीय चेहरे पर खिली हुई दैवी आभा से सबके मन का ताप हरते हुए आते हैं. . . उनके किसी अन्य परिचय की आवश्यकता ही क्या?. . . सामान्य योगी की अपेक्षा सहज और प्रकट रूप से वे विद्यमान हैं, आज भी जीवित और सशरीर, प्रायः साठ से सत्तर वर्ष की दिखती आयु लेकिन उनके चारों ओर बिखरा आभा मण्डल स्वयं ही कह देता है कि यह तो कोई तीन - चार सौ वर्ष से कम का व्यक्तित्व ही नहीं. . . **क्या सम्भव है कि साठ साल के जीवन में ही उतर आए ऐसी देवतुल्य आभा किसी के चेहरे और शरीर पर. . . . ?**

केदारनाथ का क्षेत्र तो एक सुपरिचित क्षेत्र है ही लेकिन वहां तक की यात्रा के मध्य में भी कई दिव्य स्थल पड़ते हैं, जिनकी साधक या अन्य तीर्थ यात्री उपेक्षा कर जाते हैं। गरुड़चट्टी एक ऐसा ही दिव्य स्थल है. . . केदारनाथ से कुछ पूर्व देवदर्शनी के समीप, जहां से बर्फ की चोटियों का स्पर्श सीधा आकर मन के साथ - साथ तन को भी छूता हुआ प्रतीत होता है, और एक ही क्षण में हर लेता है मन का सारा विष, ताप और सन्ताप!

हरीतिमा से भरे इस क्षेत्र में जहां ऋषि - चरणों को पखारती हुई बहती है मन्दाकिनी, वहीं दूसरी ओर शुभ्र नीले आकाश पर चित्रलिखित सी श्वेत हिमालय की चोटियां, किसी देव पुरुष की उपस्थिति से कम कदापि लगती ही नहीं।

यही है साधना की वास्तविक स्थली . . . सिद्ध स्थली इसी को तो कहते हैं आडम्बर से रहित, दिव्यता से भरी, सांसारिक विषय - वासनाओं, प्रपंचों और कपट से सर्वथा दूर . . . और यही है उड़िया नाथ का निवास स्थान. . . . एक हठीले योगी और अद्भुत व्यक्तित्व का! जिनके जीवन को लेकर कहीं कोई द्वन्द ही नहीं, क्षेत्र के एक - एक निवासी के मध्य समान रूप से पूज्य और केवल निवासी ही नहीं, अपरिचित व्यक्ति भी तो सहज ही उनके चरणों में नत हो ही जाता है, बाल - सुलभ निश्छल हंसी में आकंठ तृप्त हो जाता है, श्वेत श्मश्रुओं में अवगाहन कर मन्दाकिनी से भी अधिक पवित्रता अनुभव कर ही लेता है, निष्पाप दृष्टि में पूरे हिमालय का प्रतिबिम्ब प्राप्त कर लेता है. . . और स्वाभिमानी ऐसे कि जब एक बार किसी राजनेता के आगमन पर उन्हें केदारनाथ के मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया गया तो हठ ठान लिया कि अब - जब भगवान शिव बुलाएंगे तभी मैं भीतर प्रवेश करूगा। कई वर्ष बीत गए इस घटना को, और आज भी वे नित्य **गरुड़ चट्टी** से आकर केदारनाथ की परिक्रमा कर लौट जाते हैं, गर्भगृह में प्रवेश करते ही नहीं . . . .साक्षात् शिव योगी में ही समा सकता है ऐसा हठ. . . जो आत्मलीन हो गया हो इष्ट में, समर्पित हो गया हो अपने प्रभु में, उससे एकाकार हो गया हो, उसी की वाणी और व्यवहार में तो आ सकता है ऐसा दर्प!

अनेक सिद्धियों के ज्ञाता ऐसे **उड़िया नाथ** आज भी जिस प्रकार से सर्वथा सरल और प्राचीन भारतीय ऋषि की जीवन शैली अपना कर शांत और प्रपंच से दूर

अपने शिष्यों को दीक्षित कर रहे हैं, उन्हें प्राचीन विद्याओं में निष्णात कर रहे हैं, वह एक अत्यन्त ही वन्दनीय और श्रद्धास्पद कार्य है। वे स्वयं तो वायु गमन के सिद्ध हस्त आचार्य हैं ही किन्तु उनके तीन शिष्य भी इस क्षेत्र में पूर्ण रूप से सिद्ध हस्त हो चुके हैं. . .

कभी केदार से बद्रीनाथ का रास्ता सीधा खुला हुआ था और आज की भांति तीर्थ यात्री वापस 'कुण्ड' तक आकर ऊखीमठ, चोपता, चमोली होकर यात्रा नहीं करते थे, वरन **सीधे ही पर्वतों को पार करते हुए उत्तुंग शिखरों पर होकर, जहां सदैव पिघली हुई चांदी के समान बर्फ का प्रवाह बिखरा रहता है और सूर्य की स्वर्ण रश्मियां देवदारुओं के वृक्ष से आकर स्पर्श करती हैं,** उन्हीं के मध्य से होकर नर - नारायण पर्वत को पार कर , बद्री विशाल के दर्शन कर, अपने को धन्य - धन्य अनुभव करते थे. . . केदार के स्पर्श के पश्चात् ही बद्री विशाल को स्पर्श करने का विधान रहा है. . . कालान्तर में सुख - सुविधाओं की वृद्धि और शिलाखंडों के गिरने, जंगली हिंसक पशुओं की भरमार हो जाने से वह मार्ग कुछ एक प्राचीन निवासियों और सेना के जवानों के मध्य ही ज्ञात रह गया , अप्रचलित हो गया, किन्तु योगियों के मध्य और विशेष रूप से ऐसे योगियों के मध्य, जो साधना की और जड़ी - बूटियों की खोज में निरन्तर संलग्न रहते हैं, ज्ञात रहा. . . **वायु मार्ग से गमन करने के लिए भी योगियों के मध्य यही क्षेत्र आज भी सबसे अधिक प्रचलित एवं लोक प्रिय है, क्या पता इस क्षेत्र में साधना की अथवा भौगोलिक स्थितियों की कुछ ऐसी विशेषता है जिससे इस क्षेत्र में की जाने वाली वायु गमन साधना सहज ही सिद्ध भी हो जाती है।**

केवल मानव शरीर ही नहीं वरन् यहां के तो पत्थर भी ऐसे हैं जो निरन्तर साधनाओं के मंत्रों से आपूरित होकर व्यक्ति के साथ - साथ वायु में उड़ते हैं। गरुड़ चट्टी नाम अनायास ही नहीं पड़ गया इस क्षेत्र का . . . **एक ओर भगवान शिव का क्षेत्र और दूसरी तरफ गरुड़ चट्टी जैसा नाम. . .** यह रहस्य छुपाये है अपने - आप में, क्योंकि पक्षीराज गरुड़ के समान ही विशेषता प्राप्त हो जाती है जो व्यक्ति को इस क्षेत्र में! वायु गमन का अलौकिक रहस्य. . .

सामान्य मार्ग से कुछ हटकर पहाड़ी के ऊपर जाने पर सहज ही मिल जाते हैं ऐसे पत्थर जिनकी बनावट सामान्य पत्थरों से अलग है, और जो वायु गमन के मंत्रों से सिद्ध पत्थर हैं. . . युगों - युगों से ज्ञात - अज्ञात योगियों के देह से सम्पर्कित . . . भूले- भटके यदि कोई अन्जान आदमी यदि दैवयोग से इन पत्थरों पर बैठ भर भी जाए तो उसे ऐसा लगता है कि उसका सारा शरीर रुई के समान हल्का हो रहा है. . . योगियों अथवा तांत्रोक्त क्रियाओं के स्थान पर मांत्रोक्त क्रियाओं से ही वायु गमन सिद्धि को सिखाने पर बल दिया जाता है इस क्षेत्र में। साथ ही इस क्षेत्र में मिलने वाली कुछ विशेष जड़ी - बूटियां अतिरिक्त रूप से सेवन करता है साधक अपने साधना काल में, अपने शरीर का गुरुत्व समाप्त करने के लिए, जो केवल इसी क्षेत्र की ही उपलब्धि है।

जहां योग की प्रक्रिया अत्यन्त कठिन और श्रमसाध्य है, अत्यन्त अभ्यास के बाद सिद्ध होने के योग्य है, नाभि चक्र को पूर्णतः आलोड़ित - विलोड़ित कर वायुयान के पंखों के समान एक सेकेण्ड में साठ हजार चक्र देने पर आधारित है, वहीं गढ़वाल की यह पावन भूमि और ऐसे अद्वितीय योगीराज का साहचर्य सहज ही व्यक्ति को इस क्रिया में सफलता प्रदान करने वाला है, किन्तु वे इसका ज्ञान अत्यन्त कठिनाई से और शिष्य को अपनी कसौटियों पर खरा कस लेने के बाद ही प्रदान करते हैं।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं अपनी केदारनाथ यात्रा के मध्य ऐसे श्रेष्ठ योगीराज का परिचय एवं साहचर्य प्राप्त कर सका। ऐसे श्रेष्ठ विद्वान वास्तव में सहजता से ही प्राप्त होते हैं, यह बात और है कि व्यक्ति उनकी अति सहजता से भ्रमित हो जाता हैअन्यथा ऐसी विद्याएं प्राय लुप्त नहीं होतीं। मैंने उनके तीनों शिष्यों को अलग - अलग विधियों से इस सिद्धि का श्रेष्ठ ज्ञाता देखा, उनका एक शिष्य यौगिक माध्यम से आगे बढ़ा था, एक तंत्र विद्या के माध्यम से तथा तीसरा मंत्र विद्या के माध्यम से। मेरी रुचि मांत्रिक प्रक्रिया द्वारा वायु गमन विद्या ज्ञात करने की थी और गृहस्थ जीवन जी रहे व्यक्ति के लिए मांत्रिक प्रक्रिया ही श्रेष्ठ है, क्योंकि वह योग की कठिन विधियों को नहीं अपना सकता। योगी राज के अनुसार पारद वायु गमन सिद्धि का एक श्रेष्ठ माध्यम बन सकता है **कोई आवश्यक नहीं कि व्यक्ति पारद का ज्ञाता है या नहीं यदि उसे सोलह संस्कार युक्त पारद शिवलिंग प्राप्त हो जाए तो उस पर नित्य एक निश्चित समय पर त्राटक करते हुए ही निम्न मंत्र का आधे घंटे तक जप करने से व्यक्ति को भूमि तत्व रहितता प्राप्त हो जाती है, जो कालान्तर में वायु गमन सिद्धि का आधार बनती है।**

योगीराज ने कृपापूर्वक छः माह की सेवा के उपरान्त मुझे वह दुर्लभ मंत्र बताया। जिसका निरन्तर गुंजरण कर मैं मांत्रिक प्रक्रिया द्वारा वायु गमन सिद्धि की सत्यता स्वयं अनुभव कर सका। यह गोपनीय मंत्र है-

मंत्र -

ॐ शं शंभवाय वायु गमेशाय शं फट्।।

यह हमारे पीढ़ी का सौभाग्य है कि ऐसी श्रेष्ठ विद्या के ज्ञाता, ऐसी श्रेष्ठ सिद्ध स्थली हम सभी के ज्ञान और पहुंच के भीतर है ।

मनोरंजन व ज्ञान का भरपूर खज़ाना

ज्ञान और मनोरंजन के जगत में नूतन प्रयोग। जटिल ज्ञान को सप्रमाण और शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाले तांत्रोक्त विधियों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास . . .

अप्सरा साधना

जो अभी तक केवल कथाओं का विषय रही, उसके यौवन और जीवन का रहस्य खोलती साधनाएं, साक्षात् उपस्थित होने के लिए बाध्य कर देने की विधियों को अपने में समेटे मानों गागर में सागर आ समाया हो. . .

त्रिजटा अघोरी

जिनकी तो कोई मिसाल ही नहीं। अद्भुत जीवन्त व्यक्तित्व और तंत्र के क्षेत्र में जाना- पहिचाना नाम अपनी तीव्रता, अक्खड़पन और दमखम से भरे व्यक्तित्व के कारण।

भुवनेश्वरी साधना

महासरस्वती का शीघ्र साध्य और प्रकट रूप साथ ही महालक्ष्मी के समस्त गुणों को अपने में समाए. . . इस को स्पष्ट करती लघु पुस्तक. . . सप्रमाण और दुर्लभ तांत्रोक्त पद्धतियों को समाहित करती हुई।
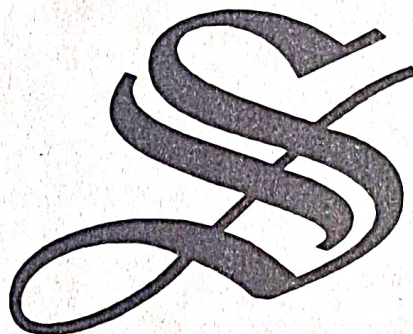
एस-सीरिज की पेशकश

पूर्ण जानकारी के लिए
सम्पर्क

मंत्र-तंत्र - यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर, (राज.) - ३४२००१
फोन : ०२९१-३२२०६

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४,
फोन-०११-७१८२२४८

मैं बांहे फैलाए खड़ा हूं

एक सशक्त आह्वान, इस आपाधापी से भरे युग में सुखद छांव जैसी पूज्यपाद गुरुदेव की एक अनमोल कृति, अपने कथ्य एवं शैली के कारण जो एक कालजयी कृति बन गई है।

सिद्धाश्रम

इस धरा पर साक्षात् देवलोक! इन्द्र के वैभव और देवताओं के ऐश्वर्य से भी उच्च भूमि, जहां कोई भी साक्षात् अपनी आंखों से जाकर अनिवर्चनीय सुख का साक्षात्कार कर ही सकता है. . . आंखों देखा विवरण

हंसा! उड़हूं गगन की ओर

जहां शीतलता है, शांति है और प्राणों का उच्छवास है. . . ऐसे ही जगत में ले जाएगी साहित्य की यह दुर्लभ कृति, जिसे स्पर्श मिला है पूज्य गुरुदेव की वाणी का।

होली का पर्व एक सिद्ध तांत्रिक मुहूर्त तो है ही साथ ही होलिका दहन की रात्रि, होलिका दहन का अवसर भी कम महत्वपूर्ण नहीं जिसके माध्यम से साधक अपनी सभी कामनाएं पूर्ण कर सकता है। होलिका दहन को लेकर साधक के मन में भांति - भांति के भ्रम है किन्तु यह तो यज्ञ की अग्नि की भांति पवित्र अग्नि है जो समस्त दोष, पाप मिटाकर साधक को पूर्णता देने में सक्षम है।

इस अवसर पर एक लघु प्रयोग जिसके माध्यम से साधक को जहां पिछले वर्ष या अभी तक किए गए सभी साधनाओं में सिद्धि प्राप्त हो जाती है वहीं समस्त यंत्र व माला के होलिका में विसर्जन से इस जीवन के तथा पिछले जीवन के सभी दोष, पाप समाप्त होकर साधक को पूर्ण निर्मलता प्राप्त होने की क्रिया भी आरम्भ हो जाती है।

होली का पर्व रंग और उल्लास का पर्व तो है ही उससे भी अधिक तांत्रोक्त साधनाओं और इस प्रकार से मिली सिद्धि की मस्ती से चूर होने का आंखों के डोरे गुलाबी कर लेने का पर्व है . . . क्योंकि शक्तिमान व्यक्ति की ही मस्ती वास्तविक मस्ती है, और उसी का इठलाना किसी खोखलेपन से भरा नहीं होता . . .

. . . जब मैं जैसा चाहूं वैसा ही घटित हो ही, मेरा कोई विरोधी न हो, मेरी कोई अनायास क्षति न करे और मेरे जीवन में दरिद्रता न हो-यही कामना होती है किसी भी सही साधक की और गृहस्थ से जुड़े हुए तंत्र के

ज्ञाता की भी। तांत्रिक तो एक विशेषण है, तांत्रिक कोई वेशभूषा या अभिचारिक कर्मों का ज्ञान मात्र ही नहीं और इसके लिए साधक वर्ष भर प्रयासरत रहता ही है, व्याघ्र की तरह अवसर की प्रतीक्षा करता रहता है कि कब उचित क्षण आए और वह झपट्टा मारकर सफलता और सिद्धि प्रात कर सके।

जो साधना की मर्यादा समझते हैं, साधना का वास्तविक अर्थ समझते हैं, जीवन रो-झींक कर काट देना ही पर्याप्त नहीं समझते, वे ही फिर आगे बढ़कर साधना में और उससे भी आगे बढ़कर तांत्रोक्त प्रक्रियाओं में संलग्न होने की क्रिया करते ही हैं।

एक श्रेष्ठ साधक को यह ज्ञात होता है कि तंत्र की कोई भी प्रक्रिया बिना यंत्रों एवं सही उपकरणों के पूर्ण नहीं होती, साधनात्मक शैली से सम्बंधित रहे, किसी भी पंथ या मत का इतिहास पलट कर देखा जाए तो उसमें एक से अनोखी वस्तुएं साधनात्मक उपकरणों के रूप में वर्णित मिलती हैं।

तंत्र का कोई ग्रंथ पलटकर देख लें, विचित्र प्रकार की वस्तुएं सामग्री के रूप में प्रयुक्त किए जाने का विधान मिलता है . . . कहीं शेर का नाखून, तो कहीं मोर पंख की भस्म, या ऐसे ही हैरत से और प्रायः जुगुप्सा से भरी वस्तुओं के विवरण हमें कृतज्ञ होना चाहिए उन अनेक अज्ञात योगियों और मनस्वी पुरुषों का जिन्होंने ऐसी दुर्लभ सामग्री के स्थान पर यंत्र-उत्कीर्ण करने के रहस्य खोजे, विधान रचे और तंत्र साधनाओं को गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी सुलभ कराया।

उसके पीछे उनका कोई स्वार्थमूलक चिंतन नहीं था। उनका उद्देश्य, उनका लक्ष्य और उनकी मानसिक क्षुधा तो केवल किसी साधना-विशेष का रहस्य जानने तथा उसका सरलीकृत रूप ढूंढने तक ही सीमित रहती थी, और शेष जो कुछ भी रहा वह स्वतः ही जनकल्याणार्थ उपलब्ध हो गया।

आज के युग में ऐसे यंत्रों की रचना और उनकी विधिवत प्रतिस्थापना का रहस्य केवल गिने-चुने व्यक्तियों को ही ज्ञात रह गया है, जिनके माध्यम से साधक न केवल अपनी इच्छित सिद्धि प्राप्त करता है वरन् जाने-अन्जाने अपना बहुत कुछ उन यंत्रों पर आरोपित कर देता है, संभवतः श्रेष्ठ साधक भी इस तथ्य से परिचित नहीं होंगे किंतु यह एक वास्तविकता है कि जो यंत्र माला आदि व्यक्ति के प्राणों एवं शरीर से सम्पर्कित हो जाती है, वह शनैः शनैः दूषित भी होती जाती है, क्योंकि वह साधक के ऊपर आने वाली अनेक ज्ञात-अज्ञात विपदाओं के समक्ष ढाल बनकर खड़ी हो, अपनी ऊर्जा का क्षरण तो करती ही है साथ ही साथ साधक के द्वारा प्रतिदिन भौतिक जगत में किए जाने वाले व्यवहारों, झूठ, छल, व्यभिचार, नेत्र-दोष, मानसिक-दोष का निराकरण भी अपनी तेजस्विता से करती जाती है।

यंत्र एवं मालाएं ताम्र पत्र के टुकड़े या बहुमूल्य पत्थर ही नहीं वरन देवता विशेष का यथार्थ प्रतिरूप ही होते हैं, और इन प्रकारों से उनकी तेजस्विता पर आघात पहुंचता है।

ऐसे यंत्रों और मालाओं को स्थापित किए रहना अथवा धारण करना दोष-युक्त माना गया है। तंत्र शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख है कि व्यक्ति जिस प्रकार अपने अन्य दोषों का परिष्कार करता रहता है, उसी प्रकार इन यंत्रों का भी परिष्कार होना चाहिए। यह दो प्रकार से सम्भव है या तो व्यक्ति उसी यंत्र को पुनः शुद्ध कर नवीन ढंग से चैतन्यीकरण और प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न कराए अथवा नवीन यंत्र की स्थापना करे। प्रथम उपाय व्यय साध्य एवं जटिल है।

दोष युक्त यंत्रों को विसर्जन के लिए भी नियम संहिता बनाई गई क्योंकि वह न केवल दिव्य वस्तु होती है वरन् उनके साथ-साथ व्यक्ति के पाप, दोष, तंत्र प्रयोग इत्यादि भी जुड़ जाते हैं। जिस प्रकार मैल से भरे हुए कपड़े को जलाकर नष्ट करना ही स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित माना गया है उसी प्रकार इन यंत्रों आदि को भी शुद्ध करने के लिए उनके साथ-साथ अपने विविध कष्टों को भी समाप्त कर देने की उचित प्रक्रिया निर्मित की गई है।

होलिका दहन की रात्रि को होलिका दहन से कुछ पूर्व एक बड़े लाल कपड़े पर अपने सभी यंत्र एवं मालाओं को एकत्र कर उंगलियों पर एक सौ आठ बार गुरु मंत्र का उच्चारण कर और मानसिक संकल्प कर कि इस प्रयोग के द्वारा मैं अपने सभी इह जन्म कृत दोषों तथा समस्त अनिष्ट से मुक्ति पाने के लिए इन्हें होलिका की पवित्र अग्नि में समर्पित कर मुक्ति प्राप्त करने का आकांक्षी हूं, एक पोटली सी बनाकर चुपचाप होलिका दहन के समीप जाकर उसकी एक परिक्रमा कर भेंट चढ़ा दें तथा बिना पीछे मुड़े एवं देखे सीधे धर आकर स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर अपने सामने पूज्य गुरुदेव का चित्र रख तथा एक तांबे के पात्र में **पांच लघु नारियल** रख गुरु मंत्र की पांच माला मंत्र- जप पहले

से प्राप्त नयी **स्फटिक माला** से करें। एवं इन पांच लघु नारियलों को घर के महत्वपूर्ण स्थानों यथा-अन्न भंडार, व्यापार स्थल, पूजन स्थान, शयन कक्ष, तथा एक घर के द्वार के समीप पीले कपड़े में बांध कर स्थापित कर दें।

उपरोक्त सभी यंत्रों एवं मालाओं के साथ-साथ साधक का समस्त दूषित भी अग्नि में जलकर नष्ट हो जाता है, और एक रिक्तता उत्पन्न हो जाती है, ज्यों कोई बोझ हटने पर व्यक्ति दबाव मुक्त अनुभव करे। यह शून्य की स्थिति प्रायः व्यक्ति को कुछ समय के लिए अस्वस्थ भी कर सकती है लेकिन उससे चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं तथा उपरोक्त पांच नारियलों की इसी उद्देश्य से पूजा की जाती है, जिससे रिक्तता को तुरंत ही शुभता से भरा जा सके। साधक इस अवसर पर निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र- जप अर्थात एक सौ आठ बार उच्चारण करे जिसमें सम्पूर्ण होली की साधना का रहस्य छुपा है -

मंत्र -

ॐ निखिलेश्वराय नारायणाय हृदयस्थ गुरुभ्यो नमः

उपरोक्त मंत्र- जप व्यक्ति को इसी रात्रि में कर लेना चाहिए, जिससे कि वह समस्त सुख, वैभव प्राप्त करने के साथ-साथ तांत्रोक्त प्रयोगों दूषित प्रभावों से वर्ष भर के लिए मुक्त रहे।

वसन्तोत्सव

होलिका - दहन के दूसरे ही दिन वसन्तोत्सव मनाने का पर्व भी है और लोक-परम्परा भी . . . कि होली के रंगों की उड़े हुए गुलाल की कशिश हल्की न हो पाए . . . वसंत का पर्व भी तो यही चाहता है कि मादक अंगड़ाईयां और सिहरने हल्की न पड़ें . . . रंगों की तरह यौवन गालों पर और आंखों में पूरी मस्ती से स्थायी बन जाए . . . होलिका-दहन से लेकर नव वर्ष आने तक पूरे-पूरे दिन और **सारी-सारी रात को अलस बनाती हुई खुमारी से भरी तेज और नशीली हवाएं बिखरी रहती हैं . . . अभिसारिका नायिका से भी अधिक उन्मत्त . . . प्रेमियों की बेचैनी को और भी बढ़ाती हुई।**

ठीक यही दिन होते हैं रूठने-मनाने के, छेड़छाड़ और शिकवे-शिकायतों के, जो कुछ जबान से न कह पाए हों उसे इस ऋतु का सहारा लेकर इशारों में कह देने के . . . और भीनी-भीनी टेसुओं की सुगन्ध से अपने - आप को भिगो लेने के . . . भिगो देने के!

ऐसे में कोई बहुत दिन से रूठा हो, बात बन-बन कर बिगड़ जा रही हो, वसंत की चढ़ी प्रत्यन्चा भी कोई हृदय न बेध पा रही हो तब एक और पुष्प बाण संधान करके भी देख लेना चाहिए . . . तो बात जरूर कुछ न कुछ बन ही जाती है . . . एक कोमल स्पर्श . . . ऐसे तरीके से कि बहुत कुछ बिगड़ता हुआ भी संवर जाय, ज्यों कोई बेल कहीं और झुक गई हो और हवा का एक झोंका आकर उसे फिर अपनी ओर कर दे . . . लिपटने और बिखरने के लिए बेबस!

अदा उतर आती है इस वशीकरण प्रयोग में जो केवल वसंतोत्सव के दिन ही किया जाता है, यह साधना का जटिल विधान नहीं, सही अर्थों में उत्सव की अनोखी शैली है, बस प्रत्यन्चा थोड़ी ढीली कर पुष्पाघात कर देना है **उद्ववर्धनम माला** के द्वारा जो आपके लिए भी किसी पुष्प-माला से कम सिद्ध नहीं होगी, आपके प्रिय के लिए तो पुष्प माला होगी ही।

गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो यह अनुपम अवसर . . . अपने रूठे हुए या कहीं और झुक गए, बेरूखी से भर गए जीवन-साथी को मना लेने के लिए . . . उपहार रूप में **उद्ववर्धनम माला** प्रदान कर क्योंकि अत्यन्त आकर्षक रत्नों से बनी विविध रंगों में सजी यह माला सौन्दर्य और श्रृंगार का एक साकार रूप ही है। **वसन्तोत्सव के दिन यही माला अपने प्रिय को प्रदान करने की परम्परा युगों पूर्व से चली आ रही है।** जिसको इन दुर्लभ मनकों की शैली में ढाल कर **उद्ववर्धनम माला** का रूप दिया गया है, और जिस व्यक्ति को भी यह माला भेंट में दे दी जाए उसके मन से सारे गिले-शिकवे और वैमनस्यता समाप्त हो ही जाती है। **प्रेमी-प्रेमिका अथवा पति-पत्नी के मध्य यह माला सुगन्ध बनकर हमेशा-हमेशा के लिए बस जाती है, जिसके फूल न तो कभी कुम्हलाएंगे और न फिर जीवन में ही कोई बासीपन आयेगा।**

छेड़छाड़ और शिकवे-शिकायतें तो फिर भी शेष रह जाती हैं क्योंकि यही तो वसंत के चिरस्थायी होने का भाव है!

यों होती है सौन्दर्या सिद्धि

अप्सरा साधनाएं की होंगी, किन्नरी और यक्षिणी साधनाएं भी जरूर की होंगी लेकिन क्या सौन्दर्या के नाम से परिचित हुए . . .

क्या एक लघु प्रयोग द्वारा ही इस रूपसी नवयौवना को जीवन भर के लिए बांधा जा सकता है?

क्यों नहीं. . .

''मोहिनी तंत्र'' का तो यही कहना है. . .

सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में जिस प्रकार अप्सराओं का वर्णन मिलता है उसी तरह अप्सराओं के सहयोगी वर्ग की भी साधनाएं तंत्र - शास्त्रों और इधर- उधर बिखरे पन्नों की तरह साधकों से मिल ही जाती है। इनके बारे में **मंत्र महोदधि** या **मंत्र महार्णव** जैसे ग्रंथों में भी वर्णन नहीं मिलता, क्योंकि यह वर्ग बस तांत्रिकों और उच्च कोटि के साधकों के जीवन में ही आमोद-प्रमोद का साधन रहा और उन्होंने सभी कोशिशें कर इन साधनाओं को छुपाए रखा, जिससे इनकी खूबसूरती बेदाग बनी रहे, और आम अप्सराओं की तरह सार्वजनिक न बन कर अछूती ही बनी रहे।

सहयोगी वर्ग की कहने से कोई गलत फहमी नहीं होना चाहिए कि ये सौन्दर्य या मादकता में अप्सराओं से कहीं कम तो नहीं! सच्चाई तो यह है कि इनकी साधना बेहद सरल होने की वजह से ही और अपने छल-छलाते यौवन में अपूर्व होने के कारण ही इन्हें एक अलग वर्ग बना कर रखना पड़ा, और उसे जानकारी के लिए सहयोगी वर्ग कहा जबकि सौन्दर्य . . .

घटय जघने कांची - मंच स्रजा कबरीभरम्. . .

बस गूंथी हुई घनी कबरीभरम (चोटी) ही नहीं सारी की सारी देह ही मादकता और उत्तेजकता में गुंथी-गुंथी **गीत गोविन्द** की पंक्तियों की तरह ही सरस यौवन की चमक से भरी - भरी. . .

कामरूपिणी वर्ग की सौन्दर्या! सौन्दर्य जब एक जगह ही सिमट आया हो तो उसे सौन्दर्या न कहकर और कहा भी क्या जाता? अलस नयन और सारे चेहरे को ही ढांक लेती पलकों की धूप - छांव, ठीक वसन्त की धूप- छांव जैसी ही नशीली और गहरी . . . दबी-दबी हंसी और उसको दबाने के सफल - असफल प्रयास में गालों पर पड़ जाने वाले गड्ढे जो होठों के दबने के बाद भी सब कुछ बोल दे. . . इसरार से भरकर खिंचती हुई लचीली देह जो उन्नत वक्षस्थल को और उन्मुक्त कर दे. . . **बस इस बार वसन्त ने अपने पुष्प बाण छोड़ने के लिए जो कमान खींची है वह सौन्दर्या की कमनीय और नाजुक लचीली देह ही है, शायद ही इस वसन्त में कोई इस आघात से बच पाए. . .**

और उपाय भी कितना सरल! ज्यों वसन्त की मादक बयार अपने अंग - अंग से खुद - ब - खुद आकर लिपटने को तैयार हो, फ़िज़ां में फैली खुशबू अपने - आप आकर नथुनों से भीतर तक उतर जा रही हो -- बस ऐसा ही अपूर्व सौन्दर्य रस, और कोमलता का मिलाप साधक से अपने - आप आकर लिपट जाता है एक छोटे से प्रयोग को कर लेने से, होली के बाद और चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पहले अर्थात् **दिनांक ३०.०३.६४** से **०५.०४.६४** के बीच। इस समय में किसी भी रात पीली धोती पहिन एकान्त में बैठ अपने सामने पीले कपड़े पर **एक सियार सिंगी** और एक **गोमती चक्र** रख, उस पर केसर व इत्र का लेप कर अच्छी सुगन्ध वाली अगरबत्ती और घी का दीपक जला लें और पीले फूल की पंखुड़ियों को चढ़ा कर **स्फटिक माला** से इस **मंत्र की केवल एक माला मंत्र** जप करें।

मंत्र -

ॐ प्रियश्यै आगच्छ प्रौं श्रौं फट्

माला पूरी होते न होते एक यौवन भार से लदी रूपसी तीव्र झटके से आकर साधक से बेल की तरह लिपट जाती है अपने कोमल और मादक गंध भरे शरीर के स्पर्श से साधक के रग - रग में हलचल मचाती हुई, इसके लिए आवश्यक है साधक अपना साधना कक्ष का दरवाजा पूरी तरह से बंद न करे उसे हल्का सा भिड़ा कर छोड़ दे। **इस साधना में प्रत्यक्षीकरण को लेकर कोई उहापोह ही नहीं क्योंकि यह तंत्र की साधना है जिसमें भूल - चूक या सन्देह का कोई स्थान नहीं।**

ध्यान रखें कि सियार सिंगी को केवल स्थापित ही करना है, उसका पूजन नहीं करना है। गोमती चक्र का ही पूजन करना है, और साधना की समाप्ति पर उसे सौन्दर्या से स्पर्श कराकर जीवन भर अपनी अंगूठी में यों बांध लेना है, ज्यों सौन्दर्या आपसे अलग हुई ही नहीं है।

और सौन्दर्या आपसे अलग होगी भी नहीं!

अहोभाव

हमारे पाठक प्रायः अपने पत्रों में पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अपनी मनोभावनाएं व्यक्त करने के क्रम में कोई लघु कविता या काव्यात्मक विवरण भेजते ही रहते हैं।

*उनकी इसी प्रतिभा को हमने एक दिशा देने का प्रयास किया है **"अहोभाव"** के माध्यम से क्योंकि यह शिष्य या पाठक का अहोभाव ही तो है. . .*

आपको पूज्यपाद गुरुदेव के प्रस्तुत चित्र के आधार पर अपनी भावनाएं काव्य की चार पंक्तियों में भेजनी है और पुरस्कार से भी अधिक आशीर्वाद स्वरूप में **प्रथम** आने पर **एस सीरीज** की छः पुस्तकों का सेट, **द्वितीय** स्तर पर तीन पुस्तकें अथवा **तृतीय** पुरस्कार के रूप में एक पुस्तक का पात्र भी बन जाता है। रचना मौलिक एवं अप्रकाशित तथा अप्रचारित होने का दायित्व आप को प्रविष्टि के साथ एक पन्ने पर घोषित करना होगा।

अपनी प्रविष्टि इस प्रकार प्रेषित करें --

सम्पर्क

अहोभाव (२२), गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,फोन-०११-७१८२२४८

आप भी ज्योतिषी हैं!

निश्चित रूप से! क्योंकि प्रकृति ने प्रत्येक को समान रूप से शक्तियां जो प्रदान की हैं।। आप को भी समय- समय पर बिना ज्योतिष ज्ञान के भी अनुभूति होती ही होगी, भविष्य की गर्भ में छिपी घटनाओं के संदर्भ में, भावी उथल-पुथल को लेकर और देश-विदेश में होने वाली घटनाओं के प्रति भी. . .

आप ऐसी ही घटनाओं के प्रति जो १ मार्च से ३१ मार्च६४ के मध्य घटने जा रही हों, हमें लिखकर भेजें, जिसके आधार पर आपके कुशल भविष्यवक्ता होने का प्रमाण मिल सके। आपका विवरण संक्षिप्त, अप्रकाशित, अप्रचारित एवं मौलिक हो। इस विषय में समस्त दायित्व प्रेषित करने वाले व्यक्ति का ही होगा। **प्रविष्टियां पत्रिका कार्यालय की सम्पत्ति होंगी।**

भविष्यवाणियों के सत्यापित होने के बाद आगामी अंक में उनका प्रकाशन किया जाएगा साथ ही आकर्षक पुरस्कार के साथ - साथ आपका चित्र सहित परिचय भी पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। प्रविष्टियों की संख्या अधिक होने पर निर्णय लॉटरी पद्धति द्वारा किया जाएगा। आपकी प्रविष्टियाँ हमें २८ फरवरी के पूर्व अवश्य ही प्राप्त हो जाएं।

सम्पर्क

"आभास"

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली.३४ , फोन- ०११-७१८२२४८

प्रकृति का अमृत

एवं

साधना की पुष्टि,

इन्हीं का सम्मिलित स्वरूप उतर आया है

में

''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' परिवार की ओर से **अरविन्द प्रकाशन** का एक नवीन प्रकाशन! मात्र चिकित्सा का ही नहीं, आयुर्वेद की ही भांति जीवन के प्रत्येक पक्ष का वर्णन, सम्पूर्णता और प्रामाणिकता से . . .

एक ऐसी प्रस्तुति जो आयुर्वेदिक पत्रिकाओं की भीड़ में अपना विशिष्ट स्थान बनाने जा रही है, क्योंकि इसमें साधना की पुष्टि, भी सम्मिलित है . . .

और इससे भी अधिक प्रखर आयुर्वेदज्ञ पूज्यपाद डा० नारायणदत्त श्रीमाली जी का वरद हस्त, आशीर्वाद एवं बहुमूल्य सूत्र प्राप्त . . .

साथ ही उनके अनेक ज्ञात-अज्ञात गृहस्थ व सन्यासी शिष्यों की खोजी गई दुर्लभ विधियां, प्रामाणिक उपचार!

जिसका प्रथम अंक ही विशेषांक होगा- **'सम्पूर्ण सौन्दर्य विशेषांक'** विस्तृत विवरण शीघ्र उपलब्ध।

राजनीतिक भविष्य व शेयर मार्केट

विधान सभा चुनाव के द्वारा प्राप्त परिणाम देश के स्थायित्व में कोई सकारात्मक भूमिका नहीं स्पष्ट करेंगे, वरन इनके कारण राजनीतिक उथल-पुथल का वातावरण अभी और तीव्र होगा जो अन्ततोगत्वा मध्यावधि चुनाव का कारण बनेगा। उड़ीसा एवं तमिलनाडु में राजनीतिक परिवर्तन की स्थितियां तीव्र होंगी तथा पश्चिमी बंगाल में जन-आंदोलन उग्र होंगे। **पृथकतावादी शक्तियां सक्रिय** होंगी और उत्तरपूर्व के राज्यों में अशान्ति का वातावरण तीव्र होगा। कश्मीर समस्या में कुछ कमी आएगी तथा भारत कश्मीर समस्या को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान के विरुद्ध कड़ी टिप्पणी करेगा। पड़ोसी राज्यों से भारत के सम्बंध सुधार की ओर अग्रसर होंगे, किंतु उनका कोई स्थायी अथवा दूरगामी परिणाम निश्चित नहीं होगा। वर्मा से उग्रवादियों को लेकर सम्बंध तनाव पूर्ण होंगे। विश्व के रंगमंच पर अमेरिका, कश्मीर समस्या में भारत के विरुद्ध व्यक्तव्य देगा। यूरोपीय देशों का झुकाव एवं रक्षा आयुध सम्बंधी बिक्री को लेकर उनका पाकिस्तान के प्रति झुकाव स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। इजराइल की स्थिति शांत रहेगी। मध्य पश्चिम में स्थिति सम्पूर्ण रूप से शांत रहेगी। **अरब देशों का भारत के प्रति रुख सकारात्मक रहेगा,** किंतु इसका लाभ लेकर भारत एवं पाकिस्तान सम्बंधों के तनाव में कोई प्रभाव नहीं पड़ सकेगा। कनाडा अपनी अप्रवासी नीतियों को सख्त करेगा, जिससे विशेष रूप से एशियाई मूल के निवासियों को ही सबसे अधिक कष्ट पहुंचेगा। यह माह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि जहां-जहां भी जातीय संघर्ष अथवा सत्ता संघर्ष की स्थितियां हैं वहां रक्तपात जैसी घटनाएं नहीं होगीं, अन्यथा सम्पूर्ण रूप से यह माह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देशों के परस्पर सम्बन्धों में खिंचाव से ही अधिक सम्बन्धित रहेगा।

शेयर मार्केट

इस माह शेयर मार्केट के भाव में जबरदस्त उछाल आएंगे। तेजड़ियों की चांदी रहेगी, और वे अपनी योजना के अनुसार परिवर्तन करा पाने में सफल भी रहेंगे। **इस माह के विशेष शेयर हैं**-- डी० सी० एम०, डी० सी० एम० श्रीराम कॉन्सोलीडेटेड, बिन्दल एग्रो केमीकल, एस्कार्ट्स, लारसन एण्ड टुब्रो, होटल लीला वेन्चर, धामपुर सुगर, पशुपति एग्रीलोन लि०, कोलगेट, एस० बी० आई० होम फाईनेन्स, किर्लोस्कर। **जिन शेयरों की स्थिति में इस माह उतार आयेगा, वे हैं** - डी० सी० एम० श्रीराम इन्डस्ट्रीज, टिस्को, वी० पी० एल० सेन्यो यूटीलिटी। नेस्ले इंडिया की स्थिति में भी मामूली सा उतार आएगा। नागार्जुना फर्टिलाइजर अपनी स्थिति मजबूत करेगा। प्रीमियर आटो की स्थिति में भी सुधार होगा, लेकिन आगामी समय में यह मुनाफे का सौदा नहीं होगा। ईस्ट फर्टिलाइजर, वीडियोकोन एप्पल, **ये सब इस माह के और आगामी समय में भी सुरक्षित रहने वाले शेयर हैं।** ए० सी० सी० और इंडियन रेयन पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष मध्यम स्थिति में ही हैं। गुजरात नर्मदा, लिप्टन, आई० टी० सी०, जुआरी एग्रो, महेन्द्रा, मास्टर शेयर — इनकी स्थिति ढुलमुल बनी रहेगी।

किराना बाजार में इस माह भारी उतार-चढ़ाव होंगे। काली मिर्च, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, दालचीनी, हल्दी, अजवाइन, और इमली के दामों में भारी उछाल आएगा। जीरा एकदम से लुढ़केगा। केसर, सोंठ, पोस्त दाना मध्यम रहेंगे। दाल मूंग, मल्का मसूर, मोठ के दामों में वृद्धि होगी। राजमा, चित्रा नीचे जायेगा। दाल अरहर भारी उछाल लेगी। वेसन के दामों में उतनी ही गिरावट आएगी। गेंहू, गेहूं दड़ा, सूजी, एवं चावल परमल- इनके दाम सामान्य से ऊपर जाएंगे। मैदा, चक्की का आटा और चावल बासमती- इनके दाम स्थिर रहेंगे। सफेद मटर ढुलमुल रहेगी। जौ का व्यापार प्रत्येक दृष्टि से लाभ देने वाला होगा। मक्की व हरी मटर की बाजार में मांग बनी रहेगी। मेवा-बाजार में अखरोट की मांग बढ़ेगी। अंजीर भी अच्छा व्यापार देगा। बादाम गिरी केलीफोर्निया और किशमिश कंधारी के दामों में गिरावट आएगी। काजू टुकड़ा, छुआरा, और कालीद्राख, अच्छा व्यापार देगी। सर्राफा-बाजार में चांदी के दामों में उछाल आएगा। सोना कुल मिलाकर स्थिर ही रहेगा। जौहरी बाजार में रत्नों की मांग तेजी से बढ़ेगी, लेकिन दामों में उस अनुपात से वृद्धि नहीं होगी।

रस विलास की एक मात्र साधना है

मातंगी महाविद्या

दस महाविद्या स्वरूपों में देवी का एक स्वरूप है भगवती मातंगी।जो स्वरूप है सुख, आनन्द और विलास का. . . जीवन के रस प्रधान तत्वों का पूर्ण रूप से जागरण सम्भव है तो मातंगी उपासना से ही, क्योंकि रस - विलास भी तो जीवन की एक मूलभूत स्थिति है. . .

भगवान शिव का ही एक नाम मतंग भी है और ऐसे मतंग स्वरूप शिव की शक्ति है भगवती मातंगी। विलास जीवन का हो या वाणी का, विलास के अभाव में जीवन का कोई अर्थ ही नहीं क्योंकि विलास ही जीवन का सौन्दर्य है। विलास का तात्पर्य है जीवन की समस्त कलाओं के प्रति रसमय होने की मानसिकता प्राप्त करना, क्योंकि जीवन में केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, यदि धन भी आवश्यक है तो उसके साथ आनन्द भी परम आवश्यक है। **देवी के उग्र स्वरूपों की आराधना भी अपूर्ण है यदि हृदय में मातंगी का विलास नहीं है।** गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने में तो मातंगी साधना की कोई समता ही नहीं और मातंगी ही वाणी -विलास की भी देवी है। एक रूप में इनको मतंग मुनि की कन्या माना गया है और इसी कारणवश उन्हें मातंगी कहा गया है। श्याम स्वरूपा मातंगी का रूप तो प्रत्येक देवी से निराला, मां भगवती जगदम्बा के सामान्य सभी स्वरूपों से अलग, न गौर वर्णीय, न महाकाली के समान कृष्ण वर्णीय अपितु श्याम वर्णीय यह देवी सौन्दर्य और परिष्कृत भावनाओं की साकार प्रतिमूर्ति ही तो है।

माणिक्य से निर्मित वीणा को बजाती हुई आह्लादित करने वाली, माधुर्य युक्त शब्द ध्वनित करने वाली, इन्द्रनील मणि के समान कोमल अंगों वाली मतंग ऋषि की कन्या देवी मातंगी का मैं मानसिक स्मरण करता हूं।

मातंगी को वाणी- विलास की देवी मानने के उपरोक्त ध्यान में ही छुपा है एक रहस्य जो वास्तव में किसी भी पुरुष या स्त्री के जीवन की सम्पूर्णता का रहस्य है। भारतीय साधना पद्धति में वाक् को ही शक्ति कहा गया है। वाक् को ही आत्मविद्या माना गया है और सच भी तो है कि केवल उसी के पास वाक्- सिद्धि हो सकती है जो जीवन में प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण हो। वाक् पुष्टि, आत्म विश्वास का ही तो दूसरा रूप है और मातंगी वास्तव में जीवन की ऐसी परिपूर्णता प्रदान करने की आधारभूत देवी है।

इस युग की प्रवृत्तियों और भावनाओं के कारण दस महाविद्या साधनाओं में केवल बगलामुखी या तारा महाविद्या को प्रधानता दी गयी, क्योंकि अधिकांश व्यक्ति जीवन में या तो शत्रुओं से पीड़ित हैं या तो धन के अभाव से खिन्न, लेकिन इसके उपरान्त भी जीवन की इन आवश्यक

स्थितियों के निराकरण करने के पश्चात् जीवन को एक सुललित भावना और कोमलता भी प्रदान करनी ही चाहिए। साधकों ने इस पक्ष पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया और इसी कारणवश मातंगी महाविद्या की साधना अतिमहत्वपूर्ण होते हुए भी प्रचलन में नहीं आ सकी।

देवी का प्रत्येक स्वरूप अपने आप में किसी एक प्रमुखता के साथ सम्पूर्ण होता है। ऐसा नहीं कि व्यक्ति मातंगी की साधना करे और उसके जीवन में अभाव रह जाए। मातंगी एक ओर सुललित और कोमल हैं, श्यामांगी और सुप्रिया है, फिर वहीं अपने उग्रमय स्वरूप में चाण्डाली भी है। मातंगी का ही एक नाम **उच्छिष्ट चाण्डाली** भी है क्योंकि वह अपने संग शिव का चाण्डाल रूप भी समाहित किए है, इसी कारण यह सहज रूप से विघ्नहर्त्री भी हैं और सत्य ही तो है कि जहां एक ओर ऐसा निवारक स्वरूप होगा वहीं तो जीवन के सौन्दर्य की स्थितियां भी निर्मित हो सकेंगी।

दस महाविद्याओं में अपेक्षाकृत कम प्रचलित किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण . . . विशेष रूप से वैवाहिक जीवन को रसमय व परिपूर्ण करने के लिए. . . मातंगी

मातंगी साधना स्पष्ट शब्दों में पूर्ण पौरुष की साधना है। दस महाविद्याओं में और कोई ऐसी साधना है ही नहीं कि व्यक्ति उसे सम्पन्न करे और पूर्ण पौरुषता प्राप्त करे, किंतु मातंगी एक मात्र ऐसी महाविद्या साधना है जिसको सम्पन्न कर व्यक्ति यदि पौरुषहीन भी हो गया हो तो पुनः पूर्ण क्षमतावान, सौन्दर्यवान सुदृढ़ पुरुष बन सकता है, आत्मविश्वास से भरा हुआ और सभी कला पक्षों को अपने-आप में समाहित करता हुआ। **महर्षि विश्वामित्र** ने शोधपूर्वक ऐसा उपाय प्राप्त किया जिसके द्वारा एक सामान्य साधक भी इसके द्वारा अनुकूल लाभ प्राप्त कर सकता है और उन्होंने इसी महाविद्या पर आधारित एक सफल प्रयोग वर्णित किया जिसे कम पढ़ा लिखा साधक भी अपने जीवन में उतार सकता है भले ही वह महाविद्या साधना न सिद्ध करे किंतु अनुकूलता तो प्राप्त कर ही सकता है।

जीवन की कई स्थितियां ऐसी होती है जहां व्यक्ति लज्जावश अथवा मर्यादावश खुलकर कुछ नहीं कह सकता और व्यक्ति के यौन जीवन से संबंधित सभी पक्ष इसी श्रेणी में आते हैं, कैसा भी, कोई भी पक्ष हो या कैसी भी कोई भी दुर्बलता हो, व्यक्ति अपने कष्ट को कागज पर साफ-साफ लिखकर यंत्र के सामने रखकर यदि इस साधना को सम्पन्न करता है तो निश्चित रूप से उसे अनुकूलता प्राप्त होती है और यदि इस प्रयोग को व्यक्ति आगे भी नियमपूर्वक करता रहता है तो मातंगी महाविद्या की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मातंगी महाविद्या की सिद्धि का अर्थ है कि व्यक्ति केवल नगर या क्षेत्र का ही नहीं वरन देश का प्रख्यात वक्ता बन जाता है। साक्षात् सरस्वती उसके जिह्वा पर विराजमान हो जाती है उसे ऐसी अद्भुत शक्ति मिल जाती है कि उसकी बातों को घंटों-घंटों लोग मुग्ध होकर सुनते ही रह जाते है और **शक्तियामल तंत्र** में यहां तक वर्णन किया गया है कि भगवती मातंगी के सिद्ध साधक का कहा वचन मिथ्या हो ही नहीं सकता यदि समस्त परिस्थितियां प्रतिकूल भी हों तब भी प्रकृति बाध्य हो जाती है ऐसे साधक के वचन को सार्थक करने के लिए। एक प्रकार से उसे वरदान देने की और श्राप देने की शक्ति मिल जाती है। उसके चेहरे पर एक अनोखा लावण्य खिल उठता है फिर चाहे वह गोरा हो अथवा सांवला, कद - काठी कैसी भी हो लेकिन सामने वाला उसको ठिठक कर देखने के लिए बाध्य हो ही जाता है क्योंकि मातंगी का स्वरूप भी तो अपने- आप में अपूर्व लावण्य एवं

ऐसी ही मोहकता से भरा है।

कहते हैं कि मातंगी मंत्र का नित्य एक बार उच्चारण अथवा स्मरण मात्र कर लेने से ही उस दिन के समस्त पापों का क्षय हो जाता है। जो भी साधक तंत्र के क्षेत्र में जाकर विशिष्ट शक्तियों को हस्तगत करना चाहते हैं वे ऐसी साधनाओं में प्रवृत्त होने के पूर्व महाविद्या मातंगी से संबंधित प्रयोग अथवा पूर्ण मातंगी साधना अवश्य ही सम्पन्न करते हैं जिससे वे वचन सिद्ध अपूर्व तेज व सौन्दर्य से भरकर तंत्र में सहज ही सफल हो सकें।

> **पुरुष का आधार है वाक् और वाक् का अर्थ है . . . मातंगी!**
>
> **आत्मविश्वास देने में समर्थ, दस महाविद्याओं में सर्वथा अद्भुत ही!**

भगवती मातंगी की यह विद्या विशिष्टतम होने के कारण प्रायः गोपनीय ही रही किंतु विश्वामित्र ने सर्वप्रथम इसको सभी साधकों के लिए सुलभ किया।

यौवन, बल, ताजगी और दिन - प्रतिदिन के एक ढर्रे में बंधे जीवन का एक परिवर्तन संभव हो पाता है तो मातंगी देवी की कृपा से और फिर उसी जीवन में सहज ही व्यक्ति को ऐसी सरसता और आनंद प्राप्त होने लगता है, ऐसा नवीन सृजन होने लगता है कि व्यक्ति अचम्भित हो जाता है एक प्रकार से उसके मन पर पड़े अनावश्यक बोझ हट जाते हैं और वह जीवन का सौन्दर्य निहारने में समर्थ हो पाता है। मातंगी की साधना से यह अवश्य होता है कि व्यक्ति के अंदर आनंद का सोता सा फूट पड़ता है जिससे सहज ही बसन्त ऋतु जैसा वातावरण उसके तन- मन पर छा जाता है।

प्रातः साधक उठकर भगवान सूर्य को प्रणाम करे, अर्घ्य दे यदि उसे संध्या विधि का ज्ञान हो तो संध्या सम्पन्न करे अथवा गायत्री मंत्र का एक माला मंत्र जप करे। इसके बाद पहले से ही प्राप्त किए हुए मातंगी महायंत्र को किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में स्थापित कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे, पात्र के अभाव में पुष्प की पंखुड़ियों पर भी यंत्र स्थापित किया जा सकता है।

मातंगी यंत्र का ही इसमें सर्वाधिक महत्व है जो महर्षि विश्वामित्र प्रणीत नर्वाण मंत्रों से सिक्त हो ऐसे यंत्र के चारों ओर **चार क्लीं बीज** स्थापित करें जो पूर्ण पौरुष प्रदायक अनंग प्रयोग से सिद्ध हो यदि आपको **मातंगी देवी का प्राण प्रतिष्ठित चित्र** मिल सके तो उसे मढ़वा कर साधना स्थान में अवश्य स्थापित करें।

गणपति पूजन एवं गुरु पूजन के बाद क्रमशः एक माला गणपति मंत्र व पांच माला गुरु मंत्र का जप करें -

मंत्र -

ॐ गं गणपतये नमः

तथा सभी यंत्र चित्रों का पूजन कुंकुम अक्षत, पुष्प आदि से करने के बाद मातंगी के मूल मंत्र का पांच माला मंत्र जप करें -

मंत्र -

।। ॐ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट् स्वाहा।।

प्रथम दिन ५ माला मंत्र जप करना आवश्यक है उसके पश्चात् अगले माह तक प्रतिदिन केवल २१ बार मंत्र उच्चारण ही पर्याप्त है।

यदि साधक इस बीच में कहीं बाहर जाता है तो केवल अपने साथ **मातंगी महायंत्र** एवं **रसेश्वरी माला** ही ले जाए, चारों **क्लीं बीज यंत्रों** को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दे तथा जब भी अवसर मिले प्रतिदिन केवल एक माला मंत्र जप कर ले इसमें समय का बंधन नहीं है। तीस दिनों तक नियमित यह क्रम करने के बाद साधक चारों क्लीं यंत्रों को किसी हरे और फले-फूले खेत अथवा उद्यान में चुपचाप फेंक दे तथा शिव मंदिर में कुछ भेंट चढ़ा दे। इस प्रकार से यह साधना सम्पूर्ण होती है। मातंगी महायंत्र को साधक अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे और रसेश्वरी माला को निरंतर अपने गले में धारण किए रहे। रूप, रस, विलास, भोग और कायाकल्प की यह एक मात्र व अनूठी महाविद्या साधना है।

धन प्रदायक लक्ष्मी प्रयोग

यह एक दिन का प्रयोग है जो किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। चांदी की थाली में कुंकुम से अष्टदल बना लें। इसके ऊपर चावलों से 'श्रीं' अंकित कर [illegible] यंत्र रखें। सफेद धोती पहन कर सफेद आसन पर बैठ पूरब की ओर मुंह कर निम्न मंत्र की २ माला कमल गट्टे की माला से जप करें।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहाः

दूसरे दिन सम्भव हो तो पांच कन्याओं को भोजन कराएं, दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। ऐसा करने से पूर्ण भौतिक सुख एवं आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है।

(पृष्ठ-२२ का शेष)

है . . . परमसत्ता से, परम श्री नारायण से साहचर्य कर ही तो बन सकता है कोई भी व्यक्ति योगी, और नारायण सदृश्य हो जाने पर फिर उससे भला कैसे दूर रह सकती है लक्ष्मी?

"राजा, योगी, अगन, जल, इनकी उल्टी रीत"

फिर योगी तो और भी अधिक हठीला ही हुआ, तंत्र का बल हो, योग का बल हो या अपने प्राणों का बल हो, यदि किसी ने छेड़ दिया तो फिर संभव ही नहीं कि वह देव या देवी साक्षात् उपस्थित न हो, अपने मनचाहे रूप में प्रकट न हो, अपना मनोवांछित प्रदान न करे . . . घटित कर देते हैं योगीजन किसी भी देवी या देवता का स्वरूप अपने ही बल से, तभी तो एक लंगोटी लगाए सामान्य सा दिखता हुआ कोई भी योगी, किसी भी ऊंचे से ऊंचे धनवान व्यक्ति या पदाधिकारी से अधिक मस्ती या दर्प में चूर रहता है।

आश्रम की व्यवस्था, धन के अभाव और परिस्थितियों की विवशता के कारण संभव नहीं हो सकती थी, शंकराचार्य के जीवन में निरंतर भ्रमण करते रहने के कारण । समस्त शिष्यों को, समस्त गृहस्थ साधकों को एकीकृत करने के अथक प्रयासों के बाद अब यह आवश्यकता अनुभव हो रही थी कि एक विशाल भवन का निर्माण किया जाए, एक संस्था की नींव डाली जाए, शिष्यों के आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के साथ-साथ उन योजनाओं को मूर्त रूप दिया जाए, जिनका स्वप्न लेकर वे अवतीर्ण हुए थे और इसी की नींव आज पड़ने जा रही थी। आज सांय को उन्होंने अपने समस्त शिष्यों को पूर्व संकेत दे दिया था कि वे क्या करने जा रहे हैं।

. . . मैं कहूं और लक्ष्मी

नृत्य न करे, यह संभव ही नहीं . . . एक वाक्य ने ही समस्त रहस्य खोल दिए थे उनके चुने हुए उन शिष्यों के समक्ष, और नृत्य का अर्थ लौकिक अर्थों में लिया जाने वाला अर्थ नहीं . . . **लक्ष्मी उपस्थित हो पूर्ण श्रृंगार कर, अपने पूर्ण सौन्दर्य और लावण्य के साथ साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति करे,** उसके कटाक्षों पर गतिशील हो, यही तो लक्ष्मी का नृत्य है . . . बिरले ही जानते हैं ऐसा नृत्य कराने की कला और ऐसा नृत्य का आनंद लेने का सौभाग्य, अन्यथा क्षीरसागर की उस सुखद स्थली को छोड़कर क्यों आने लगी लक्ष्मी, किसी 'एक वस्त्रधारी' साधु या सन्यासी के आश्रम में।

किंतु धन की आवश्यकता और धन का महत्व वास्तव में सद्गृहस्थ के समान ही साधु के जीवन में उतना ही आवश्यक है और विशेष रूप से तो तब, जब वह कोई ऐसा-वैसा साधु न होकर एक ज्ञानी पुरुष हो, चैतन्य विभूति हो, जो आद्यशंकराचार्य स्वयं थे . . . एक विलक्षण व्यक्तित्व, एक चेतना पुरुष और इन सबसे भी ऊपर उठते हुए एक योग्य गुरु, जिसे शास्त्रों में **'सद्गुरु'** की संज्ञा दी गई है। वास्तव में आद्य शंकराचार्य इस धरा पर, भारत की इस भूमि पर, सनातन धर्म की स्थापना से भी अधिक गुरु-शिष्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए ही अवतीर्ण हुए थे क्योंकि गुरु-शिष्य परम्परा का अविच्छिन्न क्रम ही तो सनातनता है, जिसमें प्रवाह है, जिसमें जीवन का वास्तविक अर्थ है और जिसके कारण परम्पराओं व श्रेष्ठताओं के मृत हो जाने का भय नहीं . . . आद्य शंकराचार्य यही कृत्य संपन्न करना चाहते थे अन्यथा उस सन्यासी स्वरूप में विद्यमान एक दिव्य आत्मा को धन की क्या आवश्यकता थी। उनका स्वयं का कार्य तो एक वस्त्र और भिक्षा के द्वारा प्राप्त अन्न से हो ही जाता था। किंतु सैंकड़ों-शिष्यों का पोषण और पीठ के स्थापन द्वारा सनातन धर्म की विजय-पताका फहराने का जो स्वप्न उनके मानस में था, उसकी पूर्ति के लिए धन की नितान्त आवश्यकता थी ही और आज देश के चार कोनों पर बने चार पीठ उनकी गौरवागाथा के जीवित-जाग्रत स्तम्भ बनकर खड़े हैं। **ज्यों प्रकाश-स्तम्भ तूफानों के बीच में भटके हुए जहाजों को मार्ग दिखाने का कार्य करते हैं, वही कार्य सम्पन्न होता है ऐसे मठों और पीठ के स्थापन से।**

साथ ही अपने शिष्यों को एक प्रकट रूप भी दिखाना था, अपने तंत्रमय स्वरूप का, ज्ञान और योगी की क्षमता के मिले-जुले स्वरूप का। एक चुनौती से भी अधिक यह तो एक घटना ही थी अपने शिष्यों के मुर्दा पड़ गए दिलों में चेतना और उमंग की नई लहर दौड़ाने की।

गोदावरी का पावन तट, ऊबड़-खाबड़ भूमि पर बैठे हुए आह्लादित शिष्य, बस अगले पल की प्रतीक्षा में क्योंकि क्रियाएं तो आरम्भ हो ही चुकी थीं पूज्यपाद गुरुदेव आद्य शंकराचार्य द्वारा। कौन समझता उन विलक्षणताओं को और उन क्रियाओं को, उनकी श्रेष्ठता को। उसको समझने के पूर्व एक उच्चता और ज्ञान की श्रेष्ठता प्राप्त करना भी तो आवश्यक होता है और जो पहले से ही जान चुके होते तो वे शिष्य ही क्यों होते? **जो अज्ञानी हैं वही तो शिष्य हैं** और इसमें भी जीवन का एक नर्तन है, अपने पूज्य गुरुदेव से साक्षात् होकर ज्ञान प्राप्त करने का जो अनिवर्चनीय आनंद है, उसकी तो संसार के किसी भी आनंद से तुलना की ही नहीं जा की सकती . . . एक-एक बूंद अमृत की टपकती है — ज्ञान के अमृत की, और शिष्य रूपी चकोर उसका पान कर आत्म विभोर हो जाता है। संसार का प्रत्येक सुख और आनंद इसके समक्ष गौण हो जाता है।

सौभाग्य होता है जीवन का, कि साक्षात् सदेह गुरुदेव प्रयोग सम्पन्न कराएं और व्यक्ति अपनी आंखों से और अपने रोम-रोम को आंख बनाकर उस चैतन्यता को देख सके, यह एक पीढ़ी का सौभाग्य युगों-युगों में होता है। आने वाली पीढ़ियां तो उस सौभाग्य की कथाएं पढ़ती हैं और कल्पना करती हैं कि कैसे अद्भुत रहे होंगे वे लोग, जो ऐसे व्यक्तित्व के पास बैठे, जो भगवान बुद्ध के साथ रहे, जो भगवान कृष्ण के साथ रहे या आद्य शंकराचार्य जैसे प्रखर युगपुरुष के चरणों में बैठे और ऐसे युग में भी सैकड़ों-हजारों ऐसे क्षणों के दृष्टा नहीं बन पाते।

. . . क्योंकि यह प्रकृति का नृत्य होता है, सम्पूर्ण प्रकृति को आलोड़ित -- विलोड़ित कर देने की घटना होती है। ऐसी घटनाएं सामान्य तो नहीं कही जा सकतीं . . . एक शीतलता छा गई वातावरण में, अद्भुत व दिव्य, जैसे एक चांद नहीं,

वह प्रयोग जिससे लक्ष्मी प्रकट हुई

सदियों तक गोपनीय रहा यह प्रयोग, जिसके द्वारा आद्य शंकराचार्य लक्ष्मी का साक्षात् कर सके, और अपने शिष्यों के सामने पूर्णता से तंत्र का वर्चस्व स्थापित कर सके। अपने गुरु आचार्य गोविन्द पाद द्वारा उन्हें यह विद्या मौखिक रूप से मिली थी जिससे वे भविष्य में चलकर शिष्यों का भरण-पोषण करने और आश्रम की व्यवस्था सम्हालने में सक्षम हो सके।

एक विलक्षण प्रयोग जिसका एक - एक बीज ही अपने आप में लक्ष्मी का एक- एक स्वरूप समाए है।

एक **भोगवरदा** प्राप्त कर **पांच लक्ष्मी साफल्य** उस पर स्थापित करते हुए सर्वथा अप्रयुक्त **कमल गट्टे** की माला को लेकर यदि निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र जप होली की रात में ११.४२ से १२.३६ के मध्य कर ली जाए तो कोई कारण ही नहीं कि लक्ष्मी सूक्ष्म अथवा जाज्वल्यमान रूप में साधक के समक्ष समस्त श्रृंगार कर उपस्थित न हो।

मंत्र

ॐ श्रीं ऐं श्रीं श्रैं श्रौं श्रृं फट्

कई-कई चंद्रमाओं का प्रकाश आज की पूर्णमासी में उतर आया हो और गोदावरी उद्दाम यौवन से भरी नवयुवती के समान विरह से व्याकुल होकर तड़प के साथ अपने प्रिय से मिलने चल पड़ी हो। वृक्षों का मंद प्रवाह मंद होते हुए भी एक मूक आंदोलन से भर गया था . . . लक्ष्मी भगवती जगदम्बा का, उनके त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से एक स्वरूप लक्ष्मी उसके आगमन पर तो प्रकृति को इस प्रकार स्वागत के लिए उठकर खड़ा होना ही था और केवल भगवती लक्ष्मी का ही नहीं ऐसे योगी का अभिनंदन करने के लिए भी।

तंत्र की क्रियाएं सम्पन्न हुईं और सम्पूर्ण वातावरण मधुर सुगंध और प्रकाश से भर गया, साक्षात् कर सके लक्ष्मी का केवल वे ही शिष्य जो साधना की एक स्थिति तक जा सके थे, देवी के त्रिवर्गात्मक स्वरूप को देखने की पात्रता अपने अंदर विकसित कर सके थे, इस भूमि-तत्व से मुक्त होकर आकाश में विलीन होने का सामर्थ्य प्राप्त कर सके थे . . . अन्यथा शेष तो केवल एक सुगंध और आभूषणों की ध्वनि के ही साक्षी बन सके।

जीवन धन्य हो गया उनका जिन्होंने भगवती लक्ष्मी को अपनी आंखों से इस धरा पर उतरते हुए देखा। स्मित हास्य, लावण्यमय स्वरूप, अत्यन्त मधुर सुगंध और कृपा-कटाक्षों का ऐसा नर्तन जो कि वास्तव में लक्ष्मी का नर्तन था, जो कि वास्तव में कृपा-दृष्टि थी। जीवन की सुगंध और जीवन का आह्लाद या संपूर्ण वातावरण पद्मवत् ही प्रतीत होने लग गया था।

यही थी वह घटना जब शंकराचार्य ने प्रथम बार लक्ष्मी को साक्षात् अपने समक्ष उपस्थित होने के लिए बाध्य कर दिया और एक प्रकार से आबद्ध कर लिया था अपने दम्भ और गर्व से नहीं, वरन् अपने योग के बल से। आगे चलकर जब आद्य शंकराचार्य ने अपने योग-बल से एक वृद्धा के घर में धन की वर्षा कराई और प्रसिद्ध **कनक धारा स्तोत्र** की रचना की, उसके गर्भ में यही रहस्य है। अपनी प्रसिद्ध रचना कनकधारा स्तोत्र में उन्होंने जिस प्रकार से भगवती लक्ष्मी के संपूर्ण लास्य का, संपूर्ण सौंदर्य और श्रृंगार का वर्णन किया है, क्या कोई व्यक्तित्व बिना आंखों से देखे इस प्रकार से वर्णित कर सकता है? केवल देवी के एक स्वरूप का वर्णन ही नहीं लक्ष्मी के सम्पूर्ण नृत्य को ही उन्होंने उतार लिया अपने स्तोत्र में, क्योंकि उनकी आंखों के सामने और मानस में लक्ष्मी का जो स्वरूप एक क्षण विशेष में अंकित हो गया था, वही काल के किन्हीं क्षणों में काव्यबद्ध होकर स्तोत्र के रूप में ढल गया।

नृत्य का अंकन तो काव्य के माध्यम से ही संभव है और लक्ष्मी का संपूर्ण स्वरूप काव्य व नृत्य का समवेत स्वरूप ही है।

शिव विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका - पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

होली पर तंत्र के १०८ प्रयोग

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
राजोग	१३	६०/-
देव्यारूपा	१३	११०/-
चंद्र विराग	१४	५१/-
लोहिता	१४	४५/-
जगुना	१४	१०५/-
रूपारंग	१४	७०/-
सुढार	१४	१२०/-
मोरतुंग	१४	६०/-
शोण	१४	७५/-
तुमुल	१४	१००/-
जम्भा	१४	७०/-
दो गोमती चक्र	१५	४२/-
दसौधी	१५	६०/-
शर्वाणी	१५	६०/-
तांत्रोक्त नारियल	१५	६०/-
जतीन	१५	१२०/-
कोटिल	१५	५१/-
तांत्रोक्त फल	१५	५१/-
होलिका	१५	८०/-
सिद्धि फल	१६	५१/-
कंचुकी	१६	४५/-
अकुड़ा	१६	११०/-
गोखुरा	१६	२१०/-
कास्तुनी	१६	६०/-
कटवहेड़ी	१६	८०/-
नवांग	१६	१५०/-
तुमद्रीर	१६	६०/-
कुमकुमी	१६	३००/-
रक्तरूपा	१६	७५/-
भटसर	१७	११०/-
तक्षकरूपा	१७	६०/-
गंडिनी	१७	१००/-
विचित्रा	१७	१५०/-
कौतुकी	१७	६०/-
वंगिनी	१७	६०/-
ज्वलित	१७	१२०/-
अवोला	१७	१५०/-
तुरणी	४९	१२०/-
अंतुला	४९	१००/-
वेतुना	४९	१८०/-
वक्त्रामृत	४९	६०/-
सोगुणी	४९	१५०/-
डुंगरू	४९	१००/-
नफीसी	४९	७०/-
निड्डूर	४९	११०/-
तिलतिला	४९	६०/-
रतिललित	४९	१२०/-
गंदुमी	५०	६०/-
कैवल्य मणि	५०	६०/-
अर्धसिंहली	५०	१००/-
हंसमुक्तक	५०	६०/-
शिरोसुरा	५०	७५/-
कालप्रभा	५०	१४०/-
दत्तात्रेय मुद्रिका	५०	१५०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
कामाक्षी काली यंत्र	२०	२४०/-
पन्द्रह पाटला	२१	१६५/-
विद्ध माला	२१	१२०/-
अघोर चामुण्डा सिद्धि यंत्र	२५	२०१/-
शून्य सिद्धि यक्ष यंत्र	२५	१५०/-
अघोर पीड़ा नाशक यंत्र	२५	३००/-
रत्नोल्लसत महायंत्र	२८	२२२/-
श्री सुन्दरी माला	२८	२४०/-
पंचागुली देवी का चित्र	३०	११/-
पंचागुली यंत्र	३०	२४०/-
कर्णपिशाचनी यंत्र	३१	३२०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
काली हकीक माला	३१	१५०/-
छाया पुरुष यंत्र	३१	३००/-
हकीक माला	३१	१५०/-
मंगल यंत्र	३७	२४०/-
मंगल माला	३७	१५०/-
चौबीसा यंत्र मुद्रिका	३७	१२०/-
होलिका यक्षिणी यंत्र	४४	२४०/-
गर्भसार	४४	१५०/-
पांच मद्राग	४४	१००/-
रक्त स्फटिक माला	४४	२४०/-
भैरव गुटिका	४४	१००/-
नौ मकर केतु	५४	१०५/-
नवतिका माला	५४	३००/-
गुरु यंत्र	६१	२४०/-
जलद माला	६१	१२०/-
स्वप्न सिद्धि गुटिका	६२	१००/-
पारद शिव लिंग	६५	३००/-
पांच लघु नारियल	६८	६०/-
उद्ववर्धनम् माला	६६	४५०/-
सियार सिंगी	७२	२४०/-
एक गोमती चक्र	७२	२१/-
मातंगी महायंत्र	७६	२४०/-
चार क्लीं बीज	७६	६०/-
रसेश्वरी माला	७६	१२०/-
लक्ष्मी यंत्र	७६	२४०/-
कमल गट्टे की माला	७६	१५०/-
भोग वरदा	७८	७०/-
पांच लक्ष्मी साफल्य	७८	१०५/-

दीक्षा

राजयोग दीक्षा	३३	६०००/-
क्रिया योग दीक्षा	३५	६०००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा		२१००/-
रोगमुक्ति दीक्षा		२१००/-
ज्ञान दीक्षा		६००/-
सरस्वती दीक्षा		१५००/-
जीवन मार्ग दीक्षा		६००/-
अप्सरा दीक्षा		२४००/-
यक्षिणी दीक्षा		२४००/-
किन्नरी दीक्षा		२४००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा		५१००/-
रावण कृत कुबेर सिद्धि दीक्षा		३५००/-
मनोवांछित पूर्ण दीक्षा		६०००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता -

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१(राज.), फोनः०२६१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

गुरुधाम,३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, फोन : ०११-७१८२२४८

महाशिव रात्रि – १०.०३.६४

रुद्राभिषेक एवं तांत्रोक्त शिवपूजन युक्त साधना शिविर गुरुधाम दिल्ली में

सम्पर्क **शिविर शुल्क ३३०/-**

गुरुधाम, ३०६, कोहाट इन्क्लेव

पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४,फोन-०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस व हिन्दी प्रैस, २, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्प्लैक्स, वज़ीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित ।

क्योंकि इसी अवसर पर विशिष्ट साधनाएं और सिद्धियों के द्वारा पूज्यपाद गुरुदेव अपने शिष्यों को पूर्णता प्रदान करने जो जा रहे हैं!

एक विशेष मुहूर्त जो न पहले घटित हुआ है न भविष्य में घटित होगा *जब चैत्र नवमी का संयोग हुआ है पूज्यपाद गुरुदेव की शिवमयता से . . .*

तब तो कुछ विशेष घटेगा ही!

और शिष्यों की झोली पता नहीं किन दुर्लभ सिद्धियों और सफलताओं से भर जाएं

यह शिष्यों का दिवस है, उनके आग्रह, हठ और सौभाग्य का दिवस है

और जब यह वर्ष **उत्सव वर्ष** के रूप में मनाने का निश्चय कर ही लिया, तब प्रारम्भ में ही क्यों न कुछ अनोखा मांग ही लिया जाए पूज्यपाद गुरुदेव से हठ करके

यह सामान्य व्यक्तित्व का जन्म दिवस ही नहीं यह तो **इस धरा पर एक अद्वितीय व्यक्तित्व और प्रखर आध्यात्मिक चेतना से युक्त युग पुरुष के धरा पर आगमन का चैतन्य दिवस है** जो अपने प्रभाव से अनोखा बन गया है, उत्सव बन गया है— पुष्पों में सुगन्ध पैदा करने का उत्सव, कोयल की कूकों में मिठास घोलने का उत्सव और आम की मंजरी में वसन्त की तरह ही रस घोलने का उत्सव . . .

इस उथल - पुथल से भरी जिन्दगी में अब एकदम से सजग होकर उन सिद्धियों को प्राप्त कर ही लेना है जो केवल और केवल ऐसे ही विशिष्ट दिवस पर ही प्रदान की जा सकती है, जब पूज्य गुरुदेव अपने पूर्ण कल्याणकारी स्वरूप में उपस्थित हों।

सिद्धाश्रम के योगियों और परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी के प्रकट दिवस का दुर्लभ अवसर क्योंकि ऐसे सिद्ध दिवस की प्रतीक्षा तो सिद्धाश्रम में भी आतुरता से की जा रही है। सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की उपस्थिति का तात्पर्य है **जीवन में पूर्ण सफलता और निश्चिंतता का आगमन। इस जीवन और पारलौकिक जीवन का कल्याण।** केवल यही नहीं यह तो **साक्षात् मां भगवती जगदम्बा** के आशीर्वाद और आह्लाद से युक्त पर्व है, जो नवरात्रि के अंतिम दिन पड़ रहा है।

ऐसे सिद्ध दिवस को एक - एक क्षण जीना है और पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति का अमृत पीते हुए रोम - रोम से उनकी दिव्यता को अनुभव करते हुए कानों के माध्यम से उनके अमृत वचनों को अपने अन्दर उतारते हुए, समय के पंखों पर तिरते हुए तनाव मुक्त हो जाना है, और अपने जीवन की असफलता, निराशा व उदासी को एक ओर ढकेलते हुए इस उत्सव की रसमयता में अपने- आप को डुबोते हुए नृत्य और संगीत के माध्यम से उछाह में भरते हुए अपना नवीन जन्म कर लेना है।

ऐसा पर्व और दुर्लभ स्थिति बार - बार घटित नहीं होती, ऐसे दिव्य व्यक्तित्व सदा- सदा के लिए उपस्थित नहीं होते, जो अपने प्रवाह और अपने तप के अंश द्वारा व्यक्ति को सभी कलाओं से परिपूर्ण कर दें। शुष्क और जटिल धार्मिक उपदेश देने वाले बहुत मिल जाएंगे लेकिन जो जीवन को दोनों पक्षों से सवांर दें, ऐसा केवल सद्गुरु ही कर सकते हैं और यही **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी** का व्यक्तित्व है ।

एक ऐसी ही पावन गंगा में स्नान कर पवित्र होने के लिए अपने जीवन के **मल, ताप, पाप, दोष, शोक** समाप्त करने के लिए ही इस पावन पर्व में आप सभी का पुनः - पुनः आह्वान है।

हमें आपकी प्रतीक्षा है।

सम्पूर्ण भारत के गुरुभाइयों से मिलने को आतुर हैं हम . . .

शिविर शुल्क – ६६०/-

सम्पर्क

डॉ. एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हाल, फैजाबाद(उ.प्र.), फोन : ०५२७-८१२५६५,०५२७-८१४०५२

श्री एस.के. मिश्रा, ३१७, मधवापुर, इलाहाबाद(उ.प्र.)

श्री एस. पी. बंगर, १००, एच. आई. जी., प्रीतम नगर, इलाहाबाद(उ.प्र.), फोन : ०५३२-६३३५६०

श्री एस. सी. कालरा, अमेठी टेक्सटाइल,जगदीशपुर, सुल्तानपुर (उ.प्र.), फोनः०५३६-७२१६,०५३६-७२३७

श्री वेद प्रकाश शर्मा, सी-२१/११, पेपर मिल कॉलोनी, निशातगंज, लखनऊ (उ.प्र.)

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह, द्वारा- ए.डी.ओ. पंचायत, विकास खण्ड, भावल खेड़ा, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

श्री एल. डी. सिंह, १२८, डी. ८०, किदवई नगर,कानपुर (उ.प्र.), फोनः०५१२-२७१०८५, ०५१२-२६८५७५

आयोजन स्थल : मिन्टो पार्क इलाहाबाद

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/९३ A.H.W. पोस्टल डी. एल. नं० १६०५२/९३

महाशिवरात्रि
का पर्व पूज्य गुरुदेव
का सान्निध्य गुरु शिव स्वरूप
में अथवा शिव गुरु रूप में
तभी तो अवसर घटित हो रहा है
दीक्षाओं का इस क्रम से

०३.०३.९४ कुण्डलिनी जागरण

जीवन का प्रथम और अन्तिम सत्य केवल इसी दीक्षा से

०४.०३.९४ रोग मुक्ति दीक्षा

भगवान शिव का माह और कोई
अस्वस्थ रह जाय सम्भव ही नहीं ऐसी दीक्षा के बाद

०५.०३.९४ ज्ञान दीक्षा, सरस्वती दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा

कालाष्टमी पर्व और वसन्त को और भी अधिक चैतन्य करती रोग जड़ता
अशक्तता को समाप्त करती, ज्ञान और मेधा में वृद्धि करने की तीन अनुपम दीक्षाएं

०६.०३.९४ अप्सरा सिद्धि, यक्षिणी एवं किन्नरी दीक्षा

जिससे आगामी होली के पर्व पर साधक साधना कर अपनी
मनोवांछित अप्सरा या यक्षिणी का प्रत्यक्षीकरण कर सके इस प्रकार

०७.०३.९४ अष्ट महालक्ष्मी एवं रावणकृत कुबेर सिद्धि दीक्षा

धन प्रदायक दीक्षाएं किन्तु दोनों में सूक्ष्म भेद और पूज्यपाद गुरुदेव ही
व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार जीवन की दरिद्रता और अभाव
को समाप्त करने के लिए स्वयं विचार कर उचित दीक्षा प्रदान करेंगे।

०८.०३.९४ राजयोग दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा

मनोवांछित कार्य पूर्ण दीक्षा

यदि कहा जाय कि जीवन का सार इन्हीं तीन दीक्षाओं में निहित है
तो कोई गलत बात नहीं, विजया एकादशी का पर्व और पूज्य गुरुदेव का संस्पर्श

संवत २०५१ के लिए पूज्यपाद गुरुदेव का आशीर्वाद इन मूर्त रूपों में

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा
नई दिल्ली-११००३४,फोन-०११-७१८२२४८

नोट

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल
"गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों पर प्रदान करेंगे।